श्रीः

वेनिस का बाँका

अनुवादक

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रकाशक

पाठक एण्ड सन

भाषा भण्डार पुस्तकालय,

राजा दरवाजा, बनारस सिटी।

दूसरी बार १०००

मूल्य १।)

प्रकाशक

श्री रामचन्द्र पाठक

व्यवस्थापक—पाठक एण्ड सन

राजा दरवाजा, बनारस सिटी।

प्रायः सभी बड़े बड़े विद्वानों की यही सम्मति है कि

"प्रत्येक साहित्य-प्रेमी को

साहित्यालोचन

अवश्य पढ़ना चाहिए"।

अतः इस ग्रंथ-रत्न का संग्रह अवश्य कीजिए।

मुद्रक

बी. एल. पावगी,

हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी।

प्रकाशक का निवेदन ।

पूज्यवर श्रीयुक्त पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय साहित्यरत्न का इस समय राष्ट्र भाषा हिन्दी के कवियों और लेखकों में जो उच्च स्थान है वह हिन्दी पाठकों से छिपा नहीं है। "ठेठ हिन्दी का ठाठ" "अधखिला फूल" आदि अनेक ग्रन्थों से यह सिद्ध होता है कि हिन्दी गद्य पर आपका कैसा अधिकार है। "प्रिय प्रवास" आदि काव्य ग्रन्थ आपकी उच्च कोटिकी प्रतिभा और कवित्व शक्ति के जाज्वल्य प्रमाण हैं। ये तथा आप के लिखे और अनेक ग्रन्थ ऐसे हैं जो बहुत दिनों तक हिन्दी साहित्य निधि के अमूल्य रत्न समझे जायँगे और जिनकी गणना अब तक स्थायी साहित्य में होती आई है और बहुत दिनों तक होती रहेगी। मेरी तो यह धारणा है कि मुझ जैसे अल्पज्ञका पंडित जीकी योग्यता के सम्बन्ध में कुछ कहना या उनकी कृतियोंकी प्रशंसा करना मानो सूर्यको दीपक से दिखलानेका प्रयत्न करना है। तो भी कर्तव्यवश मुझे इस अवसर पर इतनी धृष्टता करनी पड़ी है। इसके लिये मैं पूज्य पंडित जी से तो विशेषतः और हिन्दी पाठकों से साधारणतः क्षमा प्रार्थना करता हुआ इस प्रसंग को यहीं समाप्त करता हूँ।

पंडित जी की अनेक कृतियों में एक प्रधान कृति यह 'वेनिसका बांका' नामक उपन्यास भी है जो काशी पत्रिका में प्रकाशित अंगरेजी के एक प्रसिद्ध पुस्तक के उर्दू अनुवाद के आधार पर सन् १८८८ में लिखा गया था। उस समय हिन्दी की जो आरम्भिक और हीन दशा थी, उसका कुछ ठीक ठीक वर्णन वही लोग कर सकते हैं जो उस समय अथवा उसके कुछ ही

दिनों बाद वर्तमान रहे हों। मैं तो केवल सुनी सुनाई बातों के आधार पर केवल यही कह सकता हूँ कि उस समय हिन्दी में बहुत इनी गिनी पुस्तकें थीं और हिन्दी लेखकों की संख्या तो उँगलियों पर गिनने योग्य थी। और पाठक भी इतने थोड़े होते थे कि दस बीस बरस तक भी पुस्तकों का दूसरा संस्करण होने की नौबत नहीं आती थी। परन्तु इस बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से हिन्दी भाषा तथा साहित्य की जो दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही है, उसके कारण लोगों का ध्यान अनेक पुराने रत्नों की ओर जा रहा है और वे फिर नए सिरे से सर्व साधारण के सामने उपस्थित किए जा रहे हैं। यही प्रवृत्ति इस पुस्तक के दूसरे संस्करण के प्रकाशन का मुख्य कारण हुई है।

वेनिस का बाँका आजसे प्रायः उनतालीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उस समय के हिन्दी संसारने इसका समुचित और यथेष्ट आदर किया था। परन्तु इधर बहुत दिनोंसे यह ग्रन्थ अप्राप्य हो रहा था और जिन लोगोंके हृदयमें इस प्राचीन रत्नके दर्शनोंकी उत्कंठा उत्पन्न होती थी, उन्हें निराश ही होना पड़ता था। जिस समय यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी, उसके थोड़े ही दिनों बाद मेरे पूज्य पिता पण्डित केदारनाथ जी पाठकने इसे देखा था और उन्हें यह बहुत अधिक पसन्द आई थी। उसके थोड़े ही दिनों बाद पूज्य हरिऔध जी से उनका परिचय भी हुआ था और तब से वे मेरे पिता जी पर बहुत अधिक स्नेह रखते आए थे। जब यह ग्रंथ बिलकुल अप्राप्य हो गया और इसकी यथेष्ट माँग बनी रही, तब उसी पुराने स्नेह के नाते मेरे पिताजीने आपसे कई बार कहा कि आपके और सब ग्रंथ तो कई कई बार छप चुके हैं। और प्राप्य हैं, पर एक

'वेनिस का बाँका' ही ऐसा ग्रन्थ है जो बिलकुल अप्राप्य है और जिसे देखने की अभिलाषा लोग प्रायः प्रकट किया करते हैं। पर बात यहीं तक रह जाती थी। आज से प्रायः तीन वर्ष पूर्व फिर एक बार पिताजी ने पूज्य पण्डितजी से वही बात कही। इस पर पण्डितजी ने बहुत ही उदारतापूर्वक सहर्ष और निःस्वार्थ भाव से कहा कि यदि आप उसका द्वितीय संस्करण देखने के लिये इतने ही उत्सुक हैं तो आप स्वयं ही उसे प्रकाशित कर सकते हैं। पिताजी ने भी यह भार अपने ऊपर लेना सहर्ष स्वीकृत कर लिया। यद्यपि पूज्य पण्डितजी ने थोड़े ही दिनों में मूल पुस्तक भली भाँति दोहराकर और उस में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके दे दी थी, पर खेद है अनेक कारणों से इसके प्रकाशन में बराबर तरह तरह के विघ्न पड़ते गए और इसी से पुस्तक के तैयार होने में विलम्ब होता गया। कुछ तो शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक तथा आर्थिक कठिनाइयाँ थीं और कुछ छपाई और कागज आदि के सम्बन्ध की भी अड़चनें थीं। तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि इन सब कठिनाइयों तथा अड़चनों को पार करके अन्त में यह पुस्तक सर्व साधारण के सामने आ ही गई। इसके अतिरिक्त पूज्य हरिऔधजी का भी मैं बहुत अधिक कृतज्ञ तथा अनुगृहीत हूँ जिनकी कृपा तथा आज्ञा से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। अपने माननीय आश्रयदाता तथा पुराने स्कूल सहपाठी श्रीमान् राय गोविन्दचन्द्र जी महोदय का भी मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तकके प्रकाशनमें आर्थिक सहायता प्रदान की है। यदि मुझ सुदामा पर उक्त माननीय राय साहब की कृष्णवत् कृपादृष्टि न होती तो कदाचित् इस पुस्तक का प्रकाशन मेरे

लिए असम्भव ही होता। श्रीयुत बा० ब्रजरत्न दासजी बी. ए., बा. रामचन्द्रजी वर्मा बा० मुकुन्ददासजी गुप्त को भी धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ, क्योंकि इन महानुभावोंसे भी मुझे इसके और प्रकाशन में कई प्रकार की सहायता मिली है।

अन्त में मैं इस पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में दो एक बातें निवेदन कर देना चाहता हूँ पहले संस्करण में इस पुस्तक की भाषा बहुत अधिक क्लिष्ट थी जो इस संस्करण में कुछ सरल कर दी गई है। दोनों संस्करणों को सामने रखने से इस बात का पता लगता है कि किसी समय लेखकों की प्रवृत्ति कितनी अधिक क्लिष्ट और कठिन भाषा लिखने की ओर थी। परन्तु ज्यों ज्यों समय का प्रभाव पड़ता गया, त्यों त्यों लोग अपेक्षाकृत सरल भाषा लिखने लगे। यदि एक ओर इस पुस्तक का पहला संस्करण रखा जाय और दूसरी ओर 'अधखिला फूल' या 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' रखा जाय तो अनजान आदमी कभी सहसा इस बात का विश्वास ही न कर सकेगा कि ये सब कृतियाँ एक ही सिद्धहस्त सुलेखक की हैं। यही है समय और प्रवृत्ति का प्रभाव।

अन्त में मैं हिन्दी के अन्यान्य बड़े बड़े लेखकों से भी यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि जिस प्रकार पूज्य हरिऔध जी ने मुझपर यह कृपा की है, उसी प्रकार वे भी मेरे पू० पिता जी के नाते मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि रखा करें और मुझे अपना वात्सल्य-भाजन बनाए रहें।

काशी
'रामनवमी'
सं० १९८५

विनीत—
रामचन्द्र पाठक।

दूसरे संस्करण की भूमिका ।

आज हिन्दी भाषा की विजय वैजयन्ती सब ओर फहरा रही है, आज वह सर्व जन आदृत है। भारतवर्ष के प्रधान विश्वविद्यालयों में उसको सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो गया है, और अनेक राजदर्बारों में भी वह समर्चित और सम्मानित है। यदि उसकी विजयदुन्दुभी के निनाद से सुदूर दक्षिण प्रान्त निनादित है, तो भारत के सीमांत प्रदेश सिंध और पंजाब में भी उसके प्रसार का आनन्द कोलाहल श्रवणगत हो रहा है। अंग्रेज़ी भाषा के बड़े बड़े विद्वानों की दृष्टि हिन्दी भाषा पर पड़ रही है। उन्होंने उसको सादर ग्रहण ही नहीं किया, उसकी सेवा का व्रत भी लिया है। संस्कृत के विद्वानों की वह उपेक्षा दृष्टि अब नहीं रही, जो हिन्दी भाषा के विषय में पहले थी। अब वे लोग भी उसकी व्यापकता से प्रभावित हैं, और धीरे धीरे उसकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं। आज उसका भाण्डार अनेक ग्रन्थरत्नों से पूर्ण है, और दिन दिन वह समुन्नत और सर्वगुण सम्पन्न हो रही है। उसका उज्ज्वल भविष्य इस समय उसके प्रतिस्पर्द्धियों को चकित कर रहा है।

किन्तु अब से चालीस पैंतालीस वर्ष पहले उसकी यह अवस्था नहीं थी। भारत गगन का एक इन्दु अपने विकास द्वारा उस समय उसको सुविकसित बना रहा था, अपनी सुधामयी लेखनी द्वारा उसमें जीवन संचार कर रहा था, कुछ तारे भी उसके साथ जगमगा कर अपने क्षीण आलोक से उसको आलोकित कर रहे थे। किन्तु फिर भी उसके चारों ओर घनीभूत अंधकार था। पठित समाज उन दिनों उसको बड़ी तुच्छ दृष्टि से देखता था। संस्कृत के विद्वान् तो उसको फूटी आँखों न देख पाते। हिन्दुओं की कई विशेष जातियाँ उस के लिये खड्गहस्त थीं, और उसका

तिरस्कार करना ही उनके जीवन का प्रधान कर्तव्य था। अंग्रेजी भाषा के सुशिक्षितों को उसे अपनी मातृभाषा स्वीकार करने में भी संकोच था, और वे लोग प्रायः यह कहते देखे जाते कि "हिन्दी भाषा में है ही क्या! यदि उसमें विशेषता होती तो वह स्वयं लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती।" हिन्दी लेखक भी उन दिनों इने गिने थे और सर्व साधारण में आदर की दृष्टि से नहीं देखे जाते थे। हिन्दी प्रेमियों की बातही क्या कहें, वे उँगलियों पर गिने जा सकते थे। फिर भी हिन्दी संसार का तमसाच्छन्न आकाश धीरे धीरे उज्ज्वल हो रहा था।

मैं उसी समय की बात कहता हूँ। उन दिनों मैं निजामाबाद (जिला आजमगढ़) के मिडिल स्कूल में अध्यापक था। काशीनिवासी स्वर्गीय श्रीमान् पण्डित लक्ष्मीशंकर मिश्र की 'काशी पत्रिका' का उस समय बड़ा प्रचार था। वह प्रत्येक मिडिल स्कूल में आती थी, और आदर की दृष्टि से देखी जाती थी। आप उन दिनों स्कूलों के इन्स्पेक्टर थे। आप हिन्दुस्तानी भाषा के पक्षपाती थे, और इसी भाषा में 'काशी पत्रिका' को निकालते थे। हिन्दुस्तानी भाषा नाम होने पर भी एक प्रकार से इस पत्रिका की भाषा उर्दू ही थी। उसमें अधिकतर फारसी और अरबी शब्दों का ही प्रयोग होता था। हाँ, इन भाषाओं के क्लिष्ट शब्द नहीं आने पाते थे। उन्हीं दिनों इस पत्रिका में 'वेनिस का बाँका' नामक एक रोचक उपन्यास अंग्रेजी से अनुवादित होकर निकला। स्वर्गीय बाबू श्याम मनोहरदास उन दिनों आजमगढ़ के डिप्टी इन्स्पेक्टर थे। उनको यह उपन्यास बहुत पसन्द आया। जब दौरा करते हुए प्रशंसित बाबू साहब निजामाबाद आए, तब छात्रों की परीक्षा लेने के बाद उन्होंने उक्त

उपन्यास की चर्चा मुझ से की। साथ ही यह भी कहा कि अच्छा होता, यदि इसका अनुवाद शुद्ध हिन्दी में हो जाता। मैंने निवेदन किया कि उर्दू तो स्वयं हिन्दी भाषा का रूपान्तर है, उसका अनुवाद क्या ! उन्होंने कहा कि मैं यह चाहता हूँ कि उर्दू अनुवाद में जितने फारसी और अरबी के शब्द हैं वे सब बदल दिये जायँ, और जो वाक्य उर्दू के ढंग में ढले हैं, उन्हें हिन्दी भाषा का रंग दे दिया जाय। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया, और उसी का फल यह शुद्ध हिन्दी में लिखा गया, 'वेनिस का बाँका' नामक उपन्यास है। प्रत्येक फारसी और अरबी शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्दों का प्रयोग होने के कारण, ग्रन्थ की भाषा क्लिष्ट हो गई है, और उसमें जैसा चाहिए वैसा प्रवाह भी नहीं है, किन्तु उस समय ऐसा करने के लिये मैं विवश था।

आवेश का आदिम रूप कट्टर असंयत और आग्रहमय होता है, इसलिये उसके कार्यकलाप में विचारशीलता और गंभीरता नहीं पाई जाती। काल पाकर जब उसमें स्थिरता आती है, तब विवेक बुद्धि का उदय होता है, और उस समय जो मीमांसा की जाती है, वह मर्यादित होती है, उसमें औचित्य का अंश भी सविशेष पाया जाता है। हिन्दी भाषा के उत्थान काल में लोगों के आवेश की भी यही दशा थी, इसी कारण उस समय के हिन्दी उन्नायकों में यह दुराग्रह पाया जाता था कि शुद्ध हिन्दी भाषा में एक भी अरबी फारसी का शब्द न आने पावे। उस काल के हिन्दी लेखकों के अनेक लेख ऐसे मिलेंगे, जिनमें इस भाव की रक्षा की गई है। श्रीमान् भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के भी कई लेख ऐसे हैं, जो इस भाव के मूर्तिमन्त उदाहरण हैं। अब भी इस विचार के कुछ लोग पाये जाते हैं, किन्तु उनकी संख्या

बहुत थोड़ी है। इसके अतिरिक्त उस समय एक विचार यह भी फैला हुआ था, कि इस प्रणाली के ग्रहण करने से ही, हिन्दी भाषा की समुन्नति होगी, क्योंकि लोग समझते थे कि ऐसा करने से ही, हिन्दी के शब्दभाण्डार पर सर्व साधारण का अधिकार होगा। उक्त बाबू साहब भी इसी विचार के थे। वे पाठशाला के छात्रों को भी इस विषय में उत्साहित करते रहते, और उन छात्रों को विशेष आदर की दृष्टि से देखते, जो बातचीत में भी किसी अरबी फारसी शब्द का प्रयोग न कर संस्कृत गर्भित हिन्दी बोलते। वे ऐसे छात्रों को प्रायः पुरस्कृत भी करते। उनकी इच्छा के अनुसार जब 'वेनिस का बाँका' शुद्ध हिन्दी में तैयार हो गया, तब उसे देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्हीं के उद्योग से वह कलकत्ते के 'आर्य्यावर्त' प्रेस में छपा भी।

एक तो ग्रन्थ की भाषा यों ही क्लिष्ट थी, दूसरे वह पड़ा आर्य समाजी सज्जनों के हाथ में। उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार भी उसमें कुछ परिवर्तन किये कुछ मनमाने संशोधन भी हुए जिसका फल यह हुआ कि ग्रन्थ जैसा चाहिए वैसा शुद्ध न छप सका, और उसकी भाषा यत्र-तत्र और क्लिष्ट हो गई। इतना होने पर भी ग्रन्थ का आदर हुआ, और वह हाथों हाथ बिका। स्वर्गीय पण्डित प्रतापनारायण मिश्र ने अपने 'ब्राह्मण' पत्र में उसकी लम्बी चौड़ी प्रशंसा की, अन्य सामाजिक पत्रों ने भी उसे सराहा, इसलिये उसके सम्मान की मात्रा बढ़ गई। हिन्दी शब्द सागर की रचना के लिये शब्द संग्रह करने के उद्देश्य से जो ग्रन्थ चुने गये। उनमें "वेनिस का बाँका" भी लिया गया। इसी कारण कि उसमें संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है, और उस समय लोगों की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा थी।

'वेनिस का बाँका' का कथा भाग अत्यन्त हृदयग्राही और रोचक है, वही लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। हमारे मित्र पंडित केदारनाथ पाठक भी उसकी रोचकता पर मुग्ध हैं। प्रथम संस्करण के शीघ्र निःशेष होने पर भी दूसरा संस्करण अबतक नहीं हुआ था, कारण यह कि इधर किसी की दृष्टि नहीं गई। जिस प्रेस में पहले ग्रन्थ छपा था, वह बन्द हो चुका है, प्रकाशक का पता नहीं। मैं भी इस विषय में एक प्रकार से उदासीन था। किन्तु उक्त पण्डितजी की सहृदयता रंग लाई, और वे ग्रंथ का दूसरा संस्करण निकलवाने के लिये कटिबद्ध हो गये। यह दूसरा संस्करण उन्हीं के उद्योग और उत्साह का फल है। उनके चि० पुत्र श्रीरामचन्द्र पाठक (पाठक एन्डसन) द्वारा ही यह ग्रथ प्रकाशित हुआ है। मैंने अब की बार ग्रन्थ की भाषा का संशोधन बहुत कुछ कर दिया है। फिर भी भाषा संस्कृत गर्भित है। बिल्कुल काया पलट करनी उचित नहीं समझा गया, क्योंकि ग्रन्थ की भाषा का हिन्दी के उत्थान काल से बहुत कुछ सम्बन्ध है।

अन्त में यह दूसरा संस्करण प्रकाशित करने के लिये मैं उक्त पंडितजी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, और उनके इस उत्साह एवं अध्यवसाय की प्रशंसा करता हूँ। आशा है, हिन्दी संसार ग्रंथ का समुचित आदर कर उनके उत्साह की वृद्धि करेगा। यदि इस उपन्यास को पढ़कर पाठक गण थोड़ा आनन्द भी लाभ करेंगे तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूगा।

काशीधाम
८—१—२८

विनयावनत
हरिऔध

लेखक का संक्षिप्त परिचय

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र च दुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

वास्तव में पूर्वोक्त श्लोक का एक एक अक्षर सत्य है। जीवधारियों में मनुष्यत्व-प्राप्ति ही श्रेय है। मनुष्य कहलाने पर भी, भारत की इस गिरती अवस्था में भारतवासियों में, कितने लिखे पढ़े हैं। विद्वानों की संख्या तो और भी परिमित है। इनमें से भी कुछ ही वास्तविक कवि कहे जाने योग्य होते हैं। ईश्वरदत्त प्रतिभा, निर्मल पठन पाठन तथा अनवरत अभ्यास ही कवित्व शक्ति के प्रधान साधन हैं। इतना जिनमें हो, वे ही प्रकृत कवि हैं। यों तो हिंदी साहित्य में आज अपने को कवि कहनेवालों की संख्या का कुछ ठिकाना नहीं। परन्तु वैसे सुकवि, जिन्हें सभी कवि मानते हों, अल्पसंख्यक ही हैं और सदा ही रहेंगे।

पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय ऐसे ही सुकवि हैं, सुकवि ही क्या वरन् उनमें महाकवि के सभी गुण मौजूद हैं। हिंदी साहित्य में आपका स्थान अत्यंत ऊँचा तथा अमर है और वर्तमान काल के कवि तथा लेखकों में आपका पद बहुत ही प्रतिष्ठित है। इसी प्रतिष्ठा के फलस्वरूप अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के चतुर्दश सम्मेलन के आप सभापति बनाए गए थे। आप अगस्त्य गोत्रीय, शुक्ल यजुर्वेदीय सनाढ्य ब्राह्मण हैं। आपके पूर्व पुरुष बदायूँ के रहनेवाले थे पर लगभग तीन शताब्दी के व्यतीत हुए कि जब वे सपरिवार वहाँसे आकर आज़मगढ़ के अंतर्गत तमसा नदी के किनारे पर बसे हुए निज़ामाबाद नामक कस्बे में बस गये। ज़मींदारी और वंश-

परम्परागत पांडित्य ही इस परिवार की प्रधान जीविका है। यहीं सं० १९२२ वि० के वैशाख कृष्ण तृतीया को आपका जन्म हुआ। आप के पिता तीन भाई थे जिनके नाम क्रम से ब्रह्मासिंहजी, भोलासिंहजी और बनारसीसिंहजी उपाध्याय थे। पं० भोलासिंहजी ही हमारे चरितनायक के पिता और श्रीमती रुक्मिणी देवी माता थीं। आपके पिता अत्यन्त कार्यकुशल और परोपकारी पुरुष थे तथा माता भी एक विदुषी और धर्मपरायण महिला थीं। इन दोनों व्यक्तियों के पवित्र जीवन का प्रभाव चरित-नायक पर विशेष रूप से पड़ा है।

आपके पितृव्य पं० ब्रह्मासिंह जी एक अच्छे विद्वान् और सच्चरित्र पुरुष थे। उन्होंने घर पर इन्हें पाँच वर्ष की अवस्था में विद्याध्ययन आरम्भ कराया और सात वर्ष की अवस्था में आप निज़ामाबाद के तहसीली स्कूल में भरती किए गए। वहाँ से सं० १९३६ वि० में वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा पास कर काशी के क्वीन्स कालीजिएट स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने लगे। आपको मिडिल परीक्षा उत्तमतापूर्वक पास करने के कारण मासिक छात्रवृत्ति भी मिलती रही, पर स्वास्थ्य के बिगड़ जाने पर उन्हें शीघ्र ही घर लौट जाना पड़ा और इस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा की इतिश्री हो गई।

घर पर रहते हुए भी इनकी शिक्षा बराबर चलती रही और उन्होंने चार पाँच वर्ष तक उर्दू, फारसी तथा संस्कृत का अभ्यास किया। सन् १८८२ ई० में आपका विवाह हुआ और इसके दो वर्ष बाद निज़ामाबाद के तहसीली स्कूल में आप अध्यापक नियुक्त हुए। इन्हीं दिनों आपने कचहरी के काम काज सीखने में मन लगाया और सन् १८८७ ई० में नार्मल परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गये। मातृभाषाप्रेमी बा० धनपतिलालजी के अनुरोध से, जो उस समय आज़मगढ़ के सदर कानूनगो थे, आपने

कानूनगोई की परीक्षा पास करने का निश्चय किया और तदनुसार सन् १८८९ ई० में यह परीक्षा भी पास कर ली। दूसरे वर्ष आप कानूनगो के स्थायी पद पर नियुक्त कर दिए गए। तब से १ नवम्बर सन १९२३ ई० को पेंशन लेने तक आप समय समय पर रजिस्ट्रार कानूनगो, नायब सदर कानूनगो और गिर्दावर कानूनगो आदि कई पदों को सुशोभित करते रहे। अन्तमें पाँच साल तक सदर कानूनगो के पद पर भी आप रहे। पेंशन लेने के अनन्तर मार्च सन १९२४ ई० से आप हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफ़ेसर का कार्य कर रहे हैं। यहाँ आप वेतन नहीं लेते केवल 'ऑनोरेरियम' पर ही अपना निर्वाह करते हैं।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है। आपके पितृव्य श्रीमान् पं० ब्रह्मासिंह जी उपाध्याय एक सदाचारनिष्ठ विद्वान् थे। आप की साहित्य में भी पूर्ण गति थी। उन्होने इन्हें साहित्य में भी अच्छी शिक्षा दी थी। उस समय निजामाबाद में सिख संप्रदाय के अनुगामी एक साधु श्रीयुत बाबा सुमेर सिंह जी साहिबजादे रहते थे जो मातृभाषा के प्रसिद्ध कवि और विद्वान् हो गए हैं। इनके यहाँ भारतेंदु बा० हरिश्चन्द्रजी की 'चन्द्रिका' तथा 'कविवचनसुधा' नामक पत्र बराबर आते थे। हिन्दी भाषा का इनका पुस्तकालय भी अच्छा था। यहीं उपाध्याय जी को, जिनपर बाबाजी बड़ी कृपा रखते थे, भाषा ग्रंथ देखने तथा पत्रों के पढ़ने का विशेष अवसर मिलता था जिनके परिशीलन से उनके हृदय में मातृभाषा के प्रति प्रगाढ़ अनुराग उत्पन्न हो गया और वे स्वयं ग्रन्थ रचना के लिए कटिबद्ध हो गए।

उपाध्यायजीने मदरसों के डिप्टी इंस्पेक्टर बा० श्याममनोहरदास के आदेशानुसार पहिले पहल 'वेनिस का बाँका'

और 'रिपवान विंकल' का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद किया। ये दोनों उपन्यास काशीपत्रिका में उर्दू में निकल चुके थे। उक्त पत्रिका के कुछ अन्य निबंधों का भी आपने हिंदी अनुवाद कर उनके संग्रह का नाम 'नीतिनिबंध रखा। 'विनोद वाटिका' के नाम से गुलज़ारे दबिस्ताँ का और 'उपदेश कुसुम' नाम से शेखसादी शीराजी के गुलिस्ताँ के आठवें परिच्छेद का अनुवाद किया। बंगला भाषा भी आप अच्छी तरह जानते हैं और उक्त भाषा से कई पुस्तकों का आपने अनुवाद भी किया है। बिलकुल सीधी बोलचाल की भाषा में आपने दो उपन्यास लिखे हैं जिनके नाम 'ठेठ हिंदी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' हैं जिनमें से प्रथम ग्रंथ सिविल सर्विस परीक्षा में बहुत दिनों तक कोर्स में था। 'रुक्मणीपरिणय' तथा 'प्रद्युम्न विजय व्यायोग' नामक दो रूपक भी आपने लिखे हैं। काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा जो 'कबीर वचनावली' प्रकाशित हुई है, उसका आपने ही संपादन किया है जिसकी भूमिका आपने बड़ी ही योग्यता से लिखी है।

अभी तक जिन पुस्तकों का उल्लेख किया गया है, वे सभी गद्य ग्रन्थ हैं। आपके महाकाव्य 'प्रियप्रवास' का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। यह खड़ी बोली का अत्यंत विशद काव्य-ग्रन्थ है जिसमें श्रीकृष्णजी के मथुरागमन लीला का विस्तृत वर्णन है। इसमें करुण-रस का प्राधान्य है तथा वर्णन ऐसा उत्तम हुआ है कि स्थान विशेष पर चित्रसे खींच दिए गए हैं। 'चोखे चौपदे' तथा 'चुभते चौपदे' नामक दो ग्रन्थ अभी हाल ही में प्रकाशित हुए हैं। प्रेम प्रपंच, प्रेमाम्बु प्रवाह, प्रेमाम्बु वारिधि, प्रेम प्रस्रवण, पद्य प्रमोद, पद्यप्रसून और ऋतु मुकुर नामक अनेक काव्य पुस्तकें भिन्न भिन्न प्रकाशकों के यहाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें

उपाध्याय जी की फुटकर छोटी बड़ी कविताओं का समावेश है। बाँकीपुर के खड्ग विलास प्रेस ने इनकी बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनमें कुछ का उल्लेख हो चुका है और अन्य के नाम रसिक रहस्य, उद्बोधन, प्रेम पुष्पोपहार, चरितावली, कृष्णकांत का दानपत्र, काव्योपवन, अंकगणित, नीति निबंध और बोलचाल हैं।

स्थानाभावके कारण इन सब ग्रन्थों पर विशेष प्रकाश नहीं डाला जा सकता, नहीं तो इनके गुण आदि की विवेचना करने में एक छोटासा ग्रन्थ ही तैयार किया जा सकता है।

आपने दो पुस्तकें रसकलस तथा प्रद्युम्न-पराक्रम और भी लिखी हैं जो अभी तक अप्रकाशित हैं।

ब्रजरत्न दास।

नोट—उपाध्याय जी की लिखी हुई उपर्युक्त सभी पुस्तकें इस पुस्तक के प्रकाशक से मिल सकती हैं।

वेनिस का बाँका का शुद्धाशुद्ध पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२०	बैठे	बैठे तो क्या जाल कि
,,	२१	हो	न हो
,,	,,	खिले	न खिले
,,	,,	मिले	न मिले
५	२	था	थी
,,	५	लसी	लूसी
१६	२३	हद होगयी थी	होगयी थी
१७	१४	के	की
३०	१६	परित्याग, न	परित्यायन
८७	११	एद्वितकीय	एक द्वितीय
११०	६	कछेद	कछुद
,,	२०	रत	रता
१११	२२	योग्यवा	योग्यता
११४	१७	इ	इस
११५	१८	अतएव इस कारण से	अतएव
११६	२५	आप	आपके
११६	८	युवती	स्त्री

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	३	हसी	हँसी
१३२	१६	रा	री
१३६	२०	का	की
१३६	३	काम	कोम
१४२	१२	पुवक	पूर्वक
,,	१७	अघो	अघो
१५७	१३	काय	कार्य

॥ श्रीः ॥

वेनिस का बांका

पहला परिच्छेद

सन्ध्याका सुहावना समय, शोभाकी अधिकताका प्रादुर्भाव, दल के दल हलके पर्जन्यों का जमघटा, कहीं बहुत कहीं कम। घन पटल के प्रत्येक खण्डों से कलाकर निशिनाथ की छटा दिखलाई देती थी, प्राण उसके प्रमत्त गमन पर न्योछावर हुआ जाता था, घनाच्छादन में यही ज्ञात होता था कि उच्च अट्टालिका से कोई प्रेयसी अपनी अलौकिक छटा दिखाती है, और दीन प्रेमीके तरसाने केलिये बार बार जाली के मुखाच्छादक पट से अपना मुख छिपाती है। एड्रियाटिक समुद्र की प्रत्येक प्रोत्थित तरंगें आदर्श का कार्य्य करती थीं, हिमकर का प्रकाश और माधुर्य शतगुण कर दिखाने का उत्साह रखती थीं। इसपर सन्नाटा और भी आश्चर्य्य जनक था मनुष्यको कौन कहे जहाँ तक दृष्टि जाती पशु भी दिखलाई न देता। वायु भी बहुत ही मन्द मन्द चलती और अपना पद फूँक फूँक कर रखती थी। प्रयोजन यह कि जिधर नेत्र उठा कर अवलोकन कीजिये यही समा दृष्टिगोचर होता था, सिवाय पवन की सनसनाहट और तरङ्गों की धीमी २ गड़गड़ाहट के और कुछ सुनाई न देता था। कैसा ही आपत्तिपतित हो दो घड़ी वहाँ जाकर बैठे व्यग्रता निवारण हो, हृत्कलिका खिले, और सारा दुःख मिट्टी में मिले।

अनन्तर निशीथ काल आया और घड़ियाली ने टनाटन बारह का गजर बजाया। फिर भी एक पथिक शोकित का सा स्वरूप बनाये मुख पर सन्ताप की छाप लगाये बड़ी नहर के कूल पर चुपचाप बैठा था, कभी वह आँख भर कर नगर के प्राचीरों और उन्नत प्रासादों की ओर देखता और कभी भैचक बन पानी की ओर टकटकी लगाता। अन्त को वह अपने आप कहने लगा "मैं अभागा अब कहां जाऊं, वेनिस तक तो आ पहुंचा अब यदि और आगे जाऊं तो क्या होगा, इसी हेर फेर में जीवन खोना पड़ेगा। न जाने भाग्य अब आगे क्या दिखावेगा। इस समय मेरे अतिरिक्त सब लम्बी ताने सोते होंगे। महाराज उपधान आश्रय से कोमल गद्दी पर शयन करते होंगे, साधुगण निज कम्बल ही में मगन होंगे। किन्तु मेरे लिये दोनों में से एक भी नहीं यदि है भी तो यह शीतलसीली पृथ्वी। श्रमजीवी भी दिन भर परिश्रम करके सन्ध्या को छुट्टी पाता है और रात को पैर फैला कर चैन से सोता है, पर मेरा भाग्य मुझे भली भांति नाच नचाता और प्रत्येक क्षण एक नवीन राग अलापता है। इतना कह कर उसने तीसरी बार अपनी फटी जेब में हाथ डाला, और बोला! " हाय इसमें तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं, क्षुधा के सन्ताप से कलेजा मुँह को आता है। " फिर कोश से खड्ग निकाल चाँदनी में हिलाने और उसकी चमक देख कर कहने लगा। "कदापि नहीं। कदापि नहीं!! मेरे सच्चे और पक्के सहकारी मैं तुझे अपने पास से कभी पृथक न करूंगा। तेरा शिरोभाग मृत्यु समय पर्यन्त मेरे हाथ में रहेगा चाहे भूख से शरीरांत भले ही होजाय। हाय! हाय!! जब वह समय स्मरण होता है जिस समय शशिवदना बिलीरिया ने तुझे मुझको समर्पण किया, मेरी कटि से पटका बांधा, और

मैंने तुझे और उसको चुम्बन किया, तो हृदय पर साँप लोट जाता है। वह तो हम दोनों को परित्याग परलोक सिधारी पर मैं तुझ से जीवित रहते पृथक् न हूंगा।" इतना कह कर उसने नेत्रों को अश्रुपूर्ण कर लिया। फिर एक क्षण में आंसू पोंछ कर कहने लगा " नहीं २ मेरी आँखों में आँसू न थे यह निशीथ काल की शीतल और तीव्र वायु का प्रमाद है कि उनमें पानी भर आया, नहीं तो आँसू कैसे, रोने के दिन अब गये।" यह कह कर उस अभागे ने अपना सिर पृथ्वी पर पटक दिया और आकुलता वश चाहा कि अपने जन्मकाल को बुरा कहे, परन्तु फिर सँभल गया और अपना सिर किहुनी से टेक कर शोकपूरित ध्वनि से एक गीत जिसे वह निज बाल्यावस्था में स्वगुरु जनों के रम्य भवनों में प्रायः गान किया करता था, गुनगुनाने लगा। फिर बोला " ठीक है यदि मेरे अभाग्य के बोझ ने मुझे दबा लिया तो कुछ न हुआ।

इतने में किसी की पद्-परिचालना की आहट सी ज्ञात हुई। पीछे फिर कर देखा तो पास की एक गली में 'जहां कलितकौमुदी के कारण झुटपुटा सा था, एक बृहत् डील का मनुष्य कपड़ा मुख पर डाले मन्द मन्द टहलता दिखलाई दिया। उसे देख कर पथिक निज मन में कहने लगा "कदाचित् इस निर्जन स्थल में इस व्यक्ति को परमात्मा ने मेरे ही लिये भेजा है, मैं—मैं, (थोड़ा रुक कर) अब भिक्षाप्रार्थी हूंगा। वेनिस में भिक्षा माँग खाना नेपल्स में प्रतारकता करने से सहस्र गुण उत्तम है, सम्भव है कि महात्मा की जीर्ण गुदड़ी में उसके अन्तर का अमूल्य लाल यथावत् बना रहे" यह कह कर वह उठ खड़ा हुआ और उस पुरुष की ओर बढ़ो। गली में प्रवेश करते ही देखता क्या है कि दूसरी ओर से एक तीसरा पुरुष और आया परन्तु उस मनुष्य को

टहलता हुआ देखकर एक गृह की ओट में जा छिपा। पथिक ने सोचा कि यह मनुष्य गूढ़ पुरुषों की भाँति कोने में घात लगा कर क्यों खड़ा हुआ, कहीं यह उन लोगों में से तो न हो जो कौड़ी कौड़ी पर दूसरों का अमोल जीवन लेने और अपना देने को प्रस्तुत हो जाते हैं! संभव है किसीने उसके विभव पर दाँत लगाया हो और इस पुरुष को उसके विनाश केलिये तानात किया हो, वह बेचारा किस निश्चिन्तता के साथ टहल रहा है। जो हो, पर बचाजी तुम भी सँभल जाना, फूल न उठना, यह देखो मैं उसकी सहायता को आ पहुंचा। यह कह कर पथिक भीत की छाया में उसकी ओर बढ़ा और वह जहाँ का तहाँ खड़ा रहा। ज्यों ही वह दूसरा अपरिचित व्यक्ति इन दोनों के पास से होकर जाने लगा त्यों हीं उक्त गूढ़ पुरुष ने अपने स्थान से उचक कर चाहा कि, एक हाथ कटार का ऐसा लगावे कि भण्डारा खुल जाय परन्तु पथिक ने झपट कर उसके हाथ से कटार छीन लिया और उसे पृथ्वी पर देमारा! अपरिचित ने पीछे फिर कर कहा "ऐं यह धमा चौकड़ी कैसी?" डाकू तो उठ कर पलायित हुआ और पथिक ने मुसकरा कर कहा महोदय, कुछ नहीं यह एक बात थी जिससे आपके जीवन की रक्षा हुई।" अपरिचित—"क्या कहा? मेरी जीवनरक्षा क्या हुई?" पथिक—"यह भलेमानस जो अभी नौ दो ग्यारह हुए पहले आपके पीछे बिल्ली के समान दबे पैर गये और कटार तान ही चुके थे कि मैंने देख लिया और आपकी जीवन रक्षा हुई। अब कुछ मेरी भी सुनिये। क्षुधा के कारण मेरी बुरी दशा है, यदि एक पैसा दीजिये तो बड़ा धर्म होगा। महाशय! परमेश्वर के लिये मुझे कुछ दीजिये। अपरिचित—" चल दूर हो, दुष्ट कहीं का, मैं तुझे और तेरे

फरफंदों को भली भांति जानता हूं। हुं, हुँ, कहता है जीवन रक्षा की! अजी यह तुम लोगों की मिली मार थी। यह मैं जानता हूं कि तुम सब मेरी ताक में हो? जीवनरक्षा के बहाने से मुद्रा भी लो और उपकार भी जताओ। ऐसी चतुरता, महाराज से चलेगी; बोनारुटी तुमारी चापलूसी की बातों में नहीं आने का।"

इस समय इस शोक संतप्त, क्षुधितमनुष्य की वह दशा थी जैसी कि निराशाकी अन्तिम अवस्था में होती है, काटो तो लहू नहीं। पर एक वार फिर जी कड़ा करके बोला "महाशय! परमेश्वर साक्षी है कि मैंने वात नहीं बनाई मेरी दशापर दया कीजिये नहीं तो आज निशा में मेरा जीवन समाप्त हो जावेगा।" अपरिचित—"अबे कहता हूँ कि नहीं—अभी चला जा नहीं तो परमेश्वर की शपथ, यह कह कर उस कठोर चित्तने अपनी बगल से एक पिस्तौल निकाली और अपने रक्षक की ओर झुकाई। पथिक—"राम राम!! क्या वेनिस में सेवकाई का प्रतिकार यों ही किया करते हैं?" अपरिचित—वह देख नगर रक्षक सिपाही समीप है पुकारने ही की देर है?" पथिक—परमेश्वर का कोप, क्या तुमने मुझे डाकू समझा है?" अपरिचित—बस! कोलाहल न कर! भला चाहता है तो चुपचाप अपना रास्ता पकड़।" पथिक—"सुनिये महाशय! ज्ञात हुआ कि आपका नाम बोनारुटी है मैं अपने हृदयपत्र पर यह नाम लिख लेता हूँ। मैं यह समझूंगा कि वेनिस नगर में जो दूसरा दुष्टात्मा मुझे मिला वह आप ही हैं।" फिर कुछ सोच कर बड़ी भयानक बाणी से बोला "स्मरण रख ऐ बोनारुटी! जब तू अबिलाइनो का नाम सुने तो यह समझना कि तेरी दुर्दशा के दिन आ गये।" यह कहकर अबिलाइनो उस निर्दयी को वहीं छोड़ कर चला गया।

दूसरा परिच्छेद

वो नारुटीकी कठोरताने उस बेचारे के हृदय पर ऐसा प्रभाव डाला कि संसार नेत्रों में अन्धकार मय दिखलाई देने लगा। आकुलता की अधिकता से वह शीघ्र शीघ्र पद उठाता कभी अपने भाग्य को कोसता, कभी गतदिवसों को स्मरण करके लहू के घूंट पीकर रह जाता। कभी हँसता, कभी दाँत पीसता, कभी प्रस्तर-निर्मित-प्रतिमा समान खड़ा रह जाता, जैसे किसी बड़ी घटना को सोच रहा हो, और फिर इस रीति से झपट कर आगे बढ़ता मानो कमर कसकर उसे सम्पादन करने चला। अन्त को एक उत्तुङ्ग आगार के स्तम्भ से लग कर अपनी गत आपत्तियों को स्मरण कर उसने शोक को अभिनव किया, जब सम्बरण करने की शक्ति शेष न रही तो चिल्ला कर कहने लगा "या तो प्रारब्ध मुझसे ऐसे अद्भुत और अनोखे बीरता के कार्यों को करायेगा जो आगामि समय केलिये एक विचित्र उपाख्यान समान चिरस्मरणीय रहें। अथवा ऐसे कठिन और दुस्सह अपराध, जिनके श्रवण से अखिल अण्डकटाह कांप उठे! फलतः प्रत्येक को चमत्कृत करना अपना कार्य्य है, रुसाल्वो साधारण पुरुषों की भांति नियमित चाल नहीं चल सकता, उसे लघु बातों से क्या प्रयोजन। भला यह भाग्य ही का फेर है न जो यहां तक खींच लाया? किस के ध्यान में यह बात आ सकती है कि नेपल्स के सब से बड़े व्यक्ति और महा पुरुष का तनय बेनिस में रोटियों के लिये परमुखापेक्षी हो? मैं-मैं जो बड़े से बड़े बीरता के कार्य्य करने की शरीर में शक्ति और हृदय में साहस रखता हूँ, इस दशा को प्राप्त हुआ, कि जीर्ण

शीर्ण वस्त्र धारण किये इस नगर में मारा मारा फिर रहा हूं जहां निश्शीलता ने अपना भवन निर्माण किया है, और कठोरता ने दीनों की आशा उन्मूलन करने का बीड़ा उठाया है। सहस्रशः बार बुद्धि दौड़ाता हूं तथापि क्षुधा के श्रृङ्खल और काल के मुख से बचने की कोई युक्ति नहीं सूझती। वही लोग जो कल मेरी वदान्यता से जीवित थे, मेरे पाकालय में निज म्रियमाण चित्तों को उत्तम से उत्तम सुरा से प्रफुल्लित करते थे, और विश्व के सुहावने व्यञ्जनों पर हाथ मारते थे आज मुझ अभागे को एक टुकड़ा रोटी देने से भी मुख मोड़ते हैं। इस कठोरता और निर्दयता का कुछ ठिकाना है! मनुष्य तो मनुष्य कदाचित् परमेश्वर ने भी मुझे भुला दिया।"

इतना कह कर वह चुप हो रहा, अञ्जलिबद्ध होकर कुछ सोचने लगा, और फिर एक ऊँची सांस भरकर बोला "अच्छा! अब जो कुछ होता हो सो हो मैं अपने भाग्य पर सन्तुष्ट हूं, जो जो आपदा शिर पर आयेगी उसे झेलूगा, विधि जैसा जैसा नाच नचायेगा नाचूंगा, भाग्य भी अपनी सी कर ले, परन्तु मैं अपने आपको न भूलूँगा, और भाग्य सहानुभूति करे या न करें मैं काम चढ़ बढ़ कर ही करूंगा। अब युवराज रुसाल्वो जिसे एक समय सम्पूर्ण नेपलूस पूजता था कहां रहा अब—अब तो मैं अकिंचन् अबिलाइनो हूँ। परन्तु यद्यपि मैं अन्तिम श्रेणी पर हूं तथापि मेरा नाम दरिद्रों, भुखमरों पेटुओं और अयोग्यों की तालिका के शिरो भाग में संयोजित है॥

इतने में किसी की आहटसी ज्ञात हुई। फिर कर देखता क्या है कि वहीं डाकू जिसे उसने दे मारा था, और दो मनुष्य और, उसी ढंग के, इस रीति से चारों ओर देखते भालते चले आते हैं जैसे किसी को खोज रहे हैं। अबिलाइनों ने अपने जी में कहा "हो न हो वे तेरे ही अनुसन्धान में हैं" फिर कई

परग आगे बढ़ कर उसने सीटी बजाई। डाकू खड़े हो गये और शनैः शनैः कुछ परामर्श करने लगे। अविलाइनों ने फिर सीटी दी। इस पर एक डाकू बोला "यह वही व्यक्ति है" और फिर वे सब उसकी ओर धीरे धीरे बढ़े। अबिलाइनों कोश से करवाल निकाल कर जहांका तहां खड़ा रहा। वे तीनों डाकू भी जो अपना मुख एक वस्त्र से आच्छादन किये हुये थे कई परग पर खड़े हो गये। एक ने उनमें से पूछा "कहो बचा क्या मन में है?" ऐसे सँभल के क्यों खड़े हुए हो?"॥

अबिलाइनों-जिसमें तुम लोग थोड़ा दूर ही रहो क्यों कि मैं तुमको जानता हूँ। तुम लोग वह भले मानस हो जो दूसरों का जीवन नष्ट करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

पहला डाकू। तुमने हमीं लोगों को न सीटी दी थी॥

अविलाइनों-हां?॥

डाकू-तो कहो फिर क्या कहते हो?

अबिलाइनों-सुनो भाई मैं क्षुधा से पीड़ित हूँ। तुमलोग जो द्रव्य हरण कर लाये हो उसमें से कुछ दान की रीति से मुझे दो॥

डाकू-दान? भाई वाह, दान की बात अच्छी कही, हा हा हा हा! मनुष्य क्या निरा घनचक्कर है। क्यों न हो। दान तो बचा इतना देंगे कि उठा न सकोगे॥

अबिलाइनों-नहीं तो मुझे पचास मुद्रा ऋण दो, जब तक यह ऋण निवारण न हो सेगा तुम्हारी सेवा में कटि बद्ध रहूँगा, और जो कहोगे उसको तन मन से करूंगा॥

डाकू-भला तुम हो कौन यह तो बताओ?

अबिलाइनों-एक अभागा भूखा और पेटू। इस नगर में मुझ से बढ़कर कोई दरिद्र न होगा। परन्तु यद्यपि इस समय

मेरी यह दशा है तथापि स्मरण रक्खो कि इन हाथों में वह शक्ति है कि चाहे मनुष्य तिहरा कवच क्यों न पहने हो पर कटार कलेजे में उतर जाय तो सही, और इन चक्षुओं में वह प्रकाश है कि कैसा ही अँधेरा क्यों न हो, परन्तु लक्ष्य चूक जाय तो बात नहीं ॥

डाकू-भला तो फिर तुमने अभी मुझे धरातल पर क्यों दे मारा था ?

अविलाइनों-यह समझ कर कि कुछ मिलेगा, परन्तु यद्यपि मैंने उसकी जीवन रक्षा की पर उस दुष्ट ने एक कौड़ी भी नहीं दी ।

डाकू-नहीं दी तो अच्छा हुआ, परन्तु सुनों गुरू तुम्हारे मन में कुछ कपट छल तो नहीं है ?

अविलाइनों-निराश व्यक्ति असत्य भाषण नहीं करता ॥

डाकू- और जो तुमने छल किया तो ?

अविलाइनों-तो मेरा कलेजा है और तुम्हारा कटार ।

तीनों डाकुओं ने फिर धीरे २ परस्पर कुछ समालाप किया और तदुपरांत अपने अपने कटार को कोश में कर लिया। फिर एक ने अविलाइनों से कहा "अच्छा आओ हमारे घर चलो राजमार्ग पर ऐसी बातें करना उचित नहीं" ॥

अविलाइनों-चलने को तो मैं चलता हूँ पर स्मरण रखना कि यदि तुममें से किसी ने मुझ पर अंगुलि-प्रहार भी किया तो फिर सबका भाग्य फूटा । मित्र क्षमा करना कि मैंने अभी तुम्हारी पसलियां बेढंग ढीली कर दीं, पर इसके बदले में धर्म का भाई बन कर रहूँगा ॥

इस पर तीनों डाकुओं ने एक मुँह होकर कहा "हम लोग बचनबद्ध होते हैं और बात हारते हैं कि तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव न होगा, जो तुम्हारी ओर आंख उठा कर देखेगा

वह हमारा शत्रु है । तुम्हारी सी प्रकृति के मनुष्य से और हम लोगों से भली भांति निबहेगी । चलो किसी प्रकार का और शंशय न करो ” यह कह कर वह लोग आगे बढ़े और अविलाइनों उनके बीच में हो लिया बार बार वह चौकन्ना होकर आगे पीछे देखता जाता था, परन्तु किसी में कुछ बुरा अथवा दुष्टता का उद्योग उसने नहीं पाया, चलते चलते वह लोग एक नहर पर पहुँचे और एक लघुनौका जो कूल पर बँधी थी खोली, चारो पुरुष उस पर सवार हुए, खेते २ नगर के सिरे पर निकल आये और नौका से उतर कर कई गली कूचों को समाप्त करते हुए एक मनोहर प्रासाद के समीप जाकर कुण्डा खड़खड़ाया । एक नववयस्का युवती ने भीतर से कपाटों को खोला, और उन लोगों को एक साधारण पर विस्तृत परिसर में ले जाकर बिठलाया, बार बार वह आश्चर्य्य की दृष्टि से अविलाइनों की ओर देखती थी । ए महाशय कुछ प्रसन्न, कुछ व्यग्र, जी में कहते थे कि मैं कहां आया और रह रह कर यही सोचते थे कि डाकुओं के कथन पर पूर्ण विश्वास तथा भरोसा करना बुद्धिमत्ता से दूर है ।

तीसरा परिच्छेद

इन लोगों को बैठे हुए विलम्ब नहीं हुआ था कि किसी अपरने द्वार पर आकर पुकारा । उसी युवती अबला ने जिसका नाम सिन्थिया था जाकर कपाट खोला । अब उस समूह में दो पुरुष और आकर मिले और इस नूतन अतिथि को नख से शिख पर्य्यन्त घूरने लगे । जिन लोगों ने उसे उस बुरी समज्या में लाकर मिलित किया था, उन में से एक पुरुष

ने कहा "देखें बच्चा तुम्हारा स्वरूप कैसा है" और आलेपर से दीपक उठा कर उसके भयंकर मुख के सामने किया। सिंथिया देखतेही चिल्ला उठी "परमेश्वर रक्षा करे, ऐ है मूँडीकाटे का कैसा भयावना स्वरूप है"। यह कह कर उसने अपना मुख दोनों हाथों से छिपा लिया और दूर हट गई। अबिलाइनोने उसकी ओर क्रोधपूरित दृष्टि से देख कर आंखें फेर लीं। डाकुओं में से एकने कहा "बच्चा विधाताने तुम्हें अपने कर-कमलों से डाकू का काम करने के लिये बनाया है, ईश्वर की शपथ है यह ज्ञात होता है कि कोई निशाचर मनुष्य के कलेवर में आ घुसा है। मुझे तो यही आश्चर्य है कि आज तक तुम फांसी से क्योंकर बचे। भई सच कहना किस कारागार से शृङ्खल मुक्त हो निकल भागे हो, अथवा किस सामुद्रिक पोत * से भोज्यवस्तु बांध कर पलायित हुये हो?" इसके उत्तर में अबिलाइनो डपट कर ऐसे स्वर से बोला कि वह लोग थर्रा उठे "यदि मैं ऐसा ही हूं जैसा कि तुम कहते हो तो फिर क्या पूछना है जब विधाता ही ने मुझे इस ढँव का बनाया है तो फिर मैं जो चाहूं सो करूं इस में मेरा क्या अपराध।"

पाँचों डाकू दूर जाकर कुछ परामर्श करने लगे और अबिलाइनों अपने स्थान पर निश्चिंतता के साथ मौनावलम्बन किये बैठा रहा। एकक्षण के उपरांत वे सब फिर अबिलाइनों के समीप आये और उनमें से एक, जिसका मुख अत्यन्त रूखा था और जो सबसे अधिक बलवान ज्ञात होता था, आगे बढ़ा और अबिलाइनों को सम्बोधन करके यों कहने लगा "सुनो मित्र वेनिस में केवल पांच डाकू हैं और वे सब तुम्हारे

* अगले समय में यूरप में बड़े २ और कठिन अपराधों का दंड फांसी के सिवाय यह दिया जाता था कि अपराधी से किसी नियत समय तक पोतों पर कर्णधार (खलासी) का काम लिया जाता था।

सामने उपस्थित हैं। चाहो तुम भी छुठे बन जाओ, इसकी चिन्ता न करना कि तुमको कार्य्य न मिलेगा। मेरा नाम माटियो है और मैं इस समूह का अधिपति हूँ। इस व्यायाम निपुण पट्ठे का नाम जिसकी लाल लाल अलकें ऐसी ज्ञात होती हैं कि मानों रुधिराक्त हैं बलुज्जो है। वह जिस की आंखें बजरबट्टू की सी हैं टामेसो है, उसे भी डाकुओं का चचा समझना। यह महाशय जिनकी हड्डियां आज तुमने ढीली कर दीं पीट्रेनो है और वह जो पहाड़ सा डील लिये सिन्थिया के पास खड़े हैं ग्रूज़ो हैं। अच्छा अब तुम सबको जान गये, मुद्रा के नाम तुम्हारे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है, इस लिये हम लोग तुम्हें अपने दल में भरती कर सकते हैं। इस नियम के साथ कि तुमारे हृदय में किसी प्रकार का कपट न हो। इस पर अबिलाइनों ने दाँत निकाल कर कहा 'मेरी भूख की अधिकता से बुरी गति है"।

माटियो– अबे पहले मेरी बात का उत्तर तो दे कि तेरे हृदय में कुछ कपट अथवा छल तो नहीं है?

अविलाइनों–काम पड़ने पर आप ज्ञात हो जावेगा।

माटियो–चेत रखना बचा कि यदि तुम्हारी ओर से थोड़ी भी आशंका हुई तो तुम्हारे जीवन पर आ बनेगी चाहे महाराज के प्राकार में अथवा कठिन दुर्गमें शरण ग्रहण करो और सहस्रों सिपाहियों के बीच में रहो। अथवा स्वयं महाराज के उत्संग मे क्यों न जा छिपो, सैकड़ों तोपें लगी हो, परन्तु हमलोग तुमको बिना हनन किये न छोड़ेंगे।* चाहे तुम

* ईसाइयों में यह रीति थी कि यदि किसी को कोई मनुष्य पकड़ना चाहता हो और वह गिर्जा में जाकर शरण ले तो वहां उसको कोई पकड़ने के लिये नहीं जाता था और समझता था कि वह ईश्वर की शरण में है॥

देवालय में जाकर छिपो और सलीब को हृदय से लगाओ तो भी हम लोग दिन दहाड़े तुम को यमलोक की यात्रा करावेंगे। देखो सोच लो और भली भांति स्मरण रक्खो कि हम लोग डाकू हैं।

अबिलाइनो–इस के जताने की कोई आवश्यकता नहीं मैं स्वयं जानता हूं, परन्तु अब मुझे खा लेने दो तो फिर जब तक कहोगे तुंम्हारे साथ वार्तालाप करूंगा इस समय तो भूख के मारे मुख से सीधी बात भी नहीं निकलती, आठ पहर से एक अन्न भी मुख के भीतर नहीं गया।

यह सुन कर सिन्थियाने एक बृहत् पात्र में उत्तम उत्तम खाने लाकर चुन दिये और रजत निर्मित कतिपय पानपात्रों में उत्तम मदिरा भर दी और मुंह ही मुंह में कहने लगी "परमेश्वर ऐसे मुये का मुँह न दिखाये, मनुष्य काहे को अच्छा खासा राक्षस है। इस में सन्देह नहीं कि जब यह अपनी माता के गर्भ में था तो इस पर प्रेत की छाया पड़ गयी, जिस से यह प्रेत का सँवारा ऐसा कलमुहा उत्पन्न हुआ। नौज! मुह काहे को, यह निगोड़ा चेहरा लगाये है, पर ऐसा भयंकर चेहरा भी तो आजतक मैंने नहीं देखा।

अबिलाइनोंने उस की बात का कुछ ध्यान न किया और भोजन करने में ऐसी तन्मयता प्रकट की कि मानों छ मास तक का ठिकाना कर लिया। डाकू जीही जी में प्रसन्न हो रहे थे कि अच्छा चेला मुँड़ा।

पाठकों को अविलाइनों के स्वरूप से अभिज्ञता लाभ की आकांक्षा होगी, मैं उस का वर्णन किये देता हूं। कोई पच्चीस तीस वर्ष का युवा, हाथ पैर ठीक, शरीर शक्तिमान, सर्व प्रकार से स्फूर्ति सम्पन्न और तेजस्वी, पर मुख ऐसा कि यदि प्रेत भी देखे तो डर जाय। काले काले लम्बे चमकते हुए बाल

मुख पर इस प्रकार से उड़ते थे कि मानो मार्जनी बन कर कुरूपता को स्वच्छ करने का प्रयत्न करते हों। मुख इतना चौड़ा कि मसूड़े और दांत देख लीजिये। इस पर विशेषता यह कि वह बार बार मुख ऐसा चलाया करता था कि प्रत्येक समय दांत निकलेही रहते थे। उस की आंख (जो कि एक ही थी) शिर में इतनी घुसी हुई थी कि सुपेदी के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखलाई देता था। पर उस को भी असित घनी आकुंचित भृकुटियोंने ढक लिया था। प्रयोजन यह कि उस के आनन में तमाम भोंड़ी और कुरूपता सम्बन्धी बातें एकत्रित थीं। जिनके देखने से यह ज्ञात होता था कि वह उसकी ःखता के दृढ़ चिन्ह हैं या धृष्टता के अथवा दोनों के। खाने के पीछे अबिलाइनोने मदिरा, जो पानपात्र में भरी थी, पृथ्वी प फेंक दी और उन लोगों से कड़ककर कहा 'अब आप लोग कहिये मैं पेटभर खा चुका और पूर्ण तृप्त हो गया, जो कुछ मुझ से पूछना हो पूछिये मैं उत्तर देने को तैयार हूं।

माटियो बोला " पहली बात हमको यह जांचनी है कि तुम्हारे शरीर में शक्ति है अथवा नहीं क्योंकि हमारे सम्पूर्ण कार्यों क लिये यह अतिआवश्यक है। मल्ल युद्ध करना जानते हो न ?,।

आविलाइनो--मैं नहीं कह सकता परीक्षा कर देखो।

माटियो-सिन्थिया पात्रों को यहांसे हटा दे, ले अब अबि-लाइनो किससे मल्लयुद्ध करोगे ? हम में से तुम किसे समझते हो कि इस नवशिक्षित पीट्रनो की भांति सुगमता के साथ देमारोगे ? "।

अबिलाइनो-" ऐं किसे ? अजी तुम सबों को वरन तुम्हारे ऐसे दश और छोकरों को,। यह कहकर वह अपने स्थान से कूद कर खड़ा हो गया और पलमात्र में सबों की

शक्ति तोल ली। सब डाकू अट्टहास शब्द करके हँसने लगे। अविलाइनोंने चिल्ला कर कहा "अब मेरी परीक्षा करो, तुम लोग सामने क्यों नहीं आते ?"।

माटियो-मित्र! मेरी बात मान, पहले मेरे साथ एक पकड़ लड़ ले तो तुझे ज्ञात होजायगा कि कैसों से पाला पड़ा है क्या हम लोगों को दूध पीता बच्चा समझता है या बाबू भैया मान लिया है ? ॥

अविलाइनो यह सुन कर हँस पड़ा, जिससे माटियो खिसियाकर क्रोधके मारे आपे से वाहर होगया। उसके सहकारियों ने कोलाहल करना और ताली बजाना प्रारम्भ किया।

अविलाइनो बोला " ले आओ एक पकड़ हो जाय, मेरा चित्त भी इस समय ठीक है, ले आप आप को सँभल कर खड़े हो जाओ"। यह कह कर उसने अपने बलको तौल कर बात की बातमें माटियो के से वीरपुरुष को बच्चे के समान शिरके बल उठाकर दे मारा, पूजा को दाहिनी ओर और पीट्रैनो को बाईं ओर ढकेल दिया, टामेसो को पैर ऊपर शिर नीचे कर के दूर परिसर में फेंक दिया और बलुज्ज़ो को बेदम करके पास की तिपाइयों पर लिटा दिया। पांच पैल के उपरांत पांचो डाकुओं की मूर्छा दूर हुई और चित्त ठिकाने हुआ, अबिलाइनो ने आनन्द में मग्न होकर एक भीमनाद किया और सिन्थिया इस शक्ति को अवलोकन कर टकटकी बांधे खड़ी कांपने लगी। निदान माटियो अपना शरीर झाड़ता हुआ उठा और कहने लगा "ईश्वर की शपथ है कि यह अद्भुत व्यक्ति हम लोगों का गुरु है, सिन्थिया! देख! सबसे अच्छा आयतन जो है उसमें इसे ठहराओ "। टामेसो अपनी उतरी हुई कलाई बैठाता और कहता जाता था " निस्सन्देह यह व्यक्ति पौरुष में प्रेतों और राक्षसों का समकक्ष है " फिर

किसो के जी में इतनी अभिलाषा न रही कि दूसरी बार उस की शक्ति का परीक्षण करे। निशा अधिक व्यतीत हो गई थी यहां तक की ऊषा काल की स्वेतता समुद्र से स्पष्टतया दृष्टि गत होती थी। अतएव डाकू अलग २ होकर अपनी अपनी कोठरियों में जा सोये।

चौथा परिच्छेद।

अबिलाइनो को-जिसे उसकी शक्ति के विचार से अपने समय का बायुजात अथवा भीम कहना चाहिये-डाकुओं के साथ रहते हुए बहुत दिवस नहीं व्यतीत हुये थे, कि वह सबों की दृष्टि में समा गया, प्रत्येक उससे परम स्नेह करता था और सब उसका सम्मान करते थे क्योंकि उसमें डाकूपन की योग्यता कूट कूट कर भरी थी। पहले तो उसके शरीर में बल ऐसा था कि दर्शकचकरा जाते थे, दूसरे तीव्र इतना था कि अवसर और समय की बात तत्काल सोच कर निकालता था, तीसरे भय की दशा में कभी घबराता अथवा साहसको हाथ से न जाने देता था। इन सब बातों से सिद्ध होता था कि वह प्रकृति ही से डाकू-गरी और बांकपन के गँवका बनाया गया है। सिन्थिया भी अब उससे स्नेह कर चली थी, परन्तु अबिलाइनो की कुरूपता उसकी दृष्टि में कण्टक समान खटकती थी॥

अबिलाइनो को अति शीघ्र विश्वास होगया कि माटियो बास्तव में इस साम्राज्य का स्वामी है। इस मनुष्य के डाकू पन की सीमा असीम हद् हो गयी थी, भय तो नाम को छू

नहीं गया था, चालाकी काइयाँपन और कठोरता में वह अद्वितीय था। उसके साथी जो कुछ सम्पत्ति हरणकर लाते उस के हाथ में देते थे, वह प्रत्येक पुरुष का भाग पृथक् कर देता और आप भी उन्हीं के बराबर ले लेता था। जो लोग उसके काल समान कठोर करों से निहत होकर विविधाकांक्षा पाशबद्ध इस संसार से उठ गये थे उनकी तालिका इतनी बड़ी थी कि गिनाना दुस्तर था। बहुत से नाम उसकी स्मरण शक्ति ने विस्मरण कर दिये थे, परन्तु बेकार होने के समय उसको अपने डाकूपन के कतिपय उपाख्यानों के वर्णन करने में–जो अब तक याद थे–अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होती थी, जिसका अभिप्राय यह था कि उसे सुनकर उसके साथी भी वैसाही करें। उसके शस्त्र पृथक रक्खे रहते थे और उनसे एक कोठरी ठसाठस भरी हुई थी। सहस्रों प्रकार के मुठियावाले और विना मुठिया के कटार दो तीन और चार धारकी बन्दूकें जो वायु संसर्ग से छूटती थीं, पिस्तौल, करवाल, यमधार, प्रभृति प्रत्येक प्रकार के विषाक्त शस्त्र, तथा सब प्रकार के विष, भांति भांति के बेष परिवर्तन के परिच्छद, जिनसे मनुष्य जिस प्रकार का रूप चाहे बन ले, वहां मौजूद थे।

एक दिन उसने अविलाइनो को उस कोठरी में बुलाकर कहा "सुनो मित्र तुम्हारे ढंग से ज्ञात होता है कि तुम वीर निकलोगे अतएव उचित है कि अपनी रोटी आप कमा खाओ और हमलोगों का भरोसा छोड़ दो। देखो यह कटार उत्तमोत्तम फ़ौलाद का है जिसके प्रत्येक इञ्चका मूल्य तुमको प्राप्त हो सकता है। यदि एक इञ्च किसी के हृदय में भोंक दो तो एक स्वर्णमुद्रा, दो इञ्च के लिये दश स्वर्णमुद्रा, तीन इञ्च के लिये विंशति स्वर्णमुद्रा, और सम्पूर्ण कटार के लिये अभिलषित पारलौकिक प्राप्त होगा। दूसरे इस कटारको देखो यह स्फटिक

द्वारा निर्मित है! जिस मनुष्य के शरीर में यह प्रविष्ट होगा उसकी मृत्यु निश्चित है। घायल करने के साथ ही चाहिये कि कटार उसके भीतर तोड़ दिया जाय, तत्काल घाव भर जावेगा और कटार का खण्ड प्रलय पर्य्यन्त बाहर न निकल सकेगा। यह तीसरा कटार बड़ी युक्तिसे निर्माण किया गया है क्योंकि इसके भीतर एक छिद्र में हलाहल विष भरा है। ज्योंही इससे शरीर क्षत विक्षत हो तत्काल इस तिकठी को दबाये, विष घाव के मार्ग से सम्पूर्ण शरीर में फैल जायगा और मनुष्य का जीवन समाप्त कर देगा। इन तीनों कटारों को लो और स्मरण रक्खो कि मैंने तुमको वह पूंजी अथवा मूलधन दिया है जिसके सहारे समृद्धिशाली हो जाओगे।

अविलाइनोने उनको ले लिया, परन्तु उसने किसी निरप राधी का प्राण आज तक धोखे से नहीं लिया था, इस लि उसका हाथ कांपने लगा।

अबिलाइनो—इन शस्त्रों के बल से तो तुमने लक्षों मुद्रायें हरण कर अपना घर भर दिया होगा।

यह सुनते ही माटियो ने क्रोधित होकर नाक भौं चढ़ाई और रुखाई से कहा 'अरे दुष्टात्मा हमलोग जानते ही नहीं कि अपहरण करना किसे कहते हैं। ऐं क्या तू हमलोगों को साधारण डाकुओं, चोरों, गिरहकटों, और हीन श्रेणी के दुष्टात्माओं के समान समझता है?

अविलाइनो-अच्छा तो ज्ञात हुआ कि कदाचित् तुम्हारी यह चाह है, कि मैं तुमको इनसे भी नीचतर समझूं, क्योंकि सच पूछो तो उस प्रकार के लोग तुमसे लक्षगुण उत्तमतर हैं, इस कारण से कि वे लोग तो केवल मनुष्यों की थैली का रिक्त कर देते हैं जिसका फिर भरजाना सम्भव है, परन्तु जो वस्तु हमलोग दूसरों से ले लेते हैं वह एक अनुपम रत्न है

जो मनुष्य को एक ही बार प्राप्त होता है। और जब एकबार उसके अधिकार से निकल गया तो फिर प्रलय पर्य्यन्त हस्तगत नहीं हो सकता। अतएव तुम्हीं बतलाओ कि हमलोग उनसे निकृष्टतर हैं अथवा नहीं।

मार्टियो-ऐसा ज्ञात होता है कि आप हम लोगों को सदुपदेश देने के लिये यहां आये हैं।

अबिलाइनो-अजी मेरा तो एक ही प्रश्न है अर्थात् तुम्हारी दृष्टि में धर्म्मराज के सामने कौन निर्दोष निश्चित हो सकता है तस्कर अथवा प्राणहारक।

इस पर मार्टियोने एक बार अति उच्चस्वर से अट्टहास किया।

अबिलाइनो—इससे यह मत समझना कि मुझ में साहस अथवा पौरुष नहीं, कहो तो वेनिस के सम्पूर्ण राजकर्म्मचारियों और अधिकारियों को ठिकाने लगा दूं, परन्तु—"।

मार्टियो—मूर्ख! सुन! डाकुओं को चाहिये कि भलाई और बुराई की कथाओं को जिनको बाल्यावस्था में धात्री के मुख से सुना. था, जी से भुला दे। भला,-भलाई क्या वस्तु है? और बुराई किसे कहते हैं? यही न कि रीति, प्रणाली, परिपाटी, नियम और शिक्षाने इनको ऐसा समझ रखा है, नहीं तो जिस वस्तु को मनुष्य किसी समय उत्तम समझता है जहाँ दूसरी धुन समाई उसी को निकृष्ट और तुच्छ अनुमान करने लगता है। यदि वर्तमान नृपति की ओर से वेनिस की राजकीय घटनाओं पर प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता के साथ सम्मति देने का निषेध न होता तो इतनी हानि न होती। यदि अब शासनप्रणाली परिवर्तित होकर यह आज्ञा हो जाय,-कि जो मनुष्य चाहे अपनी सम्मति प्रकट रीति से दे,-तो जिस बात को आज लोग अपराध विचारते हैं, कल्ह उसको एक सत्कर्म समझने लगें। बस

परमेश्वर के लिये भविष्यत् में ऐसे संशय हमारे सामने न उपस्थित करना। हमलोग भी महाराज और उनके मंत्रियों की भांति मनुष्य हैं अतएव हम को भी बुराई भलाई के विषय में नियम और नीति निर्माण करने का वैसाही अधिकार प्राप्त है जैसा कि उनको है और हम भी यह निर्धारण कर सकते हैं कि अमुक कर्म सत् है और अमुक असत्।

अविलाइनो यह सुन कर हँस पड़ा इस पर माटियो और अधिक उत्तेजना के साथ कहने लगा।

कदाचित् तुम हमसे यह कहोगे कि हमारी वृत्ति निकृष्ट है, अब बतलाओ कि महत्त्व क्या वस्तु है? केवल एक शब्द, एक वाक्य, एक अनुमानित विषय, और है क्या? यदि जी चाहे तो किसी राजपथ पर जहाँ प्रत्येक प्रकार के लोग आते जाते हों चल कर पूछो कि महत्व किस बातसे प्राप्त होता है? महाजन कहेगा बस धनवान होना योग्य होना है और वही बड़ा सम्मान योग्य है जिस के पास अधिक स्वर्णमुद्रायें हैं। विषयी कहेगा अजी यह मूर्ख व्यर्थ प्रलाप करता है महत्व इसमें है कि प्रत्येक युवती प्यार करे और कोई कैसी ही पति-परायणा क्यों न हो हमलोगों के हस्तगत होजाय। सेनप कहेगा, 'दोनों झूठे हैं। सच पूछिये तो देश जीतने शत्रुको पराभव देने और बसे हुये नगरों को उजाड़ने सेही महत्त्व प्राप्त होता है। पढ़े लिखे लोग बहुत से ग्रन्थ ही लिखने अथवा पठन करने में बड़ा महत्व समझते हैं—भाजनकार इसी में भूला हुआ है कि मैंने इतने भाजन बनाये और उनको सुसँस्कृत किया, बस अब मेरे समान संसार में दूसरा मनुष्य नहीं। संत अथवा महात्मा लोग अपने पूजापाठ और ईश्वरार्चन के घमंड में चूर हैं। वारवधू गण इसी पर मुग्ध हैं कि मेरे बहुत से ग्राहक हैं। और भूपति के जी में यही समाई है कि मेरे

अधिकार में इतने देश हैं। निदान जिसे देखो मित्र! वह एक न एक निराली बात में अपना मान समझता है। अतएव हमलोग भी अपनी बृत्ति में पूरी योग्यता लाभ करना और ताक कर ठीक कलेजे में कटार भोंक देना क्यों न महत्व की बात समझें।

अविलाइनो-'जीवन की शपथ माटियो इस समय मुझे अत्यन्त शोक हुआ कि तुम डाकू का काम करते हो क्योंकि तुमतो किसी पाठशाला में न्याय के उच्च अध्यापक नियत किये जाने के योग्य थे।

माटियो-वास्तव में तुम ऐसा बिचार करते हो तो लो मैं अब अपना वृत्तान्त तुम से वर्णन करता हूँ। मेरे पिता· लका में पादरी थे और मेरी माता एक अत्यन्त पतिव्रता और आचारवती स्त्री थी। उन लोगों ने मुझे धर्म्म विषयक शिक्षा-दी और मेरे पिताने चाहा कि वह मुझे किसी माननीय धा· र्मिक पद पर नियुक्त करा दें। परन्तु मुझे तत्काल ज्ञात होगया कि मेरी प्रकृति दुष्टता और उत्पात के गँवकी है अतएव मैंने अपने हृदय का अनुसरण किया। पर मैं सोचता हूँ कि मेरा पढ़ना लिखना निरर्थक नहीं हुआ क्योंकि उन्हीं के कारण अब मुझको वह योग्यता प्राप्त है कि अनुमानित भय की बातों से मैं कदापि भयभीत नहीं होता। आशा है कि अब तुम भी मेरी ही प्रणाली को ग्रहण करोगे लो, अब तुम्हारा परित्राता जगत्‌रक्षक है।

पाँचवाँ परिच्छेद ।

अबिलाइनो को वेनिस में रहते एकमास से अधिक हो चुके थे परन्तु अब तक उसके कटार को कोश से निकलना नहीं पड़ा था । इसका कारण कुछ तो यह था कि उस समय तक उसको नगर की गली और रास्तों से अभिज्ञता नहीं हुई थी और कुछ यह कि कोई दुष्टात्मा वधिक ऐसा नहीं दृष्टिगोचर हुआ, जिसको यमलोक की यात्रा कराने की आवश्यकता हो । इस रीतिसे अकर्म्मा बनकर बैठे रहना उसको अत्यन्त अनुचित ज्ञात होता था और उसका हृदय यही चाहता था कि किस दिन कोई कार्य आन पड़े और मैं अपना गुण दिखाऊं । प्रतिदिन वह वेनिस के राजमार्गों पर उद्विग्न और व्यग्रभ्रमण किया करता था और प्रत्येक परग पर शीतल-उच्छ्वास मुखसे बाहर निकालता था । उसने नगरके सम्पूर्ण मुख्य मुख्य प्रासादों, उपवनों, मदिरालयों और क्रीड़ा कौतुकादि के प्रत्येक स्थानों को छान मारा परन्तु हर्ष और उत्कर्ष का स्वरूप उसे कहीं दृष्टि-गोचर न हुआ ।

एक-दिन का यह समाचार है कि वह एक उपवन में जो एक अति सुन्दर द्वीप में लगा हुआ था, लोगों के जमघटे से छुँटकर आगे निकल गया और प्रत्येक कुञ्ज में होता हुआ जलराशि के कूल पर जा पहुँचा । यहाँ वह बैठकर नि-खरी हुई चाँदनी में उसकी तरंगों का कौतुक अवलोकन करने लगा । अकस्मात् कुछ शोकपूरित और पश्चातापमय विचारोंने उसके अन्तःकरण में प्रवेश किया और वह एक तप्त उच्छ्वास से दग्ध होकर बोला “ चार वर्षका समय व्यतीत हुआ कि

ऐसी ही धवल-निशा में मैंने पहले पहल वलीरिया के शोणा धर का चुम्बन किया था और उसी शुभ दिवस को उसने कोकिलालाप से कथन किया कि मैं तुमको चाहती हूँ " । इतना कथन कर वह चुप हो रहा और उन्हीं शोकमय विचारों पर जो उसके मस्तिष्क में समाये हुए थे तर्क वितर्क करने लगा। उस समय सन्नाटे की यह अवस्था थी कि वायु की सनसनाहट तक का परिज्ञान न होता था परन्तु अबिलाइनों के अन्तःकरण में एक शोकका प्रचंड-प्रभंजन उठ रहा था। " चार वर्ष का समय हुआ कि मुझको इस बातका अणुमात्र भी ज्ञान न था कि एक दिन मैं वेनिस में डाकुओं का काम करूंगा ? न जाने वह दिन क्या हुए जब कि बड़ी बड़ी आशायें और भारी भारी कामनायें मेरे हृदय में उमड़ती थीं। इस समय मैं एक डाकू हूँ जिससे भिक्षा मांगना कहीं उत्तम है। नारायण ! नारायण !! वह भी एक समय था जब कि मेरे पितृ चरण स्नेह की उमंग में मेरी ग्रीवा में हाथ डाल कर कहा करते थे 'बेटा तू रुसाल्वो का नाम संसार में प्रख्यात करेगा, और मैं वस्त्रों में फूला नहीं समाता था, कैसे कैसे विचार उस समय अन्तःकरण में उत्पन्न होते थे, क्या क्या न मैं सोचता था ! और कौन ऐसा महत् कर्म्म और उत्कृष्ट कार्य्य था जिसके करने की अपने मन में कामना न करता था ! हा हन्त ! पिता तो स्वर्गवासी हुआ और पुत्र वेनिस में डाकू का काम करता है। जब मेरे शिक्षक मेरी प्रशंसा करते और उमंग में आकर मेरी पीठ ठोकते और कहते थे युवराज ! तेरे कारण रुसाल्वो के प्राचीन-वंश का नाम सदैव स्मरण रहेगा, तो मुझे एक स्वप्न सदृश वह अवस्था ज्ञात होती और उस की तरंग में आगामी समय उत्तमोत्तम दृष्टि गोचर होता। जिस समय कोई बड़ा कार्य करके मैं गृह को पलट आता।

और वलीरिया प्रोत्साहित हो मेरे मिलने के लिये दौड़ती और परिरम्भन कर हृदय से लगा मधुर वाणी से कहती कि रूसाल्वोसे व्यक्तिको कौन प्यार न करेगा, तो परमेश्वर ही जानता है कि क्या आनन्द चित्त को प्राप्त होता। परन्तु अब मैं इन गत आनन्दों का स्मरण न करूँगा, नहीं तो निस्सन्देह मुझको उन्माद हो जायगा।

अबिलाइनो कुछ देर तक चुप रहा और अपना ओष्ठक्रोध से दंशन करता रहा, फिर एक हाथ आकाश की ओर उठा और दूसरे से शिर ठोंक कर बोला " डाकू, कायर-शिरोमणि दुष्टात्माओं का दास और वेनिस के छुँटे हुए डाकुओं का सहकारी, बस अब रूसाल्वो की यही पदवी है। धिक् है ऐसे जीवन पर ! फिटकार है ऐसी वृत्ति पर ! पर क्या करू भाग्य जो चाहे कराये असमर्थ हूँ। "

इतना कह कर वह फिर प्रतिमा समान हस्त पद परि- चालना हीन होगया और देर तक इस दशा में रहा। पुनः अकस्मात् वह उछल पड़ा, आंखें चमकने लगीं और मुख का वर्ण अरुण हो गया। " निस्सन्देह युवराज रूसाल्वो की सी बड़ाई तो मुझे प्राप्त नहीं हो सकती परन्तु यदि वेनिस का छुँटा अथवा बांका बनकर सुख्याति लाभ करूं तो कौन रोक सकता है, ऐ स्वर्गीय लोगो ! (यह कह कर उसने अपने दोनों हाथोंको बांध कर आकाश की ओर उठाया, मानो अत्यन्त कठिन शपथ करना चाहता था) ऐ मेरे पूज्यपाद पिताकी आत्मा ! ऐ प्राणाधिका वलीरिया की आत्मा ! मैं तुम लोगों का नाम न हँसाऊँगा। यदि तुम्हारी आत्मायें कहीं मेरे आस पास हों तो मेरे शपथ और प्रतिज्ञाको सुन रक्खें कि अविलाइनो अपने पूर्व पुरुषों के चिरस्मरणीय नामको लांछित न करेगा और न उन आशाओं को व्यर्थ होने देगा जो तुम लोगों के

प्राण प्रयाण के समय तुम-लोगों की शान्ति और समाधान का कारण थीं। यदि मेरा जीवन है तो मैं एकाकी ऐसे कार्य्य करूंगा जिससे भविष्यत् में लोग उस नामका सम्मान करेंगे जो मेरे सत्कर्मों के कारण विख्यात होगा" अब उसने अपना मस्तक इतना नीचे झुकाया कि कपाल देश पृथ्वी से लग गया और नेत्रोंसे अश्रु प्रवाह होने लगा। बड़े बड़े विचारोंने उसके हृदय में स्थान ग्रहण किया था, विविध प्रकार के भाव उसके चित्त में समाये हुये थे और वह बड़ी बड़ी बातें सोच रहा था यहां तक कि उसका शिर चक्कर में आगया। दो घंटे तक वह इसी हेर फेर में रहा, इसके उपरांत अचाञ्चक उठ कर उनके पूर्ण करने के लिये चल निकला, और यह पण ठाना, "मैं पांच निकृष्ट और नीच प्रतारकों का सहकारी होकर मनुष्य को दुख देने में कदापि प्रयत्न न करूँगा वरन एकाकी सम्पूर्ण वेनिस को भयग्रस्त और त्रस्त रक्खूंगा और एकही सप्ताह के भीतर वह युक्ति करूँगा जिससे ए दुष्टात्माशूली पर लटकते दृष्टिगोचर हों। वेनिस में पांच प्रतारकों के रहने की कुछ आवश्यकता नहीं केवल एक ही पुरुष ऐसा रहेगा जो स्वयं महाराज का सामना करेगा और भलाई बुराई को देखता रहेगा और अपने परामर्श के अनुसार लोगों को पुरस्कार और दण्ड देगा। एक सप्ताह के भीतर यह देश इनपाँचों दुष्टाग्रगण्यों से रहित हो जायगा और तब मैं अकेला कार्य्यक्षेत्र का स्वामी हूँगा। उस समय वेनिस के सम्पूर्ण उत्पातप्रिय लोग जिन्होंने आज तक मेरे साथियों के कटार से काम लिया है मेरे पास अपनी कामना लावेंगे और मुझे उन कायरों वधिकों और उन माननीय विषयियों के नाम ज्ञात होंगे जिन्होंने अब तक माटियो और उसके साथियों के द्वारा निरपराधियों की ग्रीवा पर

छूरिका फिरवाई है और प्रत्येक ओर अबिलाइनो अबि-लाइनो की पुकार मचेगी। सुन रख ऐ वेनिस इस नाम को और डर!" ॥

इन आशाओं ने उसको इतना उन्मत्त कर दिया कि वह उस बाटिका से अकुलाकर निकला और एक लघुनौका पर सवार होकर झटपट सिन्थिया के गृह में प्रविष्ट हुआ जहाँ उसके साथी पहले ही से पड़े सो रहे थे॥

षष्ठ परिच्छेद।
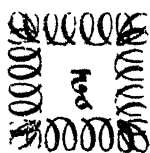
दूसरे दिन अरुणोदय के समय माटियोने अबि-लाइनो को बुलाकर कहा 'सुनो मित्र आज पहले पहल तुमारी परीक्षा की जायगी॥

अबिलाइनो—(गंभीर स्वर से) "आज? भला वह कौन पुरुष है जिसपर मैं अपने ओजस्वी कर का प्रहार करूंगा और अपना जौहर दिखलाऊंगा।

माटियो—यदि सच पूछो तो वह एक नवयौवना युवती है, परन्तु नवशिक्षित मनुष्यको आदि में कठिन कार्य न देना चाहिये। मैं स्वयं तुमारे साथ चलकर देखूँगा, कि तुम इस पहली परीक्षा में कैसा उतरते हो।

इस पर अबिलाइनो ने हूँ हूँ कह कर माटियो को एकदृष्टि से नख शिख तक तोला।

माटियो—आज चारबजे तुम डालाविलाके रम्योपवन में जो वेनिस की दक्षिण दिशा में है मेरे साथ चलो। हम तुम दोनों स्वरूप बदल लेंगे। उस उपवन में उत्तमोत्तम तड़ाग

निर्मित हैं जहां महाराज की भ्रातृजा कोमलाङ्गी किशोरवयस्का रोज़ाविला मज्जन कर प्रायः एकाकी बिहरती फिरती है। बस अब शेष विषय समझ जाओ,, ॥

अविलाइनो—और तुम भी मेरे साथ चलोगे?

माटियो—मैं तुम्हारी प्राथमिक क्रिया का कौतुक अव-लोकन करने चलूंगा, इसी प्रकार मैं प्रत्येक व्यक्ति के साथ करता हूं।

अबिलाइनो—आज कै इंच गहराब्रण मुझे लगाना होगा?

माटियो—अजी पूरा कटार तैरा देना चाहिये, पूरा कटार, उसकी मृत्यु होनी चाहिये पुरस्कार तो मनोभिलषित प्राप्त होगा। रोजाविला मरी और हम लोग आयुभर के लिये धनाढ्य और वैभववान हुये।

इसके उपरान्त और सब बातों की तत्काल मीमांसा हो गई और ज्यों ही घड़ियाली ने चार बजाया माटियो और अवि-लाइनो चल खड़े हुये। कियत काल में दोनों डोलाविला के उपवन में जा पहुंचे तो क्या देखते हैं कि उस दिन नियम के विरुद्ध बहुत से लोग परिभ्रमण के लिये आये हैं। प्रत्येक छायावान कुञ्जों में स्त्री पुरुष बेढंग भरे हैं। रविशों पर वेनिस के प्रख्यात लोग टहल रहे हैं। प्रत्येक कोनों में प्रियतम और प्रेयसी निशागमन की प्रतीक्षा में उसासें भर रही हैं। और प्रत्येक दिशा से गाने और वाद्ययन्त्रों की मीठी मीठी सुरीली ध्वनि चली आती है। अबिलाइनो भी उस भीड़ में जा मिला। उसके शिर पर कृत्रिम आकुञ्चित केशों की एक बड़ी चमत्कार सम्पन्न टोपी रक्खी हुई थी जिसने उसकी आननाकृति के अवगुणों को छिपा लिया था वह उन वृद्ध मनुष्यों के समान जिन्हें गठिये का रोग होता है छड़ी टेकता शनैः शनैः सबों से मिलता जुलता चला जाता था। उसके

बहुमूल्य परिच्छद के कारण प्रत्येक मनुष्य उसकी अभ्यर्थना करता था और कोई ऐसा वहां न था जो अबिलाइनो से ऋतुपरिवर्तन, वेनिस के व्यापार और उस के शत्रुओं के विचारों के विषय में कथनोपकथन न करता हो। ए महात्मा तो सर्वगुणसम्पन्न थे ही इन बातों से कब घबराते थे, प्रत्येक पुरुष का उत्तर यथोचित देते थे। इस सूत्र से अबिलाइनो का काम निकल आया और उसने अपना पूरा इतमीनान कर लिया कि रोजाबिला अब तक उपबनही में है और अमुक प्रणालीका परिच्छद धारण किये अमुक स्थान पर सुशोभित है।

निदान वह उसी पते पर चल निकला और माटियो भी उसके पीछे हो लिया। जाते जाते वह एक वृक्षाच्छादित सघन कुञ्ज के समीप पहुँचा जो वाटिका भर में सबसे निराले में थी। इसमें रोजाविला जिसके समान वेनिस में अपर स्त्री स्वरूपवती और सुन्दरी न थी बैठी हुई दृष्टिगोचर हुई। अबिलाइनो ज्यों ही उसके भीतर प्रविष्ट हुआ उसके दोनों पांव इस प्रकार लरखराये जैसे निर्बलता के कारण गिराही चाहता हो, उसने पुकार कर टूटती हुई वाणी से कहा कष्ट का विषय है, ऐसा कोई नहीं जो मुझ वृद्धतर को थोड़ा सो आश्रय दे। रोजाविला यह सुनते ही झपट कर तत्काल अविलाइनो के टेकाने के लिये आई एवम् मीठी मीठी बातें कह स्नेह के साथ पूछने लगी, बूढ़े बाबा तुम्हारा चित्त कैसा है? अबिलाइनो ने कुञ्ज की ओर संकेत किया रोजाबिला उसे सहारा देकर वहां लेगई और एक स्थान पर बैठा दिया। अबिलाइनो ने क्षीणवाणी से कहा "राजतनये! परमेश्वर तुमको इस उदारता का प्रतिफल दे" और शिर उठा कर रोजाबिला की ओर देखा। ज्यों ही उसकी आँख उस

कोमलाङ्गी, क्षामोदरी, की आंखों से लड़ी अबिलाइनो लज्जा से पानी पानी हो गया । रोज़ाबिला अपने घातक की सामयिक अवस्था देख अश्रु पूरित नेत्र से उसके सामने खड़ी थी जिससे वह अविलाइनो को और भी प्रिय ज्ञात होने लगी। कियत कालोपरान्त वह अत्यन्त कोमल स्वर से पूछने लगी ' क्यों अब तुमको कुछ सुख जान पड़ता है, उस कपटी ने धीमी वाणी से कहा ' हां सुख है, सुख है, तुम्हीं वर्त्तमान महाराज की भ्रातृजा रोजाविला हो, ।

" जी हां मैं ही हूँ,,

अबिलाइनो—सुनो राजकुमारी मुझे तुम से कुछ कहना है देखो सावधान और सजग रहो, घबराओ नहीं, जो कुछ मैं कहने वाला हूं वह तुम्हारे बड़े लाभ की बात है और उसके लिये बड़ी बुद्धिमत्ता आवश्यक है, हे नारायण ! संसार में ऐसे कठोरचेता लोग भी हैं,राजनन्दिनी तुम्हारा प्राण बड़ी आपत्ति में पड़ा चाहता है, ।

रोज़ाबिला यह सुनकर कांप उठी, कपाल स्वेदाक्त होगया और आनन पीत वर्ण ।

अबिलाइनो—तुम अपने नाशक को देखा चाहती हो ? तुम्हारा बालतक बीका न होगा, परन्तु यदि तुम अपना जीवन चाहती हो तो मौन रहो ।

रोज़ाबिला की संज्ञा उस समय लुप्तप्राय थी, और चित्त ठिकाने न था कि कुछ बोलती, उस वृद्ध पुरुष की बातों से उसके छक्के छूट गये, और उसे मूर्छा आच्छादन करने लगी ।

अबिलाइनो—राजात्मजे ! तुम किसी प्रकार का भय मत करो, जब तक मैं यहां हूं तुम्हारे लिये यह भय का स्थान नहीं

है, इस कुञ्ज से प्रस्थान के प्रथम तुम अपने नाशक का शव यहां तड़पता देखोगी।

उस समय रोज़ाविला ने चाहा कि निकलभागे परन्तु अकस्मात् वह वृद्ध, जो पहले अत्यन्त निर्बल था जिसके मुख से अल्पकाल हुआ कि बात कठिनता से निकलती थी और एक वृक्षके आश्रय से बैठा हुआ था-कड़क कर उठ खड़ा हुआ और उसको हाथ पकड़ कर खींच लिया।

रोजाविला—परमेश्वर के लिये मुझे छोड़ दो कि भाग जाऊँ।

अविलाइनो—राजकन्यके! अल्पभय न करो मैं तुम्हारी प्राण रक्षा के लिये उपस्थित हूं।

यह कहकर उसने अपनी जेब से एक सीटी निकाल कर मुँह से लगायी और उसको जोर से बजाया। सीटी के साथ ही माटियो जो कुछ दूर वृक्षों की ओट में छिपा था अपने स्थान से निकल कर कुञ्ज के भीतर घुस पड़ा। अविलाइनो रोजाबिला का परित्यागन कर कई क़दम माटियो की ओर बढ़ा और उसके समीप पहुँच कर कटार को उसके हृदय में भोंक दिया। माटियो के मुख से शब्द तक न निकला और वह अविलाइनों के चरणों के समीप गिर पड़ा। किञ्चित् काल पर्य्यन्त कर पद पटकने के उपरान्त उसकी आत्मा ने यमलोक को प्रस्थान किया। उस समय अविलाइनो ने फिर कुञ्ज की ओर दृष्टिपात किया तो देखा रोजाबिला कर पग परिचालना हीन मूर्ति की सी अवस्था में खड़ी है।

अविलाइनो—मेरी षोड़शाब्दा! कोमलाङ्गी!! रोजाविला!!! देखो उस दुष्टात्मा का शरीर जो मुझको तुम्हारे नाश करने के लिये यहां लाया था, वह पड़ा है। चित्त ठिकाने करो और अपने घर जाकर अपने पितृव्य महोदय से कहो कि

तुम्हारे जीवन की रक्षा अविलाइनो ने की रोजाबिला को बात करने की शक्ति न थी उसने अपना हाथ अबिलाइनो की ओर बढ़ाया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर धन्यबाद प्रदान की भांति चूम लिया। अबिलाइनों हर्ष और आश्चर्य्य की दृष्टि से उस कृशोदरी को देख रहा था, मेरी अनुमति तो यह है कि संसार में कोई पुरुष ऐसा नहीं है जो ऐसी दशा में अपने को अधिकार में रख सकता। एक तो रोजाबिलाका षोड़श अथवा सप्तदशाब्द का वयः क्रम, युवावस्था का प्रारम्भ, दूसरे सुन्दर स्वेत परिच्छद, असित प्रमादपूरित अँखड़ियां, स्वच्छ विशाल भाल, स्वर्ण-वर्ण आकुञ्चित केश-जाल, पाटल सरस-दलोपमेय कपोल, और पतले पतले विम्बाफल समकक्षी ओष्ठ, ऐसे थे जिन्हें देखकर देवजात का मन धैर्य्यरहित हो हाथ से जाता रहे। स्वरूप देखने से परमेश्वर की शक्ति स्मरण होती थी और यही ज्ञात होता था कि उस रचयिता ने इस लावण्य-पुत्तलिका को स्वकर-कमलों से विरचित किया है। नख से शिख पर्य्यन्त सिवाय सद्गुण के कोई अवगुण दिखलाई नहीं देता था। ऐसी कोमलाङ्गी को यदि अबिलाइनो हक्का बक्का खड़ा देखा किया और कतिपय क्षण के आनन्द के लिये सदैव की उद्विग्नता मोल ली तो कोई आश्चर्य्य की बात नहीं! निदान कुछ काल के उपरान्त वह कर्कश स्वर से बोल उठा "शपथ है परमेश्वर की, रोज़ाबिला तेरी सुन्दरता अद्भुत और अलौकिक है, वलीरिया भी तुझसे अधिक सुन्दर न थी।" यह कहकर उसने रोजाबिला के कपोलों का एक बार चुम्बन किया! रोजाबिला भय से काँप उठी और कहने लगी "ऐ भयंकर व्यक्ति तू मेरे समक्ष से अन्तर्हित हो, परमेश्वर केलिये चला जा,।

अबिलाइनो—हाय! रोज़ाबिला तू इतनी सुन्दर क्यों है

और मैं—क्यों रोजाबिला तू जानती है कि किसने तेरे कपोलों का चुम्बन किया ? जा अपने पितृव्य महाशय से कह दे कि वह अबिलाइनों बाँका था ।

यह कहकर वह कुञ्ज से झपटकर निकल गया ।

सप्तम परिच्छेद ।

अबिलाइनो ने बड़ी बुद्धिमानी की कि वहाँ से तत्काल भाग खड़ा हुआ, क्योंकि उसके चले जाने के कुछ देर बाद बहुत से लोग दैवात् टहलते हुए उधर आये, और माटियो का शव और रोज़ाबिला को भय से त्रस्त, पीतवर्ण, काँपती, देखकर आश्चर्य्य करने लगे । बात की बात में वहाँ एक भीड़ एकत्रित होगई और प्रतिक्षण अधिक होने लगी । जो मनुष्य आता वह उस वृत्तान्त को श्रवण करना चाहता, और रोज़ाबिला को भी प्रत्येक पुरुष के समादर केलिये सम्पूर्ण समाचार बार २ दुहराना पड़ता । कुछ लोग वहाँ महाराज के पार्श्ववर्तियों में से भी उपस्थित थे, जो लपककर उसके सहचरों को बुला लाये । रोज़ाबिला के चढ़ने की नौका तो प्रस्तुत थी ही, वह तत्काल उसपर चढ़कर अपने पितृव्य के प्रासाद में प्रविष्ट हुई ।

अधिकारियों ने आज्ञा दी कि प्रत्येक नौका जहाँ की तहाँ रहे और जब तक उसका निरीक्षण न हो ले वहाँ से न हटने पाये । इसके अतिरिक्त ज्यों ही पहले पहल माटियो का शव

वहां पाया गया, उपवन का द्वार बन्द करा दिया गया, और जितने लोग उसमें उपस्थित थे वह पहचान पहचान कर जाने पाये, परन्तु अबिलाइनो का चिन्ह तक हस्तगत न हुआ।

इस अद्भुत घटना का समाचार वेनिस भर में अति शीघ्र फैलगया और अबिलाइनो के विषय में-जिसका नाम रोजाविलाने भली भांति अपने हृदय पत्र पर लिख लिया था और सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करके जिसके नाम को प्रख्याति प्रदान की थी-प्रत्येक पुरुष को आश्चर्य था और सब को उसके देखने का अनुराग होगया था। जिसे देखिये वह रोजाविला की दशा पर दुःख प्रकाश करता और कहता कि उस बेचारी के हृदय पर उस समय क्या बीता होगा, और उस आततायी पर धिक्कार शब्द का प्रयोग करता, जिसने उस को मार डालने के लिये मार्टियो को सन्नद्ध किया था। प्रत्येक व्यक्ति उन समस्त क्रमरहित बातों का क्रम मिलाने के लिये एक न एक कल्पित कारण सोच लेता, चाहे वह कैसा ही अमूलक क्यों न हो। जिस पुरुषने इस समाचार को सुना, अपने अन्तरङ्गों को कह सुनाया और जिसने कहा उसने अपनी ओर से दो एक बातें और जोड़ कर मिला दीं, यहां तक कि बढ़ते बढ़ते वह एक पूरा उपाख्यान हो गया, जिसका नाम सुन्दरता का प्रभाव निर्विवाद रख सकते हैं क्योंकि स्त्रियों और पुरुषों ने यह बात परस्पर निश्चित कर ली थी कि अबिलाइनो ने रोजाविलाको अवश्य मारडाला होता पर उसकी अलौकिक सुन्दरता के कारण उसका हाथ न उठ सका। उसने रोजाविला के जीवन की यद्यपि रक्षा की थी तथापि लोगों को भय था कि मुनालडश्चीका राजकुमार जिसके साथ रोजाविलाका विवाह निर्धारित हुआ था, और जो नेपल्सका एक बड़ा धनवान और

विख्यात मान्य व्यक्ति था इस बात को सुनकर प्रसन्न न होगा। महाराज कुछ समय से अपनी भ्रातृजा के पाणिपीड़न की वार्त्ता गुप्त रीति से इस राजकुमार के साथ कर रहे थे और अब वह बहुत शीघ्र वेनिस में आने वाला था। उसके आने का कारण नृपति के इतना छिपाने पर भी सब लोगों को विदित हो गया था। केवल एक रोजाविला जिसने उस राजकुमार का पहले कभी स्वरूप भी न देखा था इस बात से अनभिज्ञ थी, वह यह भी नहीं समझ सकती थी कि उसके आने का समाचार श्रवण कर प्रत्येक पुरुष को इतनी उत्सुकता क्यों हो गई है॥

अब तक तो लोग रोजाँविलाके विरुद्ध कोई बात न कहते थे परन्तु अन्ततः युवतियों के अन्तःकरण में ईर्षा का प्रादुर्भाव हुआ कि वह अपनी सुन्दरता के कारण अबिलाइनो के कौशल से क्यों निर्विघ्न निकल आई। अविलाइनो ने रोजाविला का जो एक बार चुम्बन कर लिया था, उससे उनको अपने आन्तरिक विकारके निकालने का पूर्ण अवसर हस्त गत हुआ। दो तीन स्त्रियां एक ठौर एकत्रित होतीं, तो परस्पर यही चर्चा करतीं, एक कहती "क्यों बहन! अबिलाइनो ने रोजाविला के साथ उपकार तो बड़ा किया, न जाने उसने भी उसके प्रतिकार में उसका सम्मान कहां तक किया होगा"। दूसरी बोलती "सच कहती हो बहन, मैं भी अनुमान करती हूँ कि वह पुरुष कुछ मूर्ख न था कि ऐसी दशा में जब कि एक किशोरवयस्का सुन्दर स्त्री जिसके जीवन की उसने रक्षा की, एकाकी समीप विद्यमान हो और वह एकवार चुम्बन करके चला जाय"। तीसरी अपना महत्व दिखलाने के लिये बोलती "अच्छा जी हम को यह उचित नहीं कि किसीके विषय में कुत्सित बातें मुख से बाहर निकालें, परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि

अविलाइनो जैसे लोग ऐसे सद्व्यक्ति नहीं होते, और यह पहले ही बार है कि मैंने एक बांके छैले को सभ्य सुना।" संक्षिप्त यह कि वेनिस के निठल्ले लोगों, झूठी और निर्मूल बातों के वक्ताओं ने, रोजाबिला और अविलाइनो का यहां तक चबाव किया कि महाराज की भ्रातृजा संसार भर में "बांके की पत्नी के निकृष्ट नाम से प्रख्यात हो गई"।

परन्तु किसी मनुष्य को इस बात की इतनी चिन्ता न थी जितनी कि नरपति अण्ड्रियास को, वे यद्यपि भले थे, पर ऐसे अयोग्य लांछन को कब स्वीकार कर सकते थे। उन्हों ने तत्काल आज्ञा दे दी कि जिस मनुष्य के स्वरूप से बद चलनी अथवा दुराचरण की आशंका पाई जाय उसका निरीक्षण पूर्णतया हो। इसके अतिरिक्त उन्होने रात्रि के भ्रमण करने वालों की संख्या बढ़ा दी और चारो ओर गुप्तचरों और गूढ़ पुरुषों को नियत किये कि वह जैसे हो सके अविलाइनो का पता लगायें। परन्तु यह सम्पूर्ण युक्तियां निष्फल थीं क्योंकि जिस स्थान पर अविलाइनो रहता था वहां वायु का संचार भी कठिनता से होता था और पक्षी पर्य्यन्त का प्रवेश भी एक प्रकार से असंभव था।

अष्टम परिच्छेद।

सामान्यतः वेनिस के लोग तो परस्पर इस रीति से चर्चा करते थे जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, परन्तु अब उस पुरुष का वृत्तान्त सुनिये जिसने माटियो को रोजाबिला का संहार करने के लिये सन्नद्ध किया था। यह परोजी नामक वेनिस का प्रथम श्रेणी का एक उच्च वंशोद्भव

था । ज्योंही माटियो के मारे जाने और रोजाबिलाके जीवित बचजाने का समाचार कर्णगत हुआ । वह अपने मन में अत्यन्त आकुल हुआ कि एं यह क्या हुआ । मारे व्यग्रता के वह अपने आयतन में टहलने और स्वगत यों कहने लगा " परमेश्वर का कोप उस मंदभाग्य की अज्ञानता पर, परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि यह दुर्घटना किस प्रकार संघटित हुई । किसी ने मेरा भेद जान तो नहीं लिया ? मैं पूर्ण अभिज्ञ हूं कि विरैनो रोजाबिला पर मोहित है अतएव क्या आश्चर्य्य है कि उसीने इस दुष्टात्मा अबिलाइनो को मेरे कार्य्य में विघ्न डालने के लिये माटियो के पीछे लगा दिया हो । यदि कहीं महाराज ने इस विषय की छानबीन की कि उनकी भ्रातृजा के प्राणहरण के लिये माटियो को किसने भेजा था तो सिवाय परोजी के जिसके साथ रोजाबिलाने विवाह करना अस्वीकार किया और जिससे अनड्रिश्रास आन्तरिक विरोध रखता है और किस पर संशय होगा । और जहां एकबार पता लगा और अंड्रियास पर तुम्हारी कूटनीति प्रगट हो गई और उसे ज्ञात होगया कि तुमने अपने को बहुत से दुष्कर्मियों का अग्रगण्य बना रक्खा है—क्योंकि ऐसे छोकरों को जो मारसे बचने के लिये अपनी माता पिताके घर में आग लगा दें सिवाय दुष्कर्मी के और क्या कह सकते हैं—अरे परोजी जिस समय ए सब बातें अंड्रिआस पर प्रगट हो जायंगी तो—" ।

वह अपने मन में इतना ही विचार करने पाया था कि अकस्मात् मिमो, फलीरी, और काएटे राइनो, परोजी के अष्ट-प्रहरी सहचर आन पहुंचे । ए लोग भी उसके समान वेनिस के प्रथम श्रेणीके उच्चकुलजात, अकर्म्मा, व्यर्थव्ययी और विषयी थे । इन लोगों को वेनिस के सम्पूर्ण अत्यन्त ब्याज लेने वाले महाजन भली भांति जानते थे, जितना कि इनका व्यवसाय था

उससे अधिक ए ऋणी थे। परोजी के आयतन में पांव रखते ही मिमो (जिसकी मुखाकृति से विषयी होने का चिह्न—जिस में उसने अब तक अपना जीवन व्यतीत किया था-प्रगट था) बोला “ क्यों परोजी क्या बात है, मुझे आश्चर्य्य है, परमेश्वर के लिये सच बताओ कि क्या यह समाचार सत्य है, कि तुमने माटियो को महाराज की भ्रातृजा के विनाश के लिये तानात किया था ? ” ॥

“ ऐं मैंने ? ” यह कह कर परोजीने तत्काल उसकी ओर पीठ फेर ली इसलिये कि वे लोग उसके मुखको जिस पर उस समय इस बात के सुनतेही मलीनता सी छा गई थी-न देखें, “ भला तुमारे हृदय में यह बात क्यों कर आई? बस जान पड़ा कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है ।

मिमो—“ जीवन की शपथ, जो कुछ मैंने सुना उसे कहता हूँ, चाहो फलीरी से पूछ देखो वह कुछ अधिक वर्णन कर सकेंगे ” ॥

फलीरी—“ ईश्वर की शपथ करके कहता हूँ कि यह बात सत्य है कि लोमेलाइनो ने महाराज को पूर्ण विश्वास दिलाया है कि सिवाय तुम्हारे दूसरे ने माटियो को रोजाबिलाके घात के लिये नहीं भेजा ” ।

परोजी-“ और मैं फिर भी तुमसे कहता हूँ कि लोमेलाइनो सर्वथा असत्य कथन करता है ” ॥

कान्टेराइनो—“ जो हो, पर तुम अपनी ओर से सावधान रहो क्योंकि अंड्रियास बड़ा बेढब मनुष्य है ” ।

फलीरी—“ बेढब ? मैं तुमसे कहता हूँ कि उस के समान संसार में दूसरा उलूका पट्ठा नहीं, बीरता तो भला उसमें कुछ है भी परन्तु बुद्धि तो नाम मात्र को नहीं है ” ।

कान्टेराइनों—“ और मैं कहता हूँ कि अंड्रियास सिंह

समान पराक्रमशाली और लोमड़ी सदृश कूटनीतिक है ।

फलीरी-" राम ! राम ! ! आप का कहां ध्यान है, यदि उसके तीनों सुचतुर मन्त्रप्रदाता न हों तो उसका एक कार्य भी ठीक न उतरे । परमेश्वर की मार उनके शिर पर, यदि पेलोमान फ्रोन, कोनारी और लोमेलाइनो उससे पृथक कर लिये जायं तो उसकी वही दशा होगी जो उस अल्पज्ञ छात्र की होती है जो कि परीक्षा देने के समय अपना पाठ भूल गया हो " ॥

परोजी—" फलीरी सच कहते हैं " ।

मिमो—निस्सन्देह ! निस्सन्देह ! ! " ।

फलीरी—" इस पर विशेषता यह कि अनड्रियास अब ऐसा मदान्ध हो गया है जैसा वह दरिद्र जन होता है, जिसके हाथ कहीं से दैवात् धन लग गया हो और जो पहले पहल बहु मूल्य परिच्छद धारण करके निकला हो । वास्तव में आजकल उसका अभिमान मित से अधिक हो गया है, देखते नहीं कि प्रतिदिन वह अपने कितने चाकर और सहचर बढ़ाता जाता है । "

मिमो—" यह तो प्रगट ही है " ।

कानूटेराइनो—"इसके अतिरिक्त अपना प्रताप कितना फैला रहा है । वेनिस में श्रेष्ठ कुलजात, उच्चपदस्थ, जितने राजकीय चर हैं, सब, जिस नाच वह नचाता है नाचते हैं और उसकी इच्छा और आज्ञा के अनुसार ऐसा चलते हैं जैसे दारुयोषित सूत्रधार के संकेतानुसार कार्य्य करता है " !

परोजी—" और फिर भी उस को सब लोग देवता समान मानते हैं " ।

मिमो—' बस यही तो चमत्कार है " ।

फलीरी-" परन्तु यदि अति शीघ्र उसके ए सम्पूर्ण घमण्ड किरकिरी न हो जावें तो फिर मेरी बात का विश्वास न करना ।"

कांटेराइनो-"इसमें तो सन्देह नहीं, इस समय उचित तो यह था कि हम लोग कमर कसकर तैयार हो जाते, परन्तु देखो कि हम लोग इसका क्या प्रतिकार कर रहे हैं ? अपना समय हौलियों में नष्ट करते हैं, मद्पान कर मारे मारे फिरते हैं जूआ खेलते हैं, और अपने को ऋण ग्रहण के ऐसे बड़े समुद्र में डालते हैं जिसके भीतर अच्छा से अच्छा पैराक मग्न हो जावे। हमको चाहिये कि दृढ़ होकर प्रयत्न करें, लोगों को अपना सहकारी बनावें, और तन मन से अपने उद्योग में परि-श्रम करें, फिर देखें कि हमारे दिन क्यों कर नहीं फिरते यदि न फिरें तो स्मरण रक्खो कि इस निर्लज्जता और अकीर्ति कर जीवन से तो मृत्यु उत्तम है"।

मिमो-"अब मेरी सुनो कि इधर छ महीने से मेरे महा-जन प्रत्येक समय मेरा कपाट खटखटाया करते हैं, प्रातःसमय निद्रा पूरी भी नहीं होने पाती कि वे आकर जगा देते हैं रातको भी उन्हीं के कोलाहल और ललकार से थक कर निद्रा आजाती है"।

परोजी-और मैं अपना हाल तुमसे क्या बताऊं कि मुझ पर क्या बीतती है।

फलीरी-"यदि हमने अपव्यय न किया होता तो आज अपने प्रासाद में सुखपूर्वक बैठे होते और—परन्तु अब जो कुछ हमारी दशा है उसे—"।

परोजी-"बस अब जो कुछ दशा है उसी की चर्चा करो, भला फलीरी! इस समय उपदेश करने की कौन आवश्यकता है,।

कारटेराइनो-"इनका क्या सभी पुराने पापियों का यही ढंग है कि जब अपराध करने का अवसर नही रहता और न

बस चलता तब वे अपने पिछले अपराधों पर रोते हैं और बुरी बातों से घृणा और उनका परित्याग करने के लिये बहुत कुछ कोलाहल मचाते हैं। अपने विषय में तो यह कहता हूं कि मैं भलाई और बुद्धिमानी के साधारण मार्गों को छोड़ और इस मार्ग को स्वीकार कर बहुत प्रसन्न और तुष्ट हूं। इससे मुझे अवगत होता है कि मैं उन साधारण लोगों मे नहीं हूं जो नाक भौं सिकोड़े रोनी सूरत बनाये कोने में बैठे रहते हैं और कोई नवीन बात सुन कर कांप उठते हैं। मेरे भाग्य में विषय संभोग लिखा है और मैं इस लिपि को प्रत्यक्षर पूर्ण करूंगा, बरन सच पूछो तो यदि मेरे जैसे लोग कभी कभी न उपजते रहैं, तो संसार पूर्णतया सो जाय। हमलोग पुरानी बातों को उलट पुलट कर उसको जगाते हैं, मनुष्य जाति को उभारते हैं कि निज कच्छप सदृश गति को वेगवान करे। बहुतसे अकर्म्मा पुरुषों के सामने एक ऐसी बात उपस्थित कर देते हैं, जिसकी मीमांसा लाखों तरह से वे करते हैं पर उसको हल नहीं कर सकते। बहुत से लोगों के हृदय में नव्य बिचारों को भी सन्निवेशित कर देते हैं। संक्षेप यह कि हमलोग संसार के लिये उतने ही उपयोगी हैं जितना कि आंधी जो वायु की मलीन, रोगजनक, तथा हानिकर वस्तुओं को उड़ा ले जाती है॥"

फलीरी-"ओहो कैसी प्रामाणिक बातें हैं! मेरी समझ में तो काण्टेराइनों रूम की बड़ी हानि हुई कि तुम्हारा नाम उसके सुवक्ताओं की तालिका में संयोजित न था, परन्तु खेद की बात यह है कि जितना तुम बक गये उसमे सिवाय चिकने चुपड़े शब्दों के एक बात भी काम की न थी—अब सुनो, इस बीच में जब कि तुमने व्यर्थ बककर अपने मित्रोंका मस्तिष्क शून्य कर दिया, फलीरी ने कुछ कर रक्खा है, पादरी गान्जे-

गा वेनिस के शासकों से अत्यंत रुष्ट हैं । न जाने अनूड्रिआसने उसके साथ क्या बुराई की है, कि वह उसका बैरी हो गया है, संक्षेप यह कि गानूज़ेगा अब हमारा सहकारी और सहायक है "।

परोजी (आश्चर्य्य और हर्ष के साथ) फलीरी ! तुम्हारी बुद्धि ठिकाने है अथवा नहीं ? अजी पादरी गानूज़ेंगा ?

फलीरी-हमारा सहकारी है हमारा—तन मनसे । सच पूछो तो पहले पहल मैंने उसके सामने अपने‌ को बहुत कुछ सत्पुरुष बनाया, उस पर प्रगट किया कि हमलोग इतने बड़े स्वदेश हितैषी हैं, हमारे ऐसे उत्तम बिचार हैं, हम यों स्वतन्त्रता चाहते हैं और इसी प्रकारकी और बहुतसी बातें कीं निदान कथनोपकथनसे यह ज्ञात होगया कि गानूज़ेगा कपटी है, और इसलिये वह हमारे गँवका है ।

कानूटेराईनो-(फलीरी का हाथ अपने हाथ में लेकर) धन्य मेरे सुयोग्य मित्र ! देखो तो परमेश्वर क्या करता है, परंतु अब मेरे बोलने की बारी है । जबसे मैं तुमलोगों से बिदा होकर गया हूँ उस समय से अकर्म्मण्य बना बैठा नहीं रहा, सच पूछो तो अब तक मैंने किसीको फंसाया नहीं है, परन्तु मेरे वशमें एक ऐसा जाल आ गया है जिससे दृढ़ विश्वास है कि वेनिसके आधे लोगोंको फांस रक्खूंगा, शशिवदना उलिम्पिया से तो आप लोग अभिज्ञ होंगे ? ।

परोज़ी-हममें कौन ऐसा है जिसके पास वेनिसकी सम्पूर्ण सुन्दर स्त्रियों की तालिका न हो ? फिर भला हम लोग शिरो लिखितही को भूल सकते हैं ।

फलीरी-" उलिम्पिया और रोज़ाबिला तो वेनिस का प्राण हैं, हमारे यहां के युवक जन उन पर न्यौछावर होने को मरते हैं " ॥

कान्टेराइनो–"उलिम्पिया मेरी है।"

फलीरी–"क्यों कर ?"

परोजी–"उलिम्पिया ?"

कान्टेराइनो–"ऐं कुशल तो है तुमलोग तो कुछ ऐसे चमत्कृत और चकित होगये कि मानों मैंने आकाश के टूट पड़ने की भविष्यत् वाणी कही है ? मैं तुमसे कहता न हूँ कि उलिम्पिया का मन मेरे हस्तगत है और मैं उसके सम्पूर्ण भेदों से अभिज्ञ हूं, मेरे और उसके जो सम्बन्ध हैं उनका प्रच्छन्न रहना आवश्यक है, परन्तु विश्वास करो कि जो मेरी आकांक्षा है वही उसकी है और यह तो तुमलोग भली भांति जानते हो कि वह आधे वेनिसको अपनी वंशीकी ध्वनि पर जो नाच चाहे नचा सकती है"।

परोजी–"कान्टेराइनो! तुम हम सबके गुरु हो।"

कान्टेराइनो–"और तुम लोगों ने अनुमान भी न किया होगा कि कैसा बलवान सहायक और सपक्षी तुम्हारे लिये मैं खोज रहा था"।

परोजी–"भाई तुम्हारी हितैषिता सुनकर मैं मनही मन लज्जित हो रहा हूं क्योंकि आजतक मुझसे कुछ भी न बन आया। निस्सन्देह इतना मैं बचाव के लिये किसी प्रकार कह सकता हूं कि यदि माटियो मेरी अभिलाषानुसार रोजाबिला के बध करने में कृतकार्य्य हुआ होता तो महाराज के पास से एक बड़ा सम्बन्ध जिससे वेनिस के बड़े बड़े लोग उसकी शासन प्रणालीसे प्रसन्न हैं जाता रहता, जब रोजाबिला शेष न रहती तो अंड्रिआस की कोई बात तक न पूछता। वेनिस के बड़े बड़े वंश नृपति महाशय की मित्रता की थोड़ी भी कामना भी न करते यदि रोजाबिलाके द्वारा उनके साथ सम्बन्ध दृढ़

करने की आशा जाती रहती। रोजाबिला एक दिन महाराज की उत्तराधिकारिणी होगी।"

मिमो–"महाशयो! मुझसे तो इतना ही हो सकता है कि मुद्रा से तुम्हारी सहायता करूं मेरे बूढ़े अयोग्य पितृव्य के पास लक्षों मुद्रायें हैं और उनके धन का मैं ही उत्तराधिकारी हूं। जिस दिन सङ्केत करूं वह ठिकाने लगा दिया जाय"।

फलीरी–"तुमने इतने ही दिन उनको व्यर्थ जीवित रहने दिया।"

मिमो–"भाई क्या कहूं कामना करता हूं और करके रह जाता हूँ। तुम लोगों को विश्वास न होगा परन्तु मित्रो! किसी समय मैं ऐसा भीरु हो जाता हूँ कि मुझे ईश्वरका भय भी घेर लेता है।"

काण्टेराइनो–"सच कहो तब तो तुम मेरी अनुमति ग्रहण करो और किसी देवालय में जाकर बैठो!"

मिमो–"हां निस्संदेह मैं इसी योग्य हूं।

फलीरी–"पहिले हमको चाहिये कि अपने प्राचीन साथियों अर्थात् माटियो के सहकारियों की खोज करें। परन्तु कठिनता तो यह है कि आज तक हमलोग उनके अधिपति द्वारा संपूर्ण कार्य्यों को सिद्ध करते रहे इस कारण हमको ज्ञात नहीं कि वे लोग कहां मिलेंगे।

परोज़ी–ज्योंही वे लोग मिलें पहले उनसे महाराजके तीनों मंत्रियों को ठिकाने लगवाना चाहिये।

काण्टेराइनो–बात तो अच्छी है यदि बन आये। अच्छा महाशयो मुख्य बातकी विवेचना तो होचुकी अर्थात् या तो हम लोग राज्य को उलट पुलट कर अपने ऋणों से मुक्त होंगे अथवा इस उद्योग के पीछे अपना जीवन समाप्त करेंगे, अभिप्राय यह कि दोनों दशाओं में हम दुःखसे छूटेंगे। आवश्यकता

हमको पर्वत के उच्च शिखर पर खींच कर लाई है अतएव यहां से बचने के लिये या तो हम कोई अपूर्व साहस का कार्य्य करेंगे, अथवा किसी घोर गर्त्त के भीतर गिर कर सदैव के लिये अपयश से निवृत्त होंगे। अब दूसरी बात यह है कि हमारे आवश्यक व्यय क्योंकर चलेंगे और लोग क्यों कर हमारे सहयोगी होंगे। इस प्रयोजन के लिये हम को उचित है कि वेनिस में जितनी सुन्दरी स्त्रियां हैं उन्हें जिस युक्ति से सम्भव हो अपना सहायक बनायें, क्योंकि जिस बात को हम अपने उद्योगों से, बांके लोग अपने कटारों से, और धनवान अपने धन से न कर सकेंगे उसे यह कुरङ्गाक्षियां एक दृष्टि से कर लेंगी। जहां शूली का भय और धर्मनेता लोगोंका उपदेश कोई प्रभाव नहीं उत्पादन कर सकता, वहां प्रायः एक चुम्बन और संयोग का आशाप्रदान अद्भुत कौतुक दिखलाता है। इनकी मोहनी मन्त्र पूरित आँखें बड़े २ सयानों को अपना चाकर बना लेती हैं और उनका एक बार का चुम्बन बहुत काल के ठीक किये हुये सिद्धान्तों को मिटा देता है। परंतु यदि तुम इन स्त्रियों पर अधिकार लाभ करने में कृतकार्य्य न हो अथवा तुमको इस बात का भय हो कि जो जाल तुमने दूसरों के लिये बिछाया है उस में स्वयं फंसजावोगे तो ऐसी दशा में तुम्हें उचित है कि धर्म्मयाजक लोगों पर अपना अधिकार जमाओ। उनकी स्तुति करो और उनको विश्वास दिलाओ कि उस समय वेही सबसे बड़े पदों पर नियुक्त होंगे, विश्वास रक्खो कि ऐसा करने से वे तत्काल वंचित होकर तुम्हारे कपट में पड़ जायंगे। इन छलियों को वेनिस के स्त्री और पुरुष, धनाढ्य और कंगाल, नृपति और पदाति सभों के हृदय पर ऐसा अधिकार प्राप्त है कि जिस ओर चाहें उनकी नकेल फेर सकते हैं। इस रीति से बहुत से लोग हमारे सहायक हो

जावेंगे और उनके चित्त को भी प्रत्येक प्रकार का समाधान प्राप्त रहेगा क्योंकि इन धर्म्मोपजीवी लोगों के आशीर्व्वाद और शाप का सत्कार मुद्रा से बढ़कर किया जाता है। बस अब सबलोग प्रयत्न करने पर तत्पर हो जावो। म प्रस्थान करता हूँ, प्रणाम!

नवम परिच्छेद।

पाठको! अब यहां फिर अबिलाइनो और उसके साथियों की चर्चा की जाती है। अबिलाइनों ने ज्योंही माटियो के वध करने से जिसका वर्णन वेनिसके प्रत्येक व्यक्ति की जिह्वा पर था अवकाश पाया, अपना परिच्छद इतना शीघ्र और इस उत्तमता के साथ बदल डाला कि किसी को थोड़ा भी संदेह न होता था कि उसीने माटियो को मारा है. वह उपवन से बेरोक टोक निकल आया और अपने पीछे कोई ऐसा चिन्ह न छोड़ा जिससे उसका पता लग सके। संध्या कालके समीप वह सिन्थिया के घर पर पहुंचा और कुण्डी हिलाई। सिन्थियाने आकर कपाट खोला और अवि-लाइनो गृह में प्रविष्ट हुआ। पहुँचते ही उसने सिन्थिया से एक ऐसी भयानक वाणी से जिसे सुन कर वह कांप उठी पूछा कि और लोग कहां हैं। सिन्थिया ने ज्यों त्यों उत्तर दिया "वह लोग दिनही से सो रहे हैं कदाचित् आज किसी विशेष कार्य के लिये जानेवाले हैं।" अविलाइनो एक कुर्सी पर बैठ कर अपने विचारों में ऐसा मग्न हो गया कि उसे किसी बात की सुधि न रही।

सिन्थिया-" क्यों अविलाइनो तुम सदा ऐसा रोना स्वरूप क्यों बनाये रहते हो (समीप जाकर) इसी से तो तुम इतने कुरूप ज्ञात होते हो। परमेश्वर के लिये प्रत्येक समय नाक भौ न चढ़ाये रहा करो क्योंकि इससे तुम्हारी आननाकृति जैसी कि परमेश्वर ने बनायी है उसकी अपेक्षा और भी बुरी ज्ञात होती है।"

अविलाइनोने कुछ उत्तर न दिया।

सिंथिया- सच पूछो तो तुम को अवलोकन कर मनुष्य न भी डरता हो तो डर जाय। अच्छा अविलाइनो आओ अब हम तुम हिलमिल कर रहें, अब मैं तुम को तुच्छ नहीं समझती हूँ और न तुम्हारे स्वरूप से घृणा करती हूँ, मैं नहीं जानती इस के अतिरिक्त कि ॥"

वह आगे कहने नहीं पाई थी कि अकस्मात् अविलाइनो ऐसा चिल्ला कर बोला जैसे मृगराज गरजता है " जाव उन लोगों को जगा दो!।"

सिन्थिया-" उन लोगों को? दूर करो, उन दुष्टात्माओं को सोने भी दो, क्या तुम मेरे साथ अकेले रहते भय-भीत होते हो? ऐ है कहीं मुझे भी तो तुमने अपने समान कुरूप नहीं समझ लिया है, सच कहो, अविलाइनो तनिक मेरी ओर देखो॥"

सिन्थियाने यह बात अपने विषय में कुछ अनुचित नहीं कही क्योंकि उसका स्वरूप किसी प्रकार हीन न था। उसकी आंखें रसीली और चंचल थीं, उसके अहि तुल्य केशजाल हृदय पर लहरा रहे थे और अरुणाधरों की लालिमा और नवीनताने पाटलकुसुम को भी पराजित कर रक्खा था। उसने अपने ओष्ठ चुम्बन कराने के अभिप्राय से अविलाइनो की ओर झुकाये परन्तु इसको अबतक रोजाबिला के पुनीत चुम्बन का स्वाद

स्मरण था इस लिये वह नहीं चाहता था कि अपने ओष्ठों में दूसरे के चुम्बन की छूत लगाये। अतएव वह तत्काल अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ, और सिन्थिया का हाथ निज स्कन्धों से धीरता के साथ हटा कर कहने लगा "मेरी अच्छी सिन्थिया उन लोगों को जाकर जगा दो, मुझे इसी समय उनसे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।" सिन्थिया जाने में रुकी तब उसने डांट कर कहा 'बस जाव।' सिन्थिया चुपचाप चली गई परन्तु द्वार पर पहुँच कर एक क्षण ठहरी और उंगली से अविलाइनो को धमकाया। अविलाइनों ने कुछ ध्यान न दिया और आयतन में धीरे धीरे टहलने लगा। उसका शिर स्कन्धों पर ढलका हुआ था और दोनों हाथ वक्ष-स्थल पर थे। सिन्थिया के जाने पर वह अपने मन में यों कहने लगा "धन्यवाद है कि पहली युक्ति ठीक उतरी और एक दुष्ट संसार में न्यून हुआ। मैंने उसका वधकर कोई पाप नहीं किया बरन एक बड़ा कर्त्तव्य पालन किया। ऐ! उत्कृष्ट और न्याय प्रिय जगदीश तू मेरी सहायता कर क्योंकि मेरे सामने एक अति दृढ़ और कठिन कार्य्य है (दुःख पूर्ण निश्वास भर कर) यदि मेरा यह कार्य्य सिद्ध हुआ और इसके पुरस्कार में रोजाबिला मुझको मिली! ऐ रोजाबिला? भला महाराज की भ्रातृजा अकिञ्चन अविलाइनो को स्वीकार करेगी? हा हन्त! यह क्या दुर्विचार मेरे जी में समाया है, मेरी यह अभिलाषा कभी पूरी नहीं हो सकती। इसमें संदेह नहीं कि मुझसा सिड़ी दूसरा न होगा जो एक ही बार अवलोकनसे मोहित हो गया। पर रोजाबिला ऐसी ही स्वरूपवती है जिसे देखने के साथ ही मनुष्य आसक्त होजाय। रोजाबिला और वलीरिया ऐसी दो स्त्रियां जिसे प्यार करें उसके भाग्य का क्या पूछना। अच्छा, यद्यपि कि इस अर्थ का लाभ करना

असम्भव है पर इसके लिये प्रयत्न करना कितनी बड़ी बात है। इसके अतिरिक्त और नहीं तो ऐसे बिचारों से कुछ देर तक मेरा हृदय आनन्दित होजाया करेगा, और (ऊँचीसाँसें भरकर) प्रकट है कि यदि मुझ मन्दभाग्य का जी थोड़ी देर केलिये भी बहल जाय तो बहुत उत्तम है। हाय! यदि संसार जानता होता कि मैं किन कार्य्यों को प्रसन्नता से करना चाहता हूं तो वह निस्सन्देह मुझ पर दयालु होता और मेरा सत्कार करता।" इस बीच सिन्थिया पलट आयी और उसके पीछे चारों डाकू जमुहाइयां लेते बड़बड़ाते और नींद में उन्मत्त से झूमते आये।

अबिलाइनो-"आवो आवो मित्रो! शीघ्र अपने अपने चित्त को ठिकाने करो।" इसके पहले कि मैं तुमसे कुछ कहूं यह ठीक करलो कि तुम जाग्रत् अवस्था में हो क्योंकि जो कुछ मैं कहनेवाला हूं वह एक ऐसी अद्भुत वार्त्ता है कि तुम्हें स्वप्न में भी उसका शीघ्र विश्वास न होगा।

यह सुनकर उन लोगों ने असन्तोष और लापरवाही के साथ उसकी बात सुनने के लिये ध्यान दिया और कहा "क्यों मित्र क्या बात है" टामिसोने लेटकर कहा।

अबिलाइनो-केवल इतना ही कि हमारे धर्मात्मा, सच्चे, और वीर माटियो को किसी ने मारडाला।

"ऐं! मार डाला? प्रत्येक पुरुष कह उठा और इस श्रुति कटु समाचार लाने वाले को डरकर देखने लगा। सिन्थिया चिल्ला उठी और छाती पीट कर निस्तब्ध और मूर्छित हो चौकी पर बैठ गयी। कुछ काल पर्य्यंत सब लोग चुप रहे अन्त को टामिसो ने फिर पूछा 'मार डाला? किसने?"

बालजर—"कहाँ?"

पेट्राइनो—"क्या आज मध्याम्ह समय?"

अबिलाइनो–"डोलाबेला के उपवन में, जहां लोगोंने उसे महाराज की भ्रातृजा के चरणों के सन्निकट मृतक और रुधिर से आर्द्र पाया। मैं नहीं कह सकता कि उसे किसने स्वयं रोजा बिलाने अथवा उसके अनुरक्तों में से किसीने मारा।"

सिन्थिया-(रोरो कर) "हाय! हाय!! बेचारा माटियो।"

अबिलाइनो–"कल्ह इसी समय तुमलोग उसका मृत शरीर शूली पर लटकता देखोगे।

पेट्राइनो– "ऐं? क्या किसीने उसको पहचान लिया?"

अबिलाइनो–"हां, और क्या, विश्वास मानो सबलोग अभिज्ञ होगये कि उसकी जीवन वृत्ति क्या थी।"

सिन्थिया–"हाय! शूलीपर, बेचारा माटियो।"

टामिसो–"भाई यह विचित्र वार्त्ता है।"

बालजर–"परमेश्वर का उस मंदभाग्य पर कोप था नहीं तो भला किसे ध्यान था वा हुआ होगा कि आज ऐसी आपदा का मुख अवलोकन करना होगा।"

अबिलाइनो–"तो तुमलो सर्वथा अचेत से हो गये।"

[illegible]–"भय और आश्चर्यने मेरा कण्ठदेश ऐसा दबाया है कि मेरी सम्पूर्ण इन्द्रियां चेतनाहीन हो रही हैं।"

अबिलाइनो–"सच कहो! भाई! जीवन की शपथ है, मैं तो इस समाचार को श्रवण कर बहुत हँसा और कहने लगा प्रिय मित्र माटियो मेरे जान तो आपको आनन्दित होना चाहिये क्योंकि आप ठंढे ठंढे विश्राम स्थान को पहुंच गये।"

टामिसो–"क्या?"

स्ट्रूजा–"क्या तुम बहुत हँसे, भला बताओ तो यहां हँसने का कौन अवसर है।"

अबिलाइनो–"क्यों नहीं, मैं समझता हूं कि जिसे तुम

दूसरों को देने के लिये तत्पर रहते हो यदि वह तुमको प्राप्त हो तो कदापि अप्रसन्न न होगे ? मैं नहीं समझता कि तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? बतलाओ कि हमलोग अपना कार्य समाप्त करने पर करवाल प्रहार वा शूली के अतिरिक्त और किस पारितोषिक पाने की आशा कर सकते हैं, और हम स्वकार्यों का कौनसा स्मरण-चिन्ह इस लोक में छोड़ जा सकते हैं, इसके अतिरिक्त कि हमारा शव शूली पर लटकता हो और करपग शृंखलबद्ध हों ? मेरे निकट वसुन्धरा पृष्ठ पर जिस व्यक्ति ने प्रतारकता की जीविका स्वीकार कर ली हो उसे मृत्यु से कभी न भीत होना चाहिये चाहे वह किसी मान्यभिषक के कर द्वारा हो अथवा पामर वधिक के। अतएव अब इन बुरे बिचारों को दूर करके चित्तको स्वस्थ और व्यवस्थित करो।"

टामिसो-' यह कह देना तो सुगम है, परन्तु मेरे सामर्थ्य से इस समय सर्वथा बाहर है । "

पेट्राइनो-'मेरे तो दांत बज रहे हैं । '

बालजर-"परमेश्वर के लिये अबिलाइनो कुछ काल पर्य्यन्त मनुष्य गुण धारण करो, ऐसे समय में तुम्हारा परिहास असामयिक और अनुचित ज्ञात होता है । "

सिन्थिया-" हाहन्त ! बेचारा माटियो मारा गया । "

अबिलाइनो-वाह ! वाह !! ए यह क्या ? क्यों प्राणाधिके सिन्थिया तुमको दूधमुख बालक बनते लज्जा नहीं लगती ? आओ हम तुम फिर वही वार्त्तालाप प्रारंभ करें जो अभी तू इन लोगों के आगमन के प्रथम कर रही थी । आओ प्रियतमे ! मेरे समीप बैठ जाओ और मुझे स्वकलित कपोलों का चुम्बन करने दो । "

सिन्थियो-" दूर हो मूंड़ीकाटे । "

अबिलाइनो-" प्रिये ! क्या तुमने अपनी इच्छा को पलट

दिया, अच्छा, बहुत उत्तम, जब तुम्हारा जी चाहेगा तो कदाचित मेरा जो न चाहे।

बालजर–राम! राम!! क्या यही समय व्यर्थ प्रलाप करने का है। परमेश्वर के लिये इन बातों को दूसरे समय के लिये रक्खो और इस समय सोचने दो कि अब हम लोगों को क्या आचरणीय और करणीय है।

पेट्राइनो–"निस्संदेह यह अवसर परिहास करने और हँसी की बातों के कहने का नहीं है।"

भ्रूजा–"अबिलाइनो! तुम तो बड़े सुज्ञ और सुचतुर हो बताओ तो अब हम लोगों को क्या करना उचित है!"

अबिलाइनो–(कुछ कालोपरान्त) कुछ न करना चाहिये अथवा बहुत कुछ! हम लोगों को दो विषयों में से एक को अङ्गीकार करना चाहिये! अर्थात् या तो हम जहां हैं और जैसे हैं वैसे ही बने रहें अर्थात् किसी दुष्टात्मा को प्रसन्न करने के लिये,–जो हमको धन प्रदान करे और हमारी प्रशंसा करे,–हम सद्व्यक्तियों का शिरच्छेदन करें और एक न एक दिन शूली पर लटकाये जाना, कोल्हू में पीड़ित किये जाना, पोतों पर शृङ्खलबद्ध होकर आजन्म कार्य्य करना, जीते जी अग्नि में दग्ध होना, फाँसी पाना अथवा करवाल द्वारा कालकवलित बनना, अभिप्राय यह कि जैसा कुछ शासकों के बिचार में आये हृदय में स्वीकार कर लें, और जी में ठान लें, अथवा–।"

टामिसो–हां अथवा?" कहो कहो?

अबिलाइनो–"अथवा जोकुछ धन हमारे पास विद्यमान है उसे परस्पर बिभाजित कर लें, इस नगर को परित्याग कर दूसरी ठौर इससे उत्तम रीति से कालयापन करें और परमेश्वर से अपराध क्षमापन के लिये प्रयत्न करें। हम लोगों के पास इस समय इतना धन है कि हमको इस बातकी चिन्ता न होगी

कि हम क्योंकर धन अर्जन करके कालक्षेप करेंगे अतएव सम्भव है कि किसी परदेश में तुम कोई ग्राम क्रय कर लो, अथवा विविधाहार बिक्रयी बनो, अथवा कश्चित् व्यवसाय करो, अथवा संक्षेप यह कि कोई दूसरी आजीविका जिसे तुम उत्तम समझो करो, परन्तु इस अधम कर्म्म प्रतारकता से बिरक्ति ग्रहण करो। उस समय तुमको अधिकार होगा कि तुम्हारे पद के जो लोग हों उनकी दुहिताओं में से किसी एक को स्वरूपवती देख कर उसके साथ परिणय कर लो, बेटा बेटी वाले कहलाओ, सुख से खान पान करो और प्रसन्न रहो, और इन कार्य्यों द्वारा अपने पूर्वकृत कर्मोंका प्रायश्चित्तकरो।

टामिसो–"अहा! हा!! हा!!!"

अबिलाइनो–"जो कुछ तुम करोगे वही मैं भी करूँगा, यदि तुम फाँसी पावोगे अथवा कोल्हू में पीड़ित किये जावोगे, तो तुमारे साथ मेरी भी वही गति होगी अथवा यदि तुम सुजन वा सज्जन बन जाओगे तो मैं भी वहीं हो जाऊंगा। अब कहो तुम्हारी क्या सम्मति है।"

टामिसो-"तुमसा अल्पज्ञ सम्मतिदाता संसार में न होगा।"

पेट्राइनो–"हमारी अनुमति तो यह है कि कौन ऐसा असाध्य विषय अथवा कठिन बात है जिस पर विशेष विचार करने की आवश्यकता होगी।

अबिलाइनो–"मेरे निकट तो निस्संदेह बड़ी बात है।"

टामिसो–"बस अधिक बात चीतसे क्या लाभ मेरी अनुमति यह है कि जैसे हमलोग हैं वैसे बने रहें और जो वृत्ति आज तक करते आये हैं वही करें, इससे हम सहस्रों मुद्रा कमायेंगे और हमारा जीवनभी परमानन्दपूर्वक व्यतीतहोगा।"

पेट्राइनो–अच्छा कहा, यही मेरी भी सम्मति है।

टामिसो-हमलोग डाकू हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इससे क्या ? हम लोग सत्पुरुष हैं,-जो मनुष्य इसके विरुद्ध कथन करे उसे मैं शैतान के हवाले करता हूं। हां ! इस समय हम लोगों को इतनी सावधानता अवश्य करनी चाहिये, कि अभी कतिपय दिवस पर्य्यन्त घरसे बाहर पांव न रक्खें, इसलिये कि हम पर कोई आक्रमण न करे अथवा हमसे अभिज्ञ न हो जावे क्योंकि मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि इस घटना के संघटित होने के कारण महाराज के गुप्तचर हम लोगों के अनुसन्धान के लिये अवश्य छूटे होंगे। परन्तु ज्योंही यह हलचल दूर हो जाय हमको चाहिये कि पहले माटियो के नाशकको यमलोकगामी बनावें जिसमें कि दूसरे लोगों को डर हो जावे। इस पर सबोंने स्वीकृति दिखलाई और मुक्तकंठ से कहा "धन्य वीरपुङ्गव धन्य ! जीते रहो।"

पेट्राइनो-और मेरी अनुमति है कि आजसे टामिसो हम लोगों का स्वामित्व पद ग्रहण करे।

छूजा 'हां ! माटियो के स्थान पर।'

फिर सबोंने उच्चस्वर से मिलकर कहा धन्य ! धन्य !!

अविलाइनो-मैं भी इसका अनुमोदन करता हूं, अतएव अब सम्पूर्ण बातों की मीमांसा होगई।

दशम परिच्छेद।

माटियो के मारे जाने के द्वितीय दिवस डाकुओं ने अपने गृह के कपाट और फलकोंको ब्योंड़ों और शृंखलो द्वारा अत्यन्त दृढ़ता के साथ बंद किया। वह दिवस उनका अत्यन्त चिन्ता और व्यग्रता में बीता। भय

की सुन्दरता के कारण इस समज्या की शोभा थी परिहास करते, कभी नववयस्कोंके साथ जो नृत्यायतन में भांति भांति के स्वरूप भर कर आते थे बार्तालाप करते, कभी वेनिस के बिख्यात मुख्यसेनाध्यक्षों और अपने सैनिक अधिकारियों के साथ शतरंज खेलते, और कभी सब कामों को छोड़ रोजाबिलाका नृत्य देखते, अथवा चुपचाप उसका मधुरगान सुनते और मनही मन प्रसन्न होते।

नृपतिराजके तीनों एकांत मित्र और सचिव अर्थात् लोमेलाइनो, कुनारी, और पेलोमानफ्रोन, श्वेतश्मश्रु और धवल केश होने पर भी युवास्त्रियों के समूह में जामिलते प्रत्येक से परिहास और बिलास की बातें करते और अत्यन्त प्रसन्न मनसे उनकी बातों का उत्तर देते।

यथावसर महाराज एक सुसज्जित आयतन में जाबैठे, संयोगबश अपनी सहोदर सुता रोजाबिला से बातें कर रहे थे, कि लोमिलाइनो प्रविष्ट हुआ। नृपतिपुंगवने परम उत्सुकता और हर्षसे कहा 'क्यों लोमिलाइनो आज तो तुम्हारा चित्त उस दिवस की अपेक्षा भी अधिक आनन्दित है जबकि हमलोग स्काटडोना के अभिमुख पड़े हुये थे और उसी दिन तुरुष्कों से घोर संग्राम होने की आशंका थी।'

लोमेलाइनो—"निस्सन्देह महाराज! मैं इस को अस्वीकार नहीं कर सकता। मुझे अद्यावधि जब कभी उस भयंकर यामिनीका ध्यान बंधता है जब कि हम लोगों ने स्काटडोना को विजय किया था और तुरुष्कों से उनकी ध्वजादि छीनली थी, तो एक प्रकार के भय सम्मिलित हर्षका उद्रेक होता है। अहा! उस दिन वेनिस के वीराग्रगण्य कैसा प्रमत्त केहरि समान लड़े॥"

आंड्रियास—"मेरे प्राचीन बीर धुरंधर! इस पानपात्रको

उनके स्मरणमें भर कर पी—तूने यह सुख अपना रुधिर प्रवाहित कर प्राप्त किया है ॥"

लोमेलाइनो—"निस्सन्देह महाराज ! सुख्याति लाभ करने में ऐसाही स्वाद है परन्तु सच पूछिये तो आपहीकी अनुकंपा से मैंने सुयश लाभ किया और आपही के कारण से यह सुख्याति प्राप्त की। संसार में कोई जानता नहीं कि लोमेलाइनो कौन है यदि वह डालमेशिया और सिसिलिया में प्रख्यात अंड्रियास की ध्वजाके नीचे न लड़ा होता। और वेनिस को सदैव स्मरणीय बनाने के लिये विजय के चिन्होंको एकत्र करने में सहायता न की होती ॥"

अंड्रियास—' मेरे अच्छे लोमेलाइनो! पुर्तगाल की मदिराने तुमारे बिचारों की वृद्धि कर दी है ॥"

लोमेलाइनो—"महाराज ! मैं भली भांति जानता हूं कि मुझे आप के सामने इस प्रकार आप की प्रशंसा करनी न चाहिये परन्तु बिश्वास कीजिये कि अब मेरा समय स्तुति करने का नहीं रहा। यह काम तो मैं नवयुवकों को समर्पण करता हूं जिनकी नासिकामें अद्यपर्यंत बारूद की गंध तक नहीं गई है और जो कभी वेनिस और अंड्रियास के लिये रणभूमि में नहीं लड़े ॥"

अंड्रियास—' तुम तो हमारे प्राचीन हितैषी हो, परन्तु क्या तुम अनुमान करते हो कि इंगलिस्तानाधिपति की भी तुमारीही सी सम्मति है ?

लोमेलाइनो—"मेरे जान तो यदि पंचम चार्लसको उसके सभासदोंने भ्रान्त बना रक्खा हो, अथवा वह अपने आप इतना अभिमानी होगया हो कि निज शत्रुकी बीरता को जिह्वा पर लाते लज्जित होता हो, तबतो दूसरी बात है, नहीं तो उसे अवश्य कहना पड़ेगा कि मेदिनी पृष्ठ पर एकही पुरुष ऐसा है जो मेरा

सामना कर सकता है और जिससे मैं भीत रहता हूं और वह कौन है कि अंड्रियास।"

अंड्रिआस—"मुझे ऐसा अनुमान होता है, कि जब वह मेरा उत्तर-जो मैंने उसके पत्रका दिया है, जिसमे उन्होंने फ्रांस के भूपति को कारागारबद्ध करनेका सम्वाद लिखा था,—सुनेंगे तो अत्यन्त असन्तुष्ट और अप्रसन्न होंगे।"

लोमेलाइनो—"निस्सन्देह वे रुष्ट होंगे, परन्तु इससे क्या? जब तक अरिड्रयास जीवित है वेनिसको उनकी अप्रसन्नता से क्या भय हो सकता है, परन्तु जब आपके जगद्विजयी वीर निज निज समाधियों में पदप्रसारण पूर्वक शयन करेंगे तो फिर बेचारे वेनिसकी न जाने क्या दशा होगी, मैं समझता हूं कि उस दिन इसके उत्कर्ष का समय समाप्त होजायगा।"

अरिड्रयास—"एं? क्या हमारे यहां बहुत से होनहार नवयुवक सैनिकाधिकारी नहीं हैं?"

लोमेलाइनो—"हन्त! उन लोगोंकी अवस्था आप क्या पूछते हैं, बहुतेरे उनमें से नायिकाओं के प्रेमकी मादकता में चूर हैं, कितनोंने मदिरा की भट्टियां लुढ़काने में योग्यता लाभ की है, और प्रायः निरे सुकुमार और कोमल हैं, परन्तु मैं क्या कहने आया था और भूल कर क्या कह रहा हूं। सच है यदि वृद्ध मनुष्य हो और अरिड्रयास से बातें करता हो तो उसके लिये मतलब का बात काभूल जाना सुगम है। सुनिये महराज! मैं आप के निकट कुछ निवेदन करने आया हूं और एक अत्यन्त आवश्यक बात के विषय में।"

अंड्रिआस—"तुम्हारे इस प्रकार कहने से तो मेरी उत्सुकता बढ़गई।"

लोमेलाइनो—"लगभग एक सप्ताह होता है कि यहां

फ्लारेंसका एक कुलीन युवक फ्रोडोआर्डो नामक आया है। उसके मुखड़े से कुलीनता और भलमनसाहत टपकती है, और उसे देखने से सिद्ध होता है कि वह होनहार है।"

अंड्रियास—'अच्छा फिर?"

लोमेलाइनो—"इसके जनक मेरे परम मित्र थे परन्तु उन का देहान्त होगया, अहा! कैसे सद्व्यक्ति थे कि होना कठिन है, युवावस्था में हम दोनों एकही पोतपर कार्य करते थे, और उन्होंने बहुत से तुर्कों को धूलमें मिलाया था, हाय! क्या ही बीर मनुष्य थे।"

अंड्रियास—"वाह! बापकी प्रशंसा की उमंग में तो तुम बेटेको सर्वथा भूल गये।"

लोमेलाइनो—''उनका बेटा वेनिस में आया है और महा-राज की सेवा करने की कामना रखता है। मैं विनय करता हूं कि आप उसे किसी उच्च और माननीय पद पर नियुक्त करें, क्योंकि वह ऐसा पुरुष निकलेगा कि हम लोगोंकी मृत्यु होजाने के उपरांत वेनिसवाले उस पर गर्व करेंगे, इसबात के लिये मैं अपने जीवन की शपथ करता हूं।"

अण्ड्रियास—"वह कुछ मतिमान और योग्य भी है।"

लोमिलाइनो—हां! यह सद्गुण उसमें विद्यमान हैं और वह हृदय भी अपने पिता के सदृश रखता है, तनिक महाराज उसे बुलाकर बात चीत करें, वह सामने वाले आयतन में जहां लोग रूप बदल कर एकत्र हैं उपस्थित है। उसकी कामनाओं में से एकको मैं निदर्शन की भांति आप से वर्णन करता हूं। उस ने डाकुओं का समाचार जिन्होंने सम्पूर्ण वेनिसको अस्तव्यस्त और व्यग्र कर रक्खा है सुना है और वह इस बातका प्रण-करता है कि प्राथमिक सेवा मैं जो इस राज्यकी करूंगा वह

यह होगी कि उन डाकुओं को जो अब तक पुलीसको भी कूआँ भकाया किये हैं पकड़वा दूंगा । "

अांड्रयास-" अजी यह बात तो कहने की है, कर दिखाना बहुत कठिन है। अच्छा, तुमने उसका नाम फलोडोआर्डो न बताया था? उससे जाकर कहो कि मैं उससे बात करना चाहता हूं । "

लोमीलाइनो-" अच्छा, मेरा आधा अभिप्राय तो सिद्ध हुआ, बरन पूरा कहना चाहिये क्योंकि फलोडोआर्डो को एक बार अवलोकन करना और उसे स्वीकार न करना उतना ही कठिन है जितना कि स्वर्ग को देखना और उसमें बैठने की अभिलाषा न करना। किसी मनुष्य के लिये फ्लोडोआर्डो पर दृष्टिपात कर उसे न पसन्द करना, उतनाहीं असंभव है जितना कि अन्तहीन के लिये उस व्यक्ति से घृणा करना जिसने उसके चक्षुओं की फूली को निवारण कर दिया हो और उसको प्रकाश और प्राकृतिक वस्तुओं की सुन्दरता देखने की शक्ति प्रदान की हो । "

अंड्रियास- मुसकरा कर) " जब से लोमेलाइनो हमारी और तुम्हारी भेंट है किसीके विषय में मैंने कभी तुमको इतना उत्तेजित नहीं पाया। अच्छा जाओ इस बिचित्र पुरुष को यहां लाओ।"

लोमिलाइनो—"महाराज ! अभी लाया, परन्तु राजनंदिनी तुम भली भांति सावधान रहना, मैं द्वितीयबार तुमको जताये देता हूं कि अपने को सँभाले रहना।"

रोजाबिला-" परमेश्वर के लिये लोमिलाइनो उसे यहां शीघ्र लाओ। तुमने मेरी उत्सुकता की भी अधिक वृद्धि कर दी है।

लोमिलाइनो-आयतन से बाहर गया !

अरिड्रयास-क्यों बेटी तुम नृत्य करने मे क्यों नहीं योग देतीं !

रोजाबिला-एक तो मैं थक गई हूँ और दूसरे इस इच्छा से यहां ठहरी हूँ कि तनिक देखूं तो कि यह व्यक्ति फ्लोडो आर्डो जिसकी लोमेलाइनोने इतनी प्रशंसा की, कौन है और कैसा है। कहिये तो पिताजी मैं सच कह दूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं उसे जानती हूँ। मैंने अभी एक पुरुष यूनानियों की प्रणाली का अवलोकन किया है, जिसका ढंग इतना निराला था कि वह उस समारोह में मिल न सकता था, तनिक भी ज्ञानवान मनुष्य उसे सहस्रों से पृथक कर सकता है वह पुरुष एक दुबला पतला लाँबा सजीला युवा पुरुष है जिसकी चाल ढाल से सुन्दरता की भी पराकाष्ठा होती है।

अरिड्रयास-(मुसकुराकर और अपनी उँगुलियों से धमकाकर) "बेटी! बेटी!!"!

रोजाबिला-नहीं ममपूज्य पितृव्य! जो कुछ मैंने कहा वह केवल सत्यता और न्याय की दृष्टि से था, संभव है कि वह पुरुष जो यूनानी परिच्छद धारण किये था और फ्लोडो दो पुरुष हों परन्तु लोमेलाइनो के वर्णन के अनुसार-महोदय! वह देखिये तनिक अभिमुख अवलोकन कीजिये वह यूनानी खड़ा है।

अरिड्रयास-और लोमेलाइनो भी उसके साथ हैं दोनों आते हैं। प्यारी रोजाबिला तुमारा अनुमान बहुत ठीक उतरा!।

भूमिनाथ की बात समाप्त भी न होने पाई थी कि लोमेलाइनो एक लम्बी डील के युवक को जो उत्तम यूनानी परिच्छद धारण किये था साथ लिये हुए आपहुँचा॥

लोमेलाइनो-महाराज! कौंट फ्लोडोआर्डो आप के समक्ष

विद्यमान है और महाराज के पदपाथोज परिसेवन में लगे रहने के लिये निवेदन करता है।

फ्लोडोआर्डो ने अपनी टोपी सन्मान रक्षा के लिये उतार ली, बहुरूप को निवारण किया, और बेनिस के विख्यात शासक के सम्मुख शिर झुकाया।

अण्ड्रियास-हमने सुना है कि तुम इस राज्य की सेवा करने का अपार अनुराग अपने अन्तःकरण में रखते हो।

फ्लोडोआर्डो-यही मेरी कामना है, यही मेरी उमंग है, परन्तु इस नियम के साथ कि यदि महाराज मुझे इस प्रतिष्ठा के योग्य समझें।

अण्ड्रियास-लोमेलाइनो तुम्हारी अत्यन्त प्रशंसा करते हैं यदि जितना उन्होंने वर्णन किया है, वह सत्य है तो तु ने अपना देश क्यों छोड़ा।

फ्लोडोआर्डो-इस कारण से कि मेरे देशका शासक अण्ड्रियास सदृश पुरुष नहीं है।

अण्ड्रियास-सुनते हैं कि तुमारा उद्योग उन डाकुओं के निवास स्थान के खोज लेने का है जिन्होंने वेनिस के बहुतेरे लोगों की आंखों से अश्रुप्रवाह कराया है।

फ्लोडोआर्डो-यदि महाराज मेरा विश्वास करें, तो मैं तो अपना शिर देना भी स्वीकार करता हूं।

अंड्रियास-परदेशी से इतना होना बहुत दुर्लभ है, अच्छा हम परीक्षा करेंगे कि तुम निज कथन को कहांतक पूरा कर सकते हो।

फ्लोडोआर्डो-बस महाराज इतना बहुत है, कल्ह अथवा परसों मैं अपना प्रण पूरा करूंगा।

अंड्रियास-क्या तुम यह प्रतिज्ञा ऐसी तत्परता से करते हो भला तुम इस बात से भी अभिज्ञ हो कि इन दुष्टात्माओं को

बश में करना कैसा दुस्साध्य कार्य है क्योंकि जब उनका अनु-संधान कीजिये तब तो मिलते नहीं और जहां उनके रहने की आशा नहीं होती वहीं उपस्थित हो जाते हैं। वेनिस में कोई कोना और विवर ऐसा नहीं है, जिसे हमारे गुप्तचरों ने न छान मारा हो फिर भी आज तक पुलीस को उनके निवास स्थान का ठिकाना तक न मालुम हुआ॥

फ्लोडोआर्डो–मैं यह सब जानता हूं और इसी कारण तो मैं प्रसन्न हूं कि इससे मुझे वेनिस के राज्यकर्त्ता पर यह सिद्ध कर देने का अवसर हस्तगत होगा कि मेरे कार्य साधारण उद्योगकर्त्ताओं के से नहीं हैं।

अंड्रियास–प्रथम निज प्रण पूरा करो और तब मुझे आकर जतलाओ। अभी हमें यहीं पर बातचीत समाप्त कर देनी चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि किसी दुःखद बिचार का ध्यान बँध जाने से इस शुभ दिवस के उत्साह में बिघ्न पड़े। रोजा-विला तुम भी नृत्यकर्म में योग क्यों नहीं देतीं? कौन्ट! मैं इन्हें तुम्हारे संरक्षण में छोड़ता हूं।

फ्लोडोआर्डो–इससे विशेष मेरे लिये कौनसी महत्व की बात हो सकती है।

जब तक यह समालाप भूमिनाथ और फ्लोडोआर्डो के बीच होता रहा रोजाविला अपने पितृव्य की कुर्सी पर हाथ रखे खड़ी थी। वह अपने जी में लोमेलाइनो के इस कहने पर बिचार करती थी कि "फ्लोडोआर्डो का देखना और उसे न पसन्द करना उतना ही दुस्तर है जैसा कि स्वर्ग को देखना और उस में जाने की कामना न करना" उस युवक के स्वरूप को देखकर वह मनही मन कहती थी कि लोमेलाइनो ने यह बात किसी बनावट की रीति से नहीं कही। जब महाराज ने फ्लोडोआर्डो से कहा कि वह उसे नृत्यायतन में अपने साथ

ले जाय, तो रोजाबिलाने लज्जा से आंखें नीची कर लीं और हिचकी कि फ्लोडोआर्डो के हाथ में अपना हाथ दूँ वा नहीं। सच पूछिये तो मेरी अनुमति तो यह है कि यदि ऐसे अवसर पर कोई अपर स्त्री होती तो उसे भी अपनी सुध बुध न रहती, क्योंकि फ्लोडोआर्डो ऐसा ही स्वरूपमान युवक था कि जिसके निरीक्षण से मनुष्य का मन तत्काल हाथ से जाता रहे।

निदान उसने रोजाबिला का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे नृत्यालय में लेगया। वहाँ प्रत्येक ओर हर्ष और सुखकी सामग्री प्रस्तुत थी। बाद्यों और गायको के मृदुनादों से सम्पूर्ण आयतन गूंजरहा था, नर्तकों की पद परिचालना और उनकी ठोकरों से पृथ्वी थर्रा रही थी स्वरूपमान लोगो के सहस्रों लघु लघु समूह उडुगण की भांति यत्र तत्र छिटके हुए थे। जिनके परिच्छद और धृत रत्नों के प्रकाश ने निशाको दिवस बना दिया था। रोज़ाविला और फ्लोडोआर्डो उन लोगों में से होते हुये आयतन के दूसरे सिरे पर निकल गये और वहां एक खुली हुई खिड़की के सामने खड़े हुये। कतिपय पल पर्य्यन्त वह लोग स्तब्ध रहे। कभी वह एक दूसरे को तकते कभी नर्तकों की ओर दृष्टिपात करते और कभी मृगांक माधुर्य्य को देखते और फिर सभों को भूल कर निज विचारों में मग्न हो जाते। निदान फ्लोडोआर्डो ने कहा "राजात्मजे! इससे बढ़ कर भी कोई अभाग्य की बात होसकती है?" यह सुन कर रोजाबिला अकस्मात् अपने विचारों से चौंकपड़ी और बोली "ऐं अभाग्य? कैसा अभाग्य! महाशय! यहां कौन अभागा है?"

फ्लोडोआर्डो—"और कौन; उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो स्वर्गीय व्यञ्जनों को देखता हो और उनसे वञ्चित रहे, जो तृषा से कण्ठ गत प्राण हो परन्तु शीतल जलका पानपात्र जो सम्मुख

भरा दिखाई देता है उसे न छू सके।"

रोजाबिला-"और क्यों महाशय! क्या आपही वह पुरुष हैं जो स्वर्गीय पदार्थों से वंचित रखे गये हैं और क्या आप ही वह पिपासित हैं कि जिसके अभिमुख शीतल तोयपूरित पान पात्र रखा है, परन्तु छू नहीं सकते? आपका संकेत अपनी ही ओर है अथवा और किसी की ओर?"

फलोडोआर्डो-"आप मेरा अभिप्राय ठीक समझीं, अतएव अयि कोमलांगी रोजाबिला! तुमही बतलाओ कि मैं वास्तव में अभागा हूं वा नहीं!"

रोजाबिला-"तो वह स्वर्ग कहां है जिससे आप वंचित हैं।"

फलोडोआर्डो-"जहां रोजाबिला सी अलौकिक देवांगना है वही स्वर्ग है।"

यह सुन कर लज्जित हो रोजाबिलाने आंखें नीची करलीं।

फलोडोआर्डोने रोजाबिलाका कर पल्लव स्व करकमलों में ससम्मान लेकर पूछा "राजकन्यके आप अप्रसन्न तो नहीं हुईं? मेरी यह स्पष्ट बात आपको अरुचिकर तो नहीं हुई?

रोजाबिला—"कौन्ट फलोडोआर्डो आप फलारेंसके निवासी हैं, हमारे वेनिस नगर में इस तरह की प्रशंसाको अनुचित समझते हैं, विशेषतः मैं इसे नहीं पसंद करती, और आपकी चपल रसना से इसको नहीं सुना चाहती"

फलोडोआर्डो—"जीवन की शपथ है, जैसा मेरा अनुभव था मैंने वैसाही कहा, मैंने कुछ आपकी स्तुति नहीं की।"

रोजाबिला—"अच्छा वह देखो नृपति महानुभाव मान-फ्रोन और लोमेलाइनो के साथ इस आयतन में आते हैं। वह हम लोगों को नर्तकों में खोजेंगे, आओ चलो उन लोगों में सम्मिलित होजावें॥

फ्लोडोआर्डो उसके कथनानुसार चुपचाप साथ होगया और नर्तकोंके समीप पहुंचकर, दोनों नृत्यमें लीन होगये। उस समयके सौंदर्य का क्या पूछना। प्रत्येक व्यक्तिकी दृष्टि इन्हीं दोनों पर थी और प्रत्येक दिशासे स्तुति और प्रशंसा की ध्वनि चली आती थी। परन्तु रोजाविला और फ्लोडोआर्डो इसका तनिक भी ध्यान न करते थे, क्योंकि उनके जी में यदि प्रशंसा श्रवणकी कुछ भी आकांक्षा थी तो केवल एक दूसरेके मुखसे।

एकादश परिच्छेद।

रोजाविलाकी वर्षग्रन्थिके तृतीय दिवस संध्या समय परोजी अपने मित्रों मिमो और फलीरी के साथ अपने आगार में बैठा था। प्रत्येक ओर एक प्रकारकी उदासीनता छारही थी, वर्तिकायें आप धुँधली और निस्तेज जलती थीं, आकाश अलग वलाहक समूहों से आच्छादित दिखलाई देता था, और सबसे अधिक इनके हृदयों में भय और असमंजस का प्रचण्ड प्रभंजन उठ रहा था। अन्ततः बहुत काल पर्यन्त स्तब्ध रहने उपरान्त परोजी ने कहा "ऐं" तुमलोग किस चिन्ता में निमग्न हो? लो एक एक पानपात्र भरकर मद पान करो"।

मिमो—(अरुचि के साथ) "अच्छा तुम्हारे आज्ञानुसार पान करता हूँ परन्तु आजतो मद्पान करने के लिये मेरा जी नहीं चाहता"।

फलीरी—"और न मेराजी चाहता है मुझे तो सुराका स्वाद आज सिर्केकासा ज्ञात होता है पर वास्तव में यह निस्वाद मद में नहीं है बरन हमारे चित्त में है।

परोजी—"परमेश्वर का कोप उन दुष्टात्माओं पर"।

मिमो—"क्या तुम डाकुओं को कोस रहे हो"॥

परोजी—"अजी कुछ न पूछो उन मन्दभाग्यों का तनिक अनुसन्धान नहीं लगता, मेरा तो आकुलतासे श्वासावरोध हो रहा है"।

फलीरी—"और इस बीच समय हाथ से निकला जाता है। यदि कहीं हमारा भेद खुल गया तो फिर हम होंगे और कारागार। सब लोग हमारा परिहास करेंगे और ताली बजावेंगे। मेरा जी तो ऐसा झुँझलाता है कि अपने हाथों अपना मुख नोच डालूं" इस समालाप के उपरांत कुछ काल पर्य्यन्त एक सन्नाटा सा छा गया।

परोजी (क्रोध से पृथ्वी पर हाथ पटक कर) फ्लोडोआर्डो फ्लोडोआर्डो!!

फलीरी—"दो घड़ी में मुझे पादरी गान्जेगा के समीप जाना है तो मैं उनसे जाकर क्या कहूँगा"?

मिमो—"अजी घबराओ नहीं कांटेराइनो का इतनी देर तक न आना किसी प्रयोजनीय घटना से सम्बन्ध रखता है विश्वास करो कि वह कुछ न कुछ समाचार अवश्यमेव लावेंगे"।

फलीरी—"राम! राम! मैं प्रण करके कहता हूँ कि वह इस समय उलिम्पिया के चरणों पर शिर रखे हुये अश्रुप्रवाह करते होंगे भला उन्हें हम लोगोंकी अथवा इस राज्यकी अथवा डाकुओं की अथवा अपनी कब सुध होगी"।

परोजी—"भला तुम लोगों में से कोई इस फ्लोडोआर्डो का कुछ भी भेद नहीं जानता"।

मिमो—"बस उतना ही जितना कि रोजाबिला की वर्ष-ग्रन्थिके दिवस देखने में आया"।

फलीरी—"परन्तु मैं उसके विषय में इतना और जानता

हूँ कि परोजी को उससे ईर्षा और द्वेष है" ॥

परोजी—"मुझको ? पागल हो। रोजाविला चाहे जर्मनी के महाराजाधिराज से पाणिपीड़न करे अथवा वेनिस के एक नीचतर भारवाहक की पत्नी बने मुझको तनिक भी चिन्ता नहीं"।

परोजी की इस निरपेक्षता पर फलीरीने एकवार अट्टहास किया।

मिमो—"एक बात तो जो व्यक्ति फ्लोडोआर्डो का शत्रु है वह भी स्वीकार करेगा कि उसके समान वेनिस में द्वितीय रूपवान युवक नहीं है। मेरे जान तो वेनिस में कोई युवती ऐसी आचारवान और पातिव्रतपरायण न होगी जो उसको देख कर सम्मोहित और कामासक्त न होजाय"।

परोजी—"हां यदि स्त्रियां भी तुम्हारे समान निर्बुद्धि होंगी कि गरीके दर्शनाभावमें छिलके पर रीझ जांय तो निस्सं-देह ऐसा करेंगी"।

मिमो—"पर शोक तो यही है कि स्त्रियां सदा छिलके को ही देखती हैं"।

फलीरी—"वृद्ध लोमेलाइनो उससे बहुत ही अभिज्ञ ज्ञात होता है, लोग कहते हैं कि वह उसके पिता का बड़ा मित्र था"।

मिमो—"उसीने तो महाराज से भेट कराई है।

परोजी—"चुप, देखो कोई कुण्डा खड़खड़ा रहा है"।

मिमो—"सिवाय कांटेराइनो के और कौन होगा, अब देखें उन्होंने डाकुओं का पता लगाया अथवा नहीं"।

फलीरी—(अपने स्थान से उठकर) "मैं शपथ कर सकता हूँ कि यह कांटेराइनो के पाँव की आहट है"।

उस समय कपाट खुल गया और कांटेराइनो पटावेष्टित

आयतन में शीघ्र शीघ्र प्रविष्ट हुआ, परन्तु उसको क्षतविक्षत और रुधिराक्त देखकर उसके मित्रगण व्यस्त होगये और कहने लगे कुशल तो है ? यह क्या बात है ? तुम लहूभरे क्यों हो ?

कांटेराइनो—"कुछ व्यग्र होने की बात नहीं है, क्या यह मदिरा रखी है, तो शीघ्र मुझे एक प्याला भरकर दो, प्यास की अधिकता से मेरा तालू सूखा जाता है"।

फलीरी—(मद्को पानपात्र में भरकर) "परन्तु कांटेराइनो तुमारे शरीर से रुधिर प्रवाह हो रहा है"।

कांटेराइनो—" मैं जानता हूँ मुझसे क्या कहते हो, सच जानो कि मैंने कुछ आपसे नहीं किया है"।

परोजी—" पहले तनिक हमलोगों को व्रण बांध लेने दो और फिर हमसे कहो कि क्या दुर्घटना हुई है। अवश्य है कि सेवकों को इससे कुछ अभिज्ञता न हो, अतएव इस समय मैं ही तुम्हारा वैद्य बनूँगा"।

कांटेराइनो—"तुमलोग मुझ से पूछते हो कि मुझ पर क्या बीती ? अजी यह केवल एक परिहास की बात थी, लो फलीरी मुझे एक प्याला और भरकर दो।

मिमो—"मेरा तो आतङ्क से श्वासावरोध हो रहा है"।

कांटेराइनो—" क्या आश्चर्य है, श्वासावरोध होता होगा, और मेरा भी होजाता यदि मैं कांटेराइनों होनेके बदले मिमो होता। इसमें सन्देह नहीं कि क्षतसे रुधिर अधिक निकल रहा है परन्तु उससे किसी प्रकार की आशंका नहीं है"। यह कह कर उसने अपना परिच्छद फाड़ डाला और वक्षस्थल खोलकर उनलोगों को दिखलाया। "देखो मित्रो ! यह घाव दो इञ्चसे अधिक गहरा नहीं है"।

मिमो—(कांपकर) "हे परमेश्वर ! मुझ पर कृपा कर उसके देखने ही से मेरा हृदय बिदीर्ण हुआ जाता है"।

इस बीच परोजी कुछ अनुलेप और वस्त्र ले आया और उसने अपने सुहृद् के व्रण को पट्टी चढ़ा कर बांध दिया।

काराटेराइनो--"कवि हारेसने सत्य कहा है कि दर्शनविद्, उपान निर्माता, नृपति, वैद्य, जो कुछ चाहे बन सकता है। देखो कि परोजी दर्शनविद् होने के कारण किस सावधानी के साथ मेरे लिये पट्टी निर्म्माण कर रहा है। मित्र! मैं तुम्हारा उपकृत और वाधित हूँ, तुम्हारी इतनी अनुकम्पा बहुत है। अब सुहृदवरो! मेरे पास बैठो और सुनो कि क्या क्या अद्भुत और विचित्र बातें वर्णन करता हूं।

फलीरी-"कहो"।

काराटेराइनो-" ज्योंही संध्या समय समीप आया मैं पटावृत होकर घरसे इस प्रयोजन से निकला कि यदि सम्भव हो तो डाकुओं का पता लगाऊं। मैं उनसे अभिज्ञ न था और न वह मुझे पहचानते थे। कदाचित् आपलोग कहेंगे कि यह काम मैंने मूर्खताका किया परन्तु मैं आपलोगों पर सिद्ध करना चाहता हूँ कि कैसा ही कठिन कार्य्य क्यों न हो यदि मनुष्य उसके करने के लिये कटिवद्ध हो तो वह अवश्य-मेव हो सकता है। मुझे उन दुष्टात्माओंका चिन्ह बहुत ही अल्प ज्ञात था तो भी मैं उतने ही पते पर चल निकला। संयोग से मुझ से एक नाविक से भेट होगई जिसका स्वरूप देख कर मुझे परमाश्चर्य हुआ। मैंने उससे बातें करनी प्रारम्भ कीं और अन्तको मुझे पूर्ण विश्वास होगया कि वह उन डाकुओं के निवासस्थान से अभिज्ञ है। तब मैंने कुछ मुद्रा और बहुत सी स्तुति के द्वारा उससे इतना भेद पाया कि यद्यपि कि वह उनके समूह में मिलित नहीं है, परन्तु प्रायः उन लोगोंने उससे अपना कार्य सम्पादन कराया है। मैंने तत्काल उसको कुछ देकर सन्तुष्ट किया और वह अपनी नौका

पर चढ़ा कर कभी वेनिसके बायें ओर कभो दहने मुड़ता हुआ मुझे इस रीति से ले चला कि मुझको तनिक ध्यान न रहा कि मैं नगर की किस दिशा में हूं। निदान एक स्थल पर पहुंच कर उसने मुझ से कहा कि अब अपनी आँखों को वस्त्र द्वारा आच्छादित कर लो। अवश हो मुझे इस नियम को स्वीकार करना पड़ा। दो घड़ी के बाद उसने अपनी नौका एक स्थान पर ठहरा कर मुझे उतारा और कई गुप्तमार्गों से होता हुआ मुझे एक गृह के द्वार पर उसी भांति अच्छादित नेत्र से लेजाकर खड़ा किया। तब उसने कुण्डी खटखटाई और भीतर से किसी जनने कपाट खोल कर प्रथम अत्यन्त चातुर्य्य से मेरी बातों को श्रवण किया, फिर अपरों से अतिकाल पर्य्यन्त परामर्श करने के उपरांत मुझे घरके भीतर बुला लिया। वहां जाने पर मेरा नेत्राच्छादक पट खोल दिया गया और मैंने अपने को एक आयतन में पाया जहां चार मनुष्य असभ्य और एक युवती जिसने कदाचित कपाट खोला था उपस्थित थीं।

फलीरी—"ईश्वर की शपथ है कांटेराइनों तुम बड़े ढीठ हो"।

कांटेराइनो—"मैंने देखा कि समय व्यतीत करने का अवसर नहीं है, इसलिये मैंने तत्काल स्वर्णमुद्राओं का तोड़ा अपने पार्श्वभाग से निकाल कर उनके सामने रख दिया, और उनको और बहुत कुछ देने की प्रतिज्ञा की। पश्चात् आपस में दिवस, समय, और संकेत जिनसे मेरी और उन लोगों की भेंट सुगमता से हुआ करे नियत कर लिये। उस समय मैंने उनसे केवल यही कामना प्रगट की कि मानफ्रोन, कुनारी और लोमेलाइनो जितना शीघ्र संभव हो ठिकाने लगाये जांय"।

इस पर सबने मिल कर कांटेराइनो की परम प्रशंसा की।

कांटेराइनों—" यहां तक तो सब बातें इच्छाके अनुसार हुईं और मेरे नूतन मित्रों में से एक व्यक्ति मुझे घरतक पहुंचाने केलिये साथ आने को भी तैयार हुआ कि अकस्मात् कुछ लोग आन पहुँचे "।

परोजी—"ऐं ? "।

मिमो—(घबरा कर) " परमेश्वर केलिये आगे कहो "।

कांटेराइनो—" ज्यों हीं द्वार पर किसी के खटखटाने का शब्द ज्ञात हुआ वह स्त्री जो वहां विद्यमान थी समाचार जानने केलिये गई कि कौन है और तत्काल उन्मत्त युवती सदृश बकती हुई पलट आई कि " भागो ! भागो ! !

फलीरी—"फिर क्या हुआ ? "

कांटेराइनो—उसके पीछे बहुत से पदातिगण और पुलीस के युवकजन आये और उनके साथ वह फ्लारेंस का रहनेवाला पुरुष था "।

यह सुन कर सब अकस्मात् बोल उठे " फ्लोडोआर्डो ? फ्लोडोआर्डो ? "।

कांटेराइनो—"हां, फ्लोडोआर्डो"।

फलीरी—"उसे क्यों कर वहां का अनुसन्धान लगा"।

परोजी—" हा हन्त ! मैं वहां न हुआ "।

मिमो—" क्यों परोजी ! अब तो तुमको विश्वास हुआ होगा कि फ्लोडोआर्डो वीर और साहसी है"।

फलीरी—"अभी चुप रहो शेष विवरण श्रवण करने दो "।

कांटेराइनो—"उस समय हमलोग पत्थर बन गये, कोई कर पदादि परिचालन तक नहीं कर सकता था। आने के साथही फ्लोडोआर्डोने तर्जन पूर्वक कहा कि तुम लोग वर्तमान महीपति और इस राज्य की आज्ञा से शस्त्र अस्त्रादि रख दो

और हमारे साथ चुपचाप चले चलो। यह सुनकर डाकुओं में से एक पुरुष बोला कि शस्त्र रखनेवाले और तुम्हारे साथ चलने वाले पर हमलोग धिक्कार शब्द का प्रयोग करते हैं और झट पुलीस के एक उच्चाधिकारी की करवाल उसने छीन ली। दूसरे लोगोंने अपनी बन्दूकें उठालीं और मैंने तत्काल फूंककर एकदो को शान्त कर दिया, जिसमें कोई मित्र और शत्रु को न पहचान सके। परन्तु फिर भी कलानाथ की कलकौमुदी गवाक्षों की झिलमिली के मार्ग से आती थी और उसका प्रकाश कुछ कुछ उस आयतन में प्रसरित था। मैंने अपने जी में कहा कि अब बात बेढब हुई क्योंकि यदि तुम इन लोगों के साथ पकड़ गये तो इनके सहयोगी समझ कर फांसी दे दिये जाओगे। इस अनुमान के हृदय में अंकुरित होते ही मैंने अपनी करवाल को कोश में से निकाल कर फ्लोडोआर्डो पर चलाई परन्तु यद्यपि मैंने अपने जान तुला हुआ हाथ लगाया था पर उसने मेरा वार अपनी करवाल पर अत्यन्त स्फूर्ति के साथ रोका उस समय मैं उन्मत्तों समान लड़ने लगा परन्तु फ्लोडोआर्डो के अभिमुख मेरा चातुर्य्य और मेरी स्फूर्ति कुछ कार्य्यकर न हुई और उसने मुझको क्षत विक्षत कर दिया। क्षतग्रस्त होते ही मैं पीछे हट गया। संयोगतः उस समय दो लघु तुपकें छूटीं और मुझे उनके छूटने के प्रकाश में एक द्वार दृष्टिगोचर हुआ जिसे पदातिगण घेरना भूल गये थे। मैं उसी मार्ग से लोगों की दृष्टि बचा कर द्वितीय कोठरी में निकल गया और उसकी खिड़की के डण्डों को तोड़ कर नीचे कूद पड़ा। कूदने पर मुझे तनिक भी चोट न आई और मैं एक घेरे के भीतर से होता और कतिपय गृहोद्यान की भित्तियों को उल्लंघन करता हुआ नहर पर्य्यन्त आ पहुंचा। वहां मेरे भाग्य से एक नौका लगी हुई थी। मैंने नाविक को सेण्टमार्क तक पहुँचाने पर उद्युक्त

किया और वहां से सीधा तुमारे पास चला आता हूं। मुझे अद्यावधि अपने को जीवित देखकर आश्चर्य्य होता है। यही घटना है जो आज के दिवस मुझ पर बीती है"।

परोजी-"ईश्वर की शपथ है कि मुझे तो उन्माद हो जायगा"।

फलीरी-जो युक्ति हमलोग करते हैं उसका उलटाही फल होता है और जितना दुख सहन करते हैं उतनाही निराश होते जाते हैं"।

मिमो-मेरी सम्मति तो यह है कि यह परमेश्वर की ओरसे शिक्षा हुई है कि हमलोग अपने नीच कर्मों को परित्याग करें। क्यों तुमलोग क्या विचार करते हो?"

काण्टेराइनो-"छिः! ऐसी छोटी छोटी बातों का ध्यान करना सर्वथा हेय है। ऐसी ऐसी घटनाओ से हमारे आन्तरिक वीरता के कपाट खुलते हैं। मुझे तो जितनी कठिनाइयां सामने होती हैं उतनाही उत्साहित करती हैं, और मैं उनका निवारण करने के लिये उतनाही तत्पर होता हूँ।

मिमो-"अच्छा, पर काण्टेराइनो तुमको मेरे जान परमेश्वर को धन्यवाद प्रदान करना चाहिये कि एक बड़ी आपत्ति से साफ बच कर निकल आये"।

फलीरी-परन्तु क्यों भाई फ्लोडोआर्डो तो यहां परदेशी और अपरिचित है उसे डाकुओं के रहने का स्थान क्यों कर ज्ञात हुआ?"।

काण्टेराइनो-"मैं नहीं कह सकता, क्या आश्चर्य्य है कि मेरे समान उसे भी दैवात् उनका अनुसन्धान लग गया हो, परन्तु शपथ है उसकी जिसने मुझे उत्पादन किया, मैं फ्लोडो-आर्डो को क्षतग्रस्त करने का स्वाद अवश्य चखाऊंगा"।

फलीरी-"फ्लोडोआर्डो यह निस्सन्देह बुरा करता है कि

अपने को इतना शीघ्र लोगोंकी दृष्टि में चढ़ा रहा है" ।

परीजी–"फ्लोडोआर्डो अवश्य मारा जायगा" ।

काएटेराइनो–(अपना पानपात्र भर कर) "परमेश्वर करे कि अबकी बार उसके पानपात्र की मदिरा घोर विष होजाय"।

फलीरी–"मैं इस व्यक्ति से साक्षात् अवश्य करूंगा ।

काएटेराइनी–"मिमो अब मुद्रा के विषय में चिन्ता करनी चाहिये नहीं तो सम्पूर्ण कार्य्य असमाप्त रह जायगा । अब तुम्हारे पितृव्य कब इस संसार को परित्याग करेंगे ?" ।

मिमो–कल संध्या समय परन्तु हाय ! मेरा हृदय कांपता है" ।

द्वादश परिच्छेद ।

रोजाबिलाकी वर्षग्रन्थि के दिवस से वेनिसमें कोई स्त्री जिसे तनिक भी रूपवती होने का गर्व था ऐसी न थी जो सिवाय उस फ्लारेंस के नुकीले युवक के दूसरे की चर्चा करती हो । उसकी सुन्दरता का विवरण प्रत्येक युवती की जिह्वा पर था, जो अपना प्रेम प्रगट न करती थी वह मनही मन कुढ़ कुढ़ कर रहती थी, बहुतेरी युवा स्त्रियों को उसके ध्यान में रात्रि को निद्रा नहीं आती थी, जो निज कटाक्षों से प्रेमियों का मानस परिहरण में पूर्ण अभ्यस्त थी, प्रायः शृङ्गार समय वह अपना स्वरूप दर्पण में अवलोकन कर उसासें लेती, और कितनी नारियां जिन्होंने निज पातिव्रत की धुन में बाहर आना जाना तक तज दिया था, अब अजस्र फ्लोडोआर्डो की एक झलक पाने के अनुराग में उपवनों और राजमार्गों में भटकती फिरती थीं । यह अवस्था तो युवतियों की हुई,

परन्तु जिस समय से उस अद्भुत् व्यक्तिने पुलीसवालों को साथ लेकर अत्यन्त वीरता से डाकुओं को स्वयं उनके भवन में जाकर पकड़ा वह पुरुषों की दृष्टि में भी समा गया था, वे लोग एक ऐसे भयङ्कर कृत्य में उसकी वीरता और दृढ़ता को देखकर अत्यन्त प्रसन्न थे और अधिकतर उनको उसकी इस पहुंच पर आश्चर्य्य था कि उसने डाकुओं का निवासस्थान जिसका अनुसन्धान और पता पुलीस को भी न लगा था जानलिया था। भूप अण्ड्रिआस भी उसका सामीप्य प्रतिदिन बढ़ाते और उस को अपनी प्रकृति में अधिकार देते जाते थे। जितनाही वे उससे समालाप करते उतनाही वह उनकी दृष्टि में अधिक जँचता जाता। निदान महाराज ने फ्लोडोआर्डो के लिये एक योग्य पुरस्कार उस राजकीय उपकार के बदले में निर्धारण किया जिसको वर्तमान काल में उसने कर दिखलाया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने उसको राज्य के एक माननीय और उच्च पद पर भी नियुक्त करना चाहा, परन्तु फ्लोडो ने दोनों बातों के स्वीकार करने में अरुचि प्रगट की और कहा अभी वर्ष भर मैं वेनिस में स्वतन्त्र और स्वच्छन्द रहना चाहता हूं इसके उपरान्त मैं स्वयं आप से किसी एक ऐसे कार्य्य के लिये प्रार्थी हूंगा जो मेरी योग्यता के अनुकूल होगा।

फ्लोडोआर्डो निज प्रतिपालक लोमेलाइनो के गगनस्पर्शी-भवनों में रहता लोगों से बहुत कम मिलता अपना समय अधिकतर ग्रन्थावलोकन में व्यतीत करता प्रायः दिन दिन भर अपने कमरे से पांव बाहर न निकालता और सिवाय बड़े बड़े अफसरों से मिलने के किसी उत्सव और समारोह में भी सम्मिलित न होता था। उसकी यह अवस्था महाराज, लोमेलाइनो, मानफ्रोन और कुनारी से छिपी न रह सकती थी। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता के

बल से वेनिस के राज्य की नीव को इतना दृढ़ और पुष्ट कर डाला कि उसका उखाड़ना टेढ़ी खीर थी। जिनकी संगत में रहने से मनुष्य अपने को देवता समझने लगता था और जिनको यह बात हृदय से स्वीकार थी कि फ्लोडोआर्डो किसी समय में अच्छा नाम प्राप्त करे। उन्होंने तत्काल समझ लिया कि यद्यपि फ्लोडोआर्डो प्रगट में प्रसन्न ज्ञात होता है पर वास्तव में उसके हृदय को किसी बातका संताप है और उसका आनन्द बनावटी है। यह दशा देखकर लोमेलाइनोंने जो उससे पिता की भांति प्रीति करता था, और नृपतिने जो उसको हृदय से चाहते थे, बहुत प्रयत्न किया कि उसके संताप का कारण जानें, और उसका मन बहलायें, परन्तु सकल प्रयत्न निष्फल हुये। फ्लोडोआर्डो प्रत्येक समय मलीन और मौन रहता था। यदि हमारे पाठकों को यह चिन्ता हो कि इस समय रोजाबिला की कैसी दशा थी तो उनको समझ लेना चाहिये कि यह बात कथमपि संभव नहीं कि प्रेमी संतापित हो और प्रेयसी पर उसका प्रभाव न पड़े।

रोजाबिला प्रतिदिन कुम्हलाती और निर्बल होती जाती थी, उसके नेत्रों में प्रायः आंसू डबडबा आते थे, और आनन का वर्ण क्रमशः पीत पड़ता जाता था. यहां तक कि महाराज को जो उस पर प्राण न्योछावर किये देते थे उसके स्वास्थ्य में विघ्न पड़ने की आशंका हुई। उनका यह अनुमान बहुत ठीक उतरा, क्योंकि कतिपय दिवस मेंही रोजाबिला सचमुच रुज-ग्रस्त हुई और उसे एक ऐसे कठोर ज्वर ने आ दबाया कि जिसकी औषध करने में वेनिस के बड़े बड़े वैद्यों की बुद्धि व्यस्त थी।

जिस समय कि भूमिनाथ अंड्रिआस और उनके मन्त्रदाता रोजाविलाके रुजग्रस्त होने की आपत्ति में पतित थे एक दिन

वेनिस में एक नवीन बात ऐसी हुई जिसने उनकी चिन्ता की और वृद्धि कर दी। ऐसी घटना का होना जिसका विवरण आगे किया जायगा वेनिस में अद्यावधि किसीने न सुना था। उसकी कथा यों है कि जिस दिन से फलोडोआर्डो ने उन चारों डाकुओं पेट्राइनो, ष्ट्रूजा, बलज्जो, और टामेसो को पकड़ा था वह राजकीय कारागार में बहुत यत्न के साथ बद्ध थे और नित्य उनके विषय में छान बीन की जाती थी। निदान अपराध सिद्ध होजाने के उपरांत उन लोगोने फांसी पाई। उस दिवस से अंड्रिआस और उनके मन्त्रि प्रवरों को पूरी प्रतीति होगई कि अब प्रजा के लिये किसी प्रकार के भयका स्थान शेष न रहा, और वेनिस उन दुष्टों से सर्वथा रहित होगया जो मुद्रादि के लोभ से व्यर्थ लोगों का नाश किया करते थे कि अकस्मात् उन्होंने एक दिन एक बिज्ञापन वेनिस के मुख्य भवनों और राज मार्गों और नाकों पर लगा हुआ देखा जिसका आशय यह था।

"ऐ वेनिस निवासियो! तुम लोगों को ज्ञात हो कि ष्ट्रूजा, टामेसो, पेट्राइनो, बलज्जो, और माटियो, पांच ऐसे बीर व्यक्ति को, जो यदि किसी सेना के नायक होते तो वीर धुरन्धर कहलाते डाकुओं में गिनकर राज्यने अन्याय से फांसी दे दी यद्यपि कि अब वह जीवित नहीं हैं, परन्तु उनके स्थान पर अब वह व्यक्ति उत्पन्न हुआ है जिसका नाम इस विज्ञापन के निम्नभाग में लिखा है और जो ऐसे लोगों का कार्य्य तन मन से करने के लिये तत्पर है जिन्हें उससे कोई काम कराना हो। मैं वेनिस की पुलीस को कुछ नहीं समझता, और न उस धृष्ट और दुष्टात्मा फ्लारेंस के निवासी को जिसके कारण मेरे सहकारियों की यह दशा हुई, तनिक भी ध्यान में लाता हूं। मैं सूचित करता हूँ कि जिन लोगों को मेरी आवश्यकता हो वह

मेरा अन्वेषण करें मैं उन्हें प्रत्येक स्थल पर मिलूंगा, परन्तु जो लोग मुझे पकड़ने के अभिप्राय से अन्वेषण करेंगे उन्हें निराश होना और डरना चाहिये क्योंकि मैं उनको कहीं न मिलूंगा पर वे मुझसे चाहे कैसे ही स्थान पर क्यों न हों बच न सकेंगे। तुमलोग मेरा अभिप्राय भलीभांति समझ लो और जानलो कि जिसने मेरे पकड़ने का प्रयत्न किया उसका अभाग्योदय हुआ क्योंकि उसका जीवन और मरण मेरे हाथ में है। आप लोगों का सेवक अबिलाइनो बांका"।

ज्यों ही नृपति महाशयने इस विज्ञापनको पठन किया क्रोध की अधिकता से जल भुनकर भस्म होगये। और आज्ञा दी कि जो पुरुष इस दुष्टात्मा अविलाइनो का पता लगायेगा उसको शत स्वर्णमुद्रायें और जो उसको पकड़ेगा उसको सहस्र स्वर्ण-मुद्रायें पारितोषिक दूंगा।

यद्यपि स्वर्णमुद्राओं के लोभ में गुप्तचरोंने एक एक कोना खतरा छान डाला पर किसी को अविलाइनो का चिन्ह पर्य्यन्त हस्तगत न हुआ। उनके अतिरिक्त और बहुत से विषयी, लोभी और बुभुक्षित लोगोंने भी इसी आशा में शतशः प्रयत्न और बहुतेरी युक्तियां निकालीं परन्तु अबिलाइनो की पटुता के सामने किसी की एक भी न चली। प्रत्येक व्यक्ति कहता था, कि मैंने अविलाइनो को अमुक वेश में अमुक समय देखा है परन्तु कोई यह न कह सकता था कि दूसरे समय वह कहां और किस रूप में दिखलाई देगा।

त्रयोदश परिच्छेद।

गत परिच्छेद में मैं लिख चुका हूँ कि फ्लोडोआर्डो उदास रहता था और रोजाबिला रुजग्रस्त थी, परन्तु अब तक मैंने अपने पाठकों को उसकी वास्तवता से अभिज्ञ नहीं किया है इस लिये यहां उसका वर्णन आवश्यक है। फ्लोडोआर्डो जब वेनिस में पहले पहल आया तो लोग उसे आनन्द का स्वरूप समझते और जिस समाज में वह संयुक्त होता था, उस समाज के लोग उसको उसका प्राण जानते, परन्तु एकदिन कुछ ऐसे सन्ताप से उसका हृदय सन्तप्त हुआ जिससे उसका सम्पूर्ण आनन्द मिट्टी में मिल गया और संभवतः उसी दिन से रोजाबिला के रोगों के चिह्न भी प्रगट होने लगे। इसका विवरण यह है कि एक दिवस दैवात् रोजाबिला अपने पितृव्य के उस उपवन में भ्रमण के लिये गई, जहां नृपतिवर्य के प्राणोपम मित्रों के अतिरिक्त कोई दूसरा जाने न पाता था और जहां कभी कभी स्वयं महाराज संध्या समय एकाकी जाकर बैठा करते थे। वहां पहुंच कर वह अपने विचारों में डूबी हुई उपवन की छायावान पटरियों पर टहलने लगी। कभी वह झुंझला कर वृक्षों से पत्रोंको नोचती और पृथ्वी पर फेंकती, कभी अकस्मात् रुक जाती, कभी वेग से आगे बढ़ जाती, और फिर चुपचाप खड़ी होकर आकाश की ओर देखने लगती, कभी उसका हृदय तीव्रता के साथ धड़कने लगता, और कभी उसके ओठों से एक दबी हुई आह निकलती। अन्ततः वह आपही आप कह उठी, वह अत्यन्त सुन्दर है, और अपने सामने इस अनुराग के साथ देखने लगी जैसे उसे कोई वस्तु जो औरों को दिख

लाई नहीं देती देख पड़ती हो। फिर ठहर कर बोली तथापि कामिला ठीक कहती है, परन्तु उसके साथ ही इस रीति से नाक भौं चढ़ाई जैसे उसने कहा हो कि कामिला का कहना ठीक नहीं।

अब इस ठौर यह बर्णन करना आवश्यक है कि कामिला रोजाबिला की शिक्षका, उसकी सखी, उसका भेद जानने वाली और उसकी माता के स्थान पर थी। रोजाविला के पिता माता उसके बालपन ही में परलोकगामी हुये थे, उसकी माता ने उस समय संसार का त्याग किया था जब कि वह माता का शब्द कठिनता से कह सकती थी। उसका पिता गिस्कार्डो नामक कार्फू का गण्य मान्य पुरुष और वेनिसके एक युद्ध पोत का स्वामी (कप्तान) था जो आठवर्ष व्यतीत हुए कि एक लड़ाई में तुरुकों के हाथ से युवावस्था में ही मारा गया था। उस समय से कामिलाने जो एक अत्यन्त योग्य युवती थी रोजाविला को अपनी कन्या समान पालन किया था। उसके साथ वह इस रीति से व्यवहार करती थी कि रोजाबिला अपने अन्तःकरण का सम्पूर्ण भेद उससे कह दिया करती थी।

जब कि रोजाबिला उसकी बातों का ध्यान कर रही थी कामिला उपवन की एक द्वितीय दिशा से उसके सन्निकट आ पहुंची। रोजाविला चौंक उठी और कहने लगी "प्रिये कामिला क्या तुम हो? कहो तो तुम किसलिये आईं"।

कामिला—तुम प्रायः मुझे अपना रक्षक देवता कथन किया करती हो अतएव रक्षक देवता को सदैव उन बस्तुओं के पास वर्तमान रहना चाहिये जिनकी रक्षा का भार उनको समर्पण किया गया है।

रोजाविला-"कामिला मैं इस समय तुम्हारे सदुपदेशों को

स्मरण कर रही थी और भली भांति समझती हूं कि जो कुछ तुमने कहा है वह सर्वथा सत्य और युक्तियों से परिपूर्ण है" ।

कामिला-" परन्तु यद्यपि तुम्हारी बुद्धि मुझसे सहमत है तथापि तुम्हारा चित्त कुछ और ही परामर्श देता है " ।

रोज़ाबिला-" इसमें तो सन्देह नहीं " ।

कामिला-" पर पुत्री मैं तुम्हारे हृदय पर दोषारोपण भी नहीं कर सकती कि वह क्यों मेरी अनुमतिके बिरुद्ध है और क्यों मेरी बातों का प्रतिवाद करता है, वरन मैंने तुमसे स्पष्ट कह दिया है कि यदि मेरी अवस्था तुम्हारी सी होती और फ्लोडोआर्डो सा पुरुष परस्पर रखता तो कदापि मैं उसके साथ निठुरता न कर सकती। मैं स्वयं स्वीकार करती हूं कि इस अपरिचितका स्वरूप, आकृति, चाल ढाल बहुत ही उत्तम है और कोई स्त्री जिसका मन दूसरे पुरुष से न लगा हो ऐसी नहीं है जो इस पर मोहित न हो जावे । उसके सुन्दर मुखड़े में न जाने क्या बात है कि देखते ही जी उसे प्यार करने लगता है । इसके अतिरिक्त उसके ढंग अत्यंत मनोहर हैं और इन थोड़े दिवसों के अनन्तर जबसे कि वह वेनिस में आया है सब लोगों को बिदित होगया है कि उसमें बहुत से उत्तम और प्रशंसनीय गुण मौजूद हैं। पर खेदका विषय है कि फिर भी वह एक कंगाल पथिक है, अतएव यह संभव नहीं कि बेनिसके महाराज अपनी भ्रातृजा ऐसे व्यक्तिको दें जो सच पूछो तो यहां भिक्षुकों की सी अवस्था में आया। पुत्री विश्वास करो कि ऐसा पुरुष रोज़ाबिला का पाणिग्रहण करनेका अधिकारी नहीं है ।

रोज़ाबिला-" प्यारी कामिलो यहां पाणिग्रहण की चर्चा नहीं है ? मैंतो केवल फ्लोडो आर्डो से मित्रों की भांति प्रीति करती हूं "॥

कामिला-' सच कहो ! तब तो तुम अवश्य प्रसन्न होगी यदि बेनिसकी कोई धनवती युवती फ्लोडोआर्डो से ब्याह कर ले '।

रोजाविला-(शीघ्रता से) "नहीं कामिला, फ्लोडोआर्डो इसको कभी न स्वीकार करेगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है"।

कामिला-" पुत्री ! पुत्री !! तुम जान बूझकर अपने को भ्रान्त बनाती हो, परन्तु तुम पर क्या प्रत्येक स्त्री, जो किसी के स्नेहपाशबद्ध होती है, सदाके संयोग की चाहका सम्बन्ध मित्रता के विचार के साथ २ लगा लेती है, पर इस प्रकार की चाह तुम फ्लोडोआर्डो के विषय में पूरी नहीं कर सकती हो क्योंकि इससे तुम्हारे पितृव्य असंतुष्ट होंगे, कल्पना किया कि वे सत्पुरुष और दयालु व्यक्ति हैं परन्तु वे राजकीय प्रबन्ध, प्रणाली, रीति और नियम के सर्वथा वशवर्ती हैं ।

रोजाविला-" मैं कामिला इन सब बातों को भली भांति जानती हूं परन्तु तुम मेरा अभिप्रायही नहीं समझती हो, मैं तुमसे कहती हूं। फ्लोडोआर्डो पर मैं मोहित नहीं हूं और न उसका मोहन स्वरूप मेरे हृदय में प्रविष्ट हो कर मुझे मोह सकता है । मैं द्वितीय वार तुमसे कहती हूं कि मुझे फ्लोडोआर्डो के विषय में केवल सच्ची और पुनीत मित्रता का ध्यान है और इसमें सन्देह नहीं कि फ्लोडोआर्डो इस योग्य है कि मुझे उसका इतना ध्यान हो। मैंने कहा " इस योग्य है, हाय ! फ्लोडोआर्डो किस योग्य नहीं है "।

कामिला-" हां ! हां !! निस्सन्देह मित्रता के योग्य है बरन आसक्त होजाने के। खेद है कि रोजाविला तुम अभी नहीं जानती हो कि छल करनेवाले कुटने और कुटनियां परस्पर एक दूसरे का वेश परिवर्तन कर सीधी युवतियों के हृदय

को आक्रमण कर लेती हैं और प्रायः प्रीति मित्रताका परिच्छद धारण कर उन मानसों में प्रविष्ट होती है जहां वह अपने मुख्य स्वरूप के साथ जाना चाहती तो पास फटकने न पाती। संक्षेप यह कि पुत्री तुम इन बातों पर बिचार करो कि तुमारा कर्तव्य तुम्हारे पितृव्य की ओर क्या है और यदि उनको यह ज्ञात होगा तो वह कितना रुष्ट और खिन्न होंगे। अतएव मेरे परामर्श के अनुसार तुमको उचित है कि उस कर्तव्य के सामने इस धुनको हृदय से दूर करो, क्योंकि अभीतक कुशल है। जहां इसने अपना अधिकार तुम्हारे हृदय पर कर लिया फिर सहस्रशः प्रयत्न करोगी कुछ न बनपड़ेगा "।

रोजाबिला-"कामिला तुम सत्य कहती हो। मुझे भी विश्वास होता है कि फ्लोडोआर्डो के साथ जो एक प्रकार का मेरा सम्बन्ध होगया है वह केवल क्षणिक और कल्पित है, जिससे मैं सुगमता के साथ मुक्त हो सकती हूं। अच्छा अब तुम समझो कि मैं उससे प्रीति नहीं रखती बरन अब मुझे उससे कुछ घृणासी होती जाती है। क्योंकि तुम्हारे कथन से ज्ञात होता है कि उसके कारण मेरे दयालु और भले पितृव्य को संताप हो सकता है"।

कामिला-"(मुसका कर) क्या तुमको अपने कर्तव्य और अपने पितृव्य के उपकारों का इतना ध्यान है"।

रोजाबिला-"निस्सन्देह कामिला, मुझे इतना ध्यान है और विश्वास है कि थोड़े दिनों में तुम भी यही कहोगी। यह दुष्ट फ्लोडोआर्डो मुझको इतना दुःखदे, वह मन्दभाग्य वेनिस में क्यों आया। मैं तुमसे सत्य कहती हूं कि मैं फ्लोडोआर्डो के साथ अब तनिक स्नेह नहीं रखती"॥

कामिला-"हैं क्या फ्लोडोआर्डो के साथ तनिक स्नेह नहीं रखतीं"।

रोजाबिला-(आंखें नीची करके) " नहीं कदापि नहीं परन्तु मैं उसका अनिष्ट भी नहीं चाहती क्योंकि कामिला तुम भलीभांति जानती हो कि कोई कारण नहीं है कि मैं इस दीन फलोडोआर्डो के अनिष्ट का ध्यान करूं " ।

कामिला-" अच्छा मैं इस चर्चाको फिर किसी समय करूंगी । इस समय मुझे एक कार्य्य करना है और नौका मेरे लिये लगी हुई है । अब मैं जाती हूं परन्तु पुत्री जितना शीघ्र तुमने प्रण किया है उतना ही शीघ्र कहीं उसे त्याग न देना । "

यह कह कर कामिला चली गई और रोजाबिला इसी तर्क वितर्क में उदास बैठी रही । वह अपने हृदय में कुछ बातों का विचार करती और फिर उन्हें तत्काल दूर कर देती । किसी वस्तु की कांक्षा करती और फिर अपने लिये धिक्कार शब्द का प्रयोग करने लगती, क्योंकि वह चारों ओर दृष्टिपात करके इस रीतिसे देखती थी जैसे किसी वस्तुके अनुसन्धान में हो परन्तु मुखसे यह नहीं कह सकती कि वह क्या वस्तु है ।

कामिलाके चले जाने पर रोजाबिला इसी उधेड़ बुनमें थी कि एकबार आतप की प्रखरताने उसको उत्तप्त किया और अशक्त होकर उसे किसी छायावान स्थानमें शरण ग्रहण की आवश्यकता हुई । उपवन में एक ठौर एक छोटासा सरोवर था जिस पर लोहे की तिकठियोंके सहारे सुमनोंकी बेलें चढ़ाई गई थीं, इस कारण वहां प्रचण्ड मार्तण्डकी प्रखर किरणें प्रवेश नहीं कर सकती थीं, रोजबिला उसी ओर चल निकली परन्तु समीप पहुंच कर उसकी गति रुक गई और वह कुछ ठिठकी और लज्जितसी हुई । इसका कारण यह था कि उस सरोवर के कूलपर फलोडोआर्डो बैठा हुआ एक पत्र अत्यन्त सावधानता से देख रहा था । उसे देखकर रोजाबिला अपने हृदयमें सोचने लगी कि अब मैं यहां ठहरूं अथवा पलट जाऊं, परन्तु इससे

पूर्व कि वह कोई विचार निश्चित करे फ्लोडोआर्डोने जिसकी आकुलता प्रगट में उससे, न्यून न थी, अपने स्थानसे उठ कर उसका करपल्लव अत्यन्त सम्मान से स्व करकमलोंमें लिया और उसे सरोवर के कूलपर अपने स्थान पर लाकर बैठाया। अब रोजाबिला तत्काल वहां से प्रस्थान नहीं कर सकती थी क्योंकि ऐसी दशामें उठजाना असभ्यता में परिणत होता। फ्लोडोआर्डो उसका कोमल कर अपने हाथों में लियेरहा, परन्तु फ्लोडोआर्डो के लिये यह एक ऐसी साधारण बात थी कि उस समय वह इसके लिये उसको कुछ कह भी नहीं सकती थी। इसके अतिरिक्त उससे यह भी नहीं होसकता था कि वह अपने किशलय सदृश करको खींचले, क्योंकि वह यह बिचारती थी कि फ्लोडोआर्डो के हाथ में मेरा हाथ होनेसे मेरी कुछ क्षति नहीं, बरन उसको एक प्रकार का आनन्द है अतएव मैं क्यों ऐसा काम करूं कि किसीके ऐसे आनन्दको हरण करलूं जिसमें मेरी किसी प्रकार की हानि नहीं।

इधर तो रोजाबिला यह सोच रही थी और उधर न जानें फ्लोडोआर्डो के हृदय में कैसे कैसे अनुमान समूह अंकुरित हो रहे थे। निदान उससे देर तक मौन न बैठा गया इसलिये उसने बार्तालाप आरंभ करने के लिये कहा "राजकन्यके! आपने अच्छा किया कि इस समय वायु सेवनके लिये निकलीं देखिये कैसा सुहावना समय है"।

रोजाबिला—"परन्तु महाशय मैं अनुमान करती हूं कि मेरे आनेसे आपके पठन में बिघ्न पड़ा।"

फ्लोडोआर्डो—"कदापि नहीं"। इतनी बातें करके फिर वे लोग अल्पकाल के लिये चिन्तित होगये परन्तु इस अवसर पर कभी आकाश कभी वसुमती कभी वृक्षों और कुसुमकलिका ओंकी ओर दृष्टिपात करते जाते थे जिसमें समालाप करने

का कोई अवसर हस्तगतहो परन्तु जितनाही वे उसको खोजते थे उतनाही वह उनसे दूर भागता था । निदान इसी तर्क वितर्कमें दोनो ने अपना बहुतसा समय जो दैवात् हस्तगत हुआ था खोया ।

कुछ क्षण बाद रोजाविला इस सन्नाटेके निवारण करनेके लिये अचाञ्चक बोल उठी "यह कितना सुन्दर कुसुम है" और फिर उसने झुककर अत्यन्त अनुराग से एक लालाका कुसुम तोड़ लिया । इसके उत्तर में फलोडोआर्डोने अत्यन्त गम्भीरता से कहा "यह फूल निस्सन्देह सुन्दर है" परन्तु इसीके साथ वह स्वयं अपने पर अत्यन्त झुंझलाया कि ऐसा सूखा उत्तर मैंने क्यों दिया ।

रोजाबिला—"कोई रंग इस बैंगनी रंगको समता नहीं कर सकता । इसमें नीला और लाल रंग दोनों ऐसे मिले हैं कि कोई चित्रकार लाख चाहे यह बात पैदा नहीं कर सकता" ।

फलोडोआर्डो—"लाल और नीला ? एक हर्षका चिह्न और दूसरा प्रीतिका । हाय ! रोजाबिला वह कौन ऐसा भाग्यवान होगा जिसको आप अपने कोमल करसे यह फूल प्रदान करेंगी आप जानती हैं कि हर्ष और प्रीति उस लालाके नीले और लाल रंग की अपेक्षा कहीं बिशेषता के साथ एक दूसरे से सम्मिलित हैं" ।

रोजाबिलो—"महाशय आपने तो उस कुसुमकी पदवी इतनी बढ़ादी जिसके योग्य वह नहीं है" ।

फलोडोआर्डो—"भला मुझे ज्ञात होसकता है कि किसको आप वे बस्तुयें देंगी जो उस सुमनसे प्रकट होती हैं ? परन्तु यह एक ऐसी बात है जिसके विषयमें मुझको कुछ बात चीत न करनी चाहिये । न जानें मुझे आज क्या होगयाहै कि प्रत्येक कार्य्यमें मुझसे चूक होती है, राजतनये आप

मेरे इस अपराध को क्षमा करें, अन्यथा मैं कभी ऐसे प्रश्न न करूंगा"।

यह कहकर वह चुप होगया और रोज़ाबिला भी चुप रही। उस समय उन दोनों प्रेमियों के हृदयके अतिरिक्त प्रत्येक ओर सन्नाटा था, यद्यपि वे अपनी रसना से निज प्रच्छन्न प्रीतिका भेद नहीं कहते थे, यद्यपि रोजाबिलाने अपने मुखसे न कहा था कि फ्लोडोआर्डो तूही वह पुरुष है जिसे यह सुमन मिलेगा, और यद्यपि फ्लोडोआर्डो की जिह्वासे न निकला था कि रोजा-विला वह लाला और जो वस्तुयें उससे प्रकट होती हैं मुझी को दो। तथापि उनकी आंखें चुप न थीं। इन कुटनियोंने जो लोगोंके विचारों को तत्काल समझ लेती हैं एक द्वितीय से बहुत कुछ भेद जो उनके हृदयोंने अद्यावधि स्वयं उन पर प्रकट नहीं किये थे, कह दिये। फ्लोडोआर्डो और रोजाबिला एक द्वितीय को ऐसी दृष्टियों से अवलोकन कर रहे थे कि समालाप की कोई आवश्यकता न थी। जब फ्लोडोआर्डो की आंख रोजाबिला पर पड़ती थी तो वह एक अत्यन्त प्रिय कटाक्षके साथ जिससे सर्वथा प्रीति टपकती थी मुसकराती थी और फ्लोडोआर्डो भय और आशाकी दृष्टिसे उसके अर्थका अनुधावन करता था। निदान उसने उसके अभिप्रायको समझ लिया जिससे उसके हृदय की उद्विग्नता और बढ़ गई और चक्षुओं पर एक मद सा छा गया। यह दशा देख कर रोजाविला कांपने लगी क्योंकि उसकी आंखें उसकी दृष्टि की तीव्रता को नहीं सहन कर सकती थीं। इसी अशक्तता की दशामें फ्लोडोआर्डोने रोजाविलाके जलजात पदों पर गिरकर अत्यन्त विनीत और नम्रता और गिड़गिड़ाहट के साथ कहा "रोजाविला परमेश्वर के लिये मुझे वह पुष्प प्रदान करो।"

रोजाविला ने कुछ उत्तर न दिया और कुसुम को अपने हाथ में दृढ़ता के साथ पकड़े रही।

फ्लोडो आर्डो—"इस सरस कुसुम के बदले में तुम जो कुछ चाहो मांगो, यदि इसके बदले में राज्य की भी याचना करोगी तो प्रदान करूंगा, अथवा उसकी खोज में अपना प्रिय प्राण नष्ट करूंगा परन्तु परमेश्वर के लिये रोजाविला यह पुष्प मुझे प्रदान करो"।

रोजाविलाने एकवार तिरछी चितवन से उस स्वरूपमान युवक की ओर देखा, परन्तु पुनरावलोकन का साहस न हुआ।

फ्लोडोआर्डो—"मेरा सुख, मेरा हर्ष, मेरा जीवन, बरन मेरा महत्व, ये सब वस्तुयें उस प्रसून के हस्तगत होने पर निर्भर हैं। केवल उसे मुझे दो और मैं संसार की सकल बहु-मूल्य वस्तुओं से इसी समय विरक्त होता हूं"।

उसकी इस प्रेम भरी और मोहमयी बातचीत से रोजा-विला का करकंज जिसमें वह प्रसून था कांपने लगा और चुटकी भी कुछ ढीली हो चली।

फ्लोडोआर्डो—'क्यों रोजाविला तुम कुछ मेरी भी सुनती हो? मैं तुम्हारे चरणकमलों पर निज शिर रक्खे हुए हूं। क्या तुम मेरी याचना को जिसको मैंने भिक्षुकों की भांति की है पूरा न करोगी"?

इस भिक्षुक शब्द पर रोजाविला को कामिला की शिक्षा-ओं का तत्काल स्मरण हो आया और वह अपने मनमें कहने लगी "ऐ मैं क्या कर रही हूं अभी से मैंने अपना प्रण तज दिया? बस रोजाविला यहीं से मुड़ नहीं तो इसी क्षण तू वात की झूठी होती है"। यह सोच के उसने कुसुम को खण्ड खण्ड करके पृथ्वी पर फेंक दिया। और फ्लोडोआर्डो से कहा "फ्लोडोआर्डो मैं तुम्हारा आंतरिक अभिप्राय समझ गई इस

लिये तुमको सावधान और सतर्क करती हूं कि पुनः ऐसा समालाप न करना। अब मैं गमन करती हूं और तुम को जताये देती हूं कि ऐसी धृष्टता से फिर मुझको कभी संतप्त न करना।

इतना कह कर वह उसके निकट से तिनक कर चली गई और वह दीन प्रेमपाश बद्ध अपने स्थान पर आश्चर्य्य और संताप के साथ चित्र बना बैठा रह गया।

चतुर्दश परिच्छेद।

उपवन से आकर रोजाविला अपने सुसज्जित आयतन पर्य्यन्त भी न पहुंची थी, कि मार्ग ही में उसने स्वकृत कर्म पर पश्चाताप करना प्रारम्भ किया। उस समय शतशः विचार उसके अन्तःकरण में उठने लगे। किसी समय वह अपने मन में कहती थी कि मुझको फ्रोडोआर्डो को ऐसा कठोर और सूखा उत्तर देना कथमपि समुचित न था यह मैंने उस पर बड़ा अन्याय किया। कभी उसकी उस काल की दशा को वह स्मरण करती थी जब कि वह उसके निकट से रुष्ट होकर चली आई थी और वह बेचारा एक भित्ति निर्मित चित्र सदृश उसको खड़ा अनिमेष तकता रह गया था। फिर वह सोचती थी कि फ्रोडोआर्डो यह संताप न सहन कर सकेगा और निस्सन्देह विलाप करते करते प्राण त्याग देगा। अभी से उसे ऐसा ज्ञात होता था जैसे वह इस लोक को छोड़ परलोकगामी हुआ हो और लोग उसके समाधि के इतस्ततः रुदन कर रहे हों। निदान इन बातों का ध्यान करके वह आप ही आप रो रो कर कहने लगी "शोक!

शोक !! इस समय स्वयं मैंने ऐसी दृढ़ता प्रगट की, अभी से मेरा धैर्य्य और हृदय बल विनष्ट हुआ जाता है। हाय ! फ्रोडोआर्डो जो कुछ मैंने इस निश्शीला जिह्वा से कहा वह मेरे हृदय में कदापि न था। अब मैं तुम से स्नेह करती हूं और सर्वदैव करूंगी चाहे कामिला असंतुष्ट अथवा अप्रसन्न हो और चाहे मेरे पूज्य पितृव्य मुझसे घृणा अथवा द्वेष करें"।

इस घटना के अल्प ही दिवसोपरांत उसको ज्ञात हुआ कि फ्रोडोआर्डो ने निज प्रकृति और प्रणाली बदल दी है और समग्र सहवासों और संगतों से पृथक रहता है। यदि कभी किसी मित्र के अनुरोध उपरोध से किसी उत्सव में संयुक्त भी होता है तो उसका मुख मलीन और चित्त उदासीन रहता है और उसके ढंग से ज्ञात होता है कि वह किसी ऐसे हो सन्ताप से संतप्त हुआ है जिसका प्रभाव उसके हृदय पर अब तक शेष है। यह वृत्तान्त श्रवण कर रोजाबिला के हृदय को अत्यन्त उद्विग्नता हुई और वह निज आयतन में जाकर रुदन करने लगी। उस दिन से सदा उसको इसी बात का संताप रहता था और वह प्रतिदिन क्षीण होती जाती थी, यहां तक कि कुछ दिनों में उसकी दशा पूर्णतया असन्तोषजनक और हीन हो गई और भूमिनाथ को उसके स्वास्थ्य में अंतर पड़ने की आशङ्का हुई। फ्रोडोआर्डो के उदासीन होने और एकान्त वास स्वीकार करने का भी यही कारण था कि वह रोजाविला को जिसके कारण से वह समारोहों में संयुक्त हुआ करता था अब कहीं न पाता था।

अब यहां इस आख्यान को छोड़कर फिर उन विप्लव कारियों और विद्रोहियों की चर्चा प्रारंभ होती है जो अहर्निशि अंड्रियास और उसके शाशनाधिकार के नाश करने की चिन्ता में रहते थे और जिनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती जाती थी-यहां

तक कि अब परोजी, मिमो, कांटेराइनों और फलीरी को जो इस भयंकर विप्लव के अग्रगण्य थे अपने कार्य्य के सिद्ध होने के विषय में कुछ समाधान और विश्वास होता जाता था और वे पादरी गानूजेगा के प्रासाद में प्रायः एकत्रित होकर वेनिसकी क्रान्ति और राज्य परिवर्तन के विषय में बहुतसी युक्तियां सोचते और उन पर विवाद और कथनोपकथन करते थे, परन्तु जितनी युक्तियां सामने आती थीं प्रत्येक से यही सिद्ध होता था कि उनका निर्धारण करने वाला केवल अपने ही प्रयोजन का ध्यान रखता है। किसी का यह अभिप्राय होता था कि किसी प्रकार ऋणसे मुक्त हों तो उत्तम है, कोई अपनी कामना के सामने अपर सम्पूर्ण बातों को व्यर्थ समझता था, किसी के हृदय में नराधिप और उनके अन्तरङ्गों के धनका लोभ समाया हुआ था और कोई किसीके कल्पित अपराध पर उसका जीवन समाप्त करने की चिन्ता रखता था। अभिप्राय यह कि इन दुष्टात्माओं को, जो वेनिस का सत्यानाश अथवा और नहीं तो उसके प्रबन्ध की बुराई चाहते थे, अब पूरा भरोसा होगया कि वह अपनी कामनाके सिद्ध होनेमें सफल मनोरथ होंगे, क्योंकि उन दिनों एक नवीन कर (टैक्स) के प्रचलित होनेसे वेनिस के लोग वहां के शाशकोंसे कुछ अप्रसन्न हो रहे थे। परन्तु यद्यपि कि इन लोगों के पास सम्पत्ति और सहाय दोनों वस्तुयें इतनी थीं कि वे अपनी कामनाओं को भली भांति पूर्ण कर सकते थे और इस कारण अंड्रियास को जिसे अद्यपर्यन्त उनके नैश अधिवेशनों का तनिक भी भेद न ज्ञात हुआ था तुच्छ समझते थे तथापि उनका यह साहस नहीं होता था कि उस कार्यको विना कतिपय लोगों को ठिकाने लगाये हुये कर डालें क्योंकि उन को सदा आशङ्का बनी रहती थी कि ऐसा न हो कहीं ठीक

समय पर वे लोग कोई ऐसा बल डाल दें जिससे उनकी सारी युक्तियां मिट्टीमें मिल जाँय। इस कार्य्य के सफल होने का भार वे डाकुओं पर डाले हुये थे और इस कारण से जिस समय उनको चारों डाकुओं के फांसी पाने की बात ज्ञात हुई, वे अत्यन्त घबराये और उन्होंने यह समझा कि अब उनकी सम्पूर्ण आशायें विनष्ट हो गईं। परन्तु इस बातको सुन कर उनको जितनी व्यग्रता हुई थी उतनाही हर्ष उनको उस समय प्राप्त हुआ जब कि अबिलाइनों ने सम्पूर्ण बेनिसको सावधान कर दिया कि अब तक बेनिस में डाकुओं का चचा विद्यमान है, जो विद्रोही चाहे उससे सहायता ले। विज्ञापन के देखते ही वे लोग मारे हर्ष के उछल पड़े और एक मुंह से कह उठे कि यही मनुष्य हमारे गँवका है। उस दिनसे उनको यह चिन्ता हुई कि जैसे सम्भव हो अबिलाइनों को अपना सहायक बनाओ। यह अभिप्राय उनका अति शीघ्र सफल होगया क्योंकि एक तो वे उस दुष्ट की खोज में रहते थे और दूसरे वह स्वयं उनसे मिलना चाहता था, अतएव थोड़े ही दिनोंमें वह उनके समाजों में सम्मिलित होने लगा परन्तु प्रत्येक कार्यके लिये उनके बूते से अधिक पुरस्कार मांगता था।

परोज़ी और उसके सहकारी सबके प्रथम कुनारी का नाश चाहते थे क्योंकि उसका सम्मान नृपति महाशय के निकट और लोगोंसे अधिक था और उन्होंने पादरी गानूजेगाके स्थान पर उसको राज्य के एक बड़े पद पर नियुक्त किया था। इसके अतिरिक्त उस पुरुष के चातुर्य्य से वे प्रत्येक समय कांपते रहते थे। कि ऐसा न हो कि कहीं वह भेद जान ले और हमलोगों की सम्पूर्ण आशाओं को मिट्टी में मिला दे। इन कारणों से उन्होंने अबिलाइनोसे कुनारी के मार डालनेकी कामना प्रगट की, परन्तु वह उसी एक व्यक्ति के लिये बहुत

मुद्रायें मांगता था । उसका कथन था कि तुम मुझे इतनी मुद्रायें प्रदान करो तो मैं तुमसे पक्का वादा करता हूं कि आज की रात के बाद फिर कुनारी तुमको कभी दुःख न दे सकेगा। चाहे उसे कोई स्वर्गमें लेजाय अथवा नरक में छिपाये मैं उसे अवश्य मारूंगा। अब वह क्या कर सकते थे अबिलाइनो ऐसा पुरुष न था, जो मुंह मांगे पारितोषिक में न्यूनता करता और पादरी महाशय को यह उद्विग्नता थी कि किसी प्रकार फिर उसी पद पर नियुक्त हूं-परन्तु यह बात कुनारी के बिनाश पर निर्भर थी इस लिये बिबश होकर उनको अबिलाइनो को मुँह मांगा पुरस्कार देना पड़ा, और दूसरे दिन कुनारी नृपति महाशय का प्राणोपम मित्र और वेनिस का महत्व संसार से उठ गया। जिस समय उन दुष्टों को यह समाचार ज्ञात हुआ उन्होंने पादरी महाशय के आवास में परमानन्द से मद्पान किया, और परस्पर आनन्द और हर्ष के साथ बधाइयां दी गईं परन्तु नृपति महाशय को भय और आश्चर्य से बुरी गति थी। उन्होंने नगर और अपने राज्य भरमें ठौर २ यह सूचना दे दी और घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति कुनारी के नाशक का पता लगायेगा उसे दश सहस्र स्वर्णमुद्रा पुरस्कार मिलेगा। इस घोषणा के कुछ दिनों बादही वेनिसके मुख्य मुख्य स्थानों पर एक पत्र लगा हुआ दृष्टिगोचर हुआ जिसका यह आशय था।

"ऐ वेनिस निवासियो! तुमलोग कुनारी के नाशक का नाम जानना चाहते हो, इसलिये तुमको व्यर्थके असमञ्जस से बचाने के लिये मैं शपथ करके कहता हूँ कि मैं अबिलाइनो उसका नाशक हूँ। दो बार मैंने अपना कटार उसके हृदय में भोंक दिया और फिर मत्स्यनिकरों के खादन के लिये उसका शव तरङ्गिणी में फेंक दिया। महाराजने घोषणा की है कि जो व्यक्ति कुनारीके नाशक का अनुसन्धान लगायेगा उसे बीस सहस्र

स्वर्ण मुद्रायें मिलेंगी और मैं अबिलाइनो सूचित करता हूँ कि जो व्यक्ति उसे पकड़ेगा मैं अपनी ओर से उसे तीस सहस्र स्वर्ण मुद्रायें प्रदान करूंगा–प्रणाम–आपलोगों का सेवक अबिलाइनो बांका" ।

पञ्चदश परिच्छेद ।

अबिलाइनो की इस नवीन धृष्टता पर जिसका वर्णन परिच्छेद के अन्त में हो चुका है वेनिस के सब लोग अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उसके पकड़ने का प्रयत्न तन मन से करने लगे । इसका कारण यह था कि वेनिस राज्य के स्थापित होने के समय से लेकर उस समय पर्यन्त किसी चोर अथवा डाकू को इतना साहस न हुआ था कि वहां की प्रख्यात पुलिस के साथ ऐसी तुच्छता से व्यवहार करे जैसी कि अबिलाइनो के विज्ञापन से प्रगट थी और न तब तक नृपति महाशय का सामना किसी ने इस धृष्टता के साथ किया था। इस दुर्घटना के कारण सम्पूर्ण नगर में हलचल मच गई थी। जिसको देखिये वह अबिलाइनो के अनुसन्धान में था, प्रहरी अधिक कर दिये गये थे, पुलीस प्रत्येक ओर पता लगाती फिरती थी परन्तु किसी को अबिलाइनो का तनिक भी सुनगुन हस्तगत न होता था ।

इसके अतिरिक्त पादरी इत्यादि ईश्वराराधन के समय वर याचना करते और मनौती मानते थे कि ऐ परमेश्वर इस दुष्टात्मा को अपने कोपानल में भस्म कर । युवती स्त्रियां अविलाइनो के नाम से अचेत हो जाती थीं क्योंकि उनको सदा खटका रह-

ता था कि ऐसा न हो कहीं अविलाइनो मेरे समीप भी वैसे ही आकर उपस्थित हो जैसे कि रोजाबिलाके समीप आया था। अब रहीं वृद्ध स्त्रियां वे इन बातों पर सहमत थीं कि अबिलाइनोंने अपने को दुर्दैवके हाथ बेंच डाला है और उसकी सहायता से वेनिस निवासियों के साथ ऐसी दुष्टता करता है। पादरी गान्जेगा और उनके सहवासियों को अपने नूतन सहकारी पर अभिमान (फख़र) था। और उनको पूर्ण आशा होगई थी कि अब हमारे सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होजायँगे। बेचारे कुनारी के स्त्री-पुत्रादि अबिलाइनो के लिये परमेश्वर से उसकी अनिष्ट के प्रार्थी थे और यह चाहते थे कि उनकी अश्रु प्रवाहजनित सरिता उस दुष्टात्मा को बहा ले जाय जो उनके बंशकी अवनति का कारण हुआ। परन्तु कुनारी की मृत्यु का शोक जितना नृपति महाशय और उनके दोनों मन्त्रदाताओं को था, अन्य को न था, उन लोगोंने निश्चय कर लिया था कि जब तक हम लोग उस दुष्ट के रहने का स्थान न खोज लेंगे, और उसको दण्ड न दे लेंगे उस समय तक हमारे लिये सुख और आराम अबिहित होगा।

एक दिन नृपति अंड्रियास अपने मुख्य आयतन में अकले बैठे हुए थे कि अकस्मात् उनको अबिलाइनो का कुछ स्मरण हो आया और वह स्वगत कहने लगे "अच्छा जो कुछ हुआ सो हुआ पर इसमें संदेह नहीं है कि यह अबिलाइनो अद्भुत व्यक्ति है क्योंकि जो पुरुष ऐसे कार्य करसकता है जैसे इस समय पर्य्यन्त अबिलाइनो ने किये हैं उसमें (पूर्ण विश्वास है कि) योग्यता और पराक्रम इतना होगा कि यदि उसके अधिकार में कुछ सेना हो तो वह आधे संसार को बिजय करले। परमेश्वर करता कि मैं भी उसको एक बार अवलोकन कर लेता"।

"अच्छा ऊपर देखिये" यह वाक्य अविलाइनो ने ललकार कर कहा और उसीके साथ महाराज के कन्धे पर धीरे से ठोंक दिया। अंड्रियास चौंक उठा। क्या देखता है कि उसके सम्मुख एक पर्वत से डील डौल का मनुष्य असित परिच्छद धारण किये खड़ा है और उसका ऐसा भयानक स्वरूप है कि विश्वमें वसा किसीका न होगा। नृपति महाशयने घबरा कर पूछा "तू कौन है"।

अबिलाइनों–"तू मुझे देखता है और फिर भी पहचान नहीं सकता? मैं अविलाइनो तुम्हारे स्वर्गीय कुनारीका मित्र और इस राज्य का आश्रित सेवक हूं"।

अबिलाइनोकी इस धृष्टता से उस समय वीर अंड्रियास का धैर्य्य कतिपय क्षणके लिये हाथसे जाता रहा। जिसे कभी स्थल अथवा जल संग्राम से भय उत्पन्न नहीं हुआ था और जिसका साहस किसी भयोत्पादक घटना के कारण से न छूटा था उस पर अचाञ्चक ऐसा आतंक छा गया कि वह कुछ काल पर्यन्त अबिलाइनो को जो अत्यंत निर्भयता और निश्शंकता के साथ अंड्रियास के सामने खड़ा था चित्रसदृश परिचालना हीन होकर देखता रहा। यह दशा देखकर अबिलाइनो ने अंड्रियास से निर्भयों की भांति संकेत किया और अत्यन्त विलक्षणता से कीशों के समान दन्तदर्शन पूर्वक हास्य किया। जब नृपति महाशय को चैतन्य प्राप्त हुआ तो उनकी जिह्वा से यही निकला कि "अबिलाइनो तू इस योग्य है कि मनुष्य तुझ से त्रस्त हो और घृणा करे"।

अबिलाइनो–"मैं इस योग्य हूं कि मनुष्य मुझसे भयभीत हो! तूभी ऐसा विचार करता है? अच्छा, मैं इसको श्रवण कर अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ। मैं इस योग्य हूं कि मुझसे मनुष्य घृणा करे, कदाचित मैं ऐसा हूं अथवा नहीं हूं। मैं स्वीकार

करता हूँ कि प्रगट में मेरे जैसे कर्म हैं उनसे निस्सन्देह यही आशा हो सकती है कि कोई मुझे हृदय में अच्छा न समझता होगा पर यह बात पक्की है कि हम और तुम दोनों एकही मार्ग पर गमन कर रहे हैं, क्योंकि वेनिस में इस समय हमीं दो बड़े व्यक्ति हैं, तुम अपने ढङ्ग पर और मैं अपने ढङ्ग पर" ॥

उसके इस निशूशंक संभाषण पर नृपति महाशय को बड़ी हँसी आई ॥

अबिलाइनो-" न न न महोदय मेरे कथन को असत्य समझ कर न हँसिये, मान लिया कि मैं डाकू हूँ, पर मैं महाराज की समानता निस्सन्देह कर सकता हूँ, मेरे निकट यह कोई महत्व की बात नहीं है कि मैं अपने को ऐसे व्यक्ति के तुल्य कहता हूँ जो मेरे अधिकार में है और इस लिये मेरे अधोभाग में उसका संस्थान है" ॥

अब नृपति महाशय इस रीति से उठकर खड़े हुये जैसे उनकी इच्छा निकल भागने की हो। इस पर अबिलाइनों ने असभ्य रीति से अट्टहास किया और उनका पथावरोध कर कहा " ऐसी शीघ्रता नहीं, क्योंकि संयोग से कभी दो ऐसे बड़े लोग ऐसे संकीर्ण और संकुचित स्थान में जैसी यह कोठरी है एकत्र होते हैं। तुम जहां हो वहीं ठहरे रहो, अभी तुमसे कुछ और बातें करनी हैं" ॥

अंड्रियास-(अत्यन्त गंभीरता से) "सुन ऐ अबिलाइनो परमेश्वर ने तुझमें योग्यता कूट कूट कर भरी है फिर तू उन्हें इस प्रकार क्यों व्यर्थ व्यय करता है। मैं तुझसे सत्यता पूर्वक बचन बद्ध होता हूँ, कि यदि तू उस पुरुष का नाम बतला दे जिसने कुनारी का बध कराया, अपनी जीवनवृत्ति से घृणा करे और इस राज्य की सेवा स्वीकार करे, तो मैं तेरे अपराधों को क्षमा कर दूँ और अगत्या तेरा सहायक रहूँ यदि यह भी

तुझे स्वीकार न हो तो तत्काल वेनिस के राज्य से निकल जा नहीं तो मैं शपथ करता हूँ कि " ॥

" अहा ! आप क्षमा और सहायता की चर्चा करते हैं, बहुत काल हुआ कि मैंने ऐसी व्यर्थ बातों का ध्यान छोड़ दिया। अबिलाइनो आप अपनी रक्षा बिना दूसरे व्यक्ति की सहायता के कर सकता है। रही क्षमा सो कोई मनुष्य मुझे ऐसे अपराधों से जो मैंने किये हैं मुक्त नहीं कर सकता। उस दिन जब कि सब लोग निजकृत अपराधों की तालिका अर्पण करेंगे मैं भी अपनी उपस्थित करूँगा परन्तु अभी कदापि नहीं। आप उस पुरुष का नाम जानना चाहते हैं। जिसने कुनारी को मेरे पुष्टकरों से वध कराया ? अच्छा आपको ज्ञात हो जायगा परन्तु आज नहीं। आप कहते हैं कि मैं वेनिस से निकल जाऊं ? क्यों ? मैं वेनिस से नहीं डरता, वरन वेनिस मुझसे स्वयं भय करता है। आपकी इच्छा है कि मैं अपने काम को छोड़ दूँ बहुत उत्तम परन्तु एक नियम के साथ –" ॥

अंड्रियास–(परमानुराग से) " कहो ! यदि तुमको दश सहस्र स्वर्ण मुद्रायें मिलें तब तो यहां से चले जावोगे ? " ॥

अबिलाइनो–" मैं आप तुमको अत्यन्त प्रसन्नता से द्विगुण दूंगा यदि तुम अपने इस अयोग्य विचार को छोड़ दो कि अबिलाइनो ऐसे तुच्छ द्रव्यको अंगीकार करेगा। नहीं अंड्रियास केवल एक ही रीति मुझे प्रसन्न करने की है ! तुम अपनी भ्रातृजा का विवाह मेरे साथ कर दो क्योंकि मैं रोज़ा-बिला पर मोहित हूं " ॥

अंड्रियास–" ऐ दुष्टात्मा यह कैसा अपमान है " ॥

अबिलाइनो–(अट्टहास करके) " सुनो चचा क्या तुम मेरे कथन को न स्वीकार करोगे ? " ॥

अंड्रियास–" तुम जितनी मुद्रायें चाहो मैं अभी उपस्थित

करूँगा परन्तु इस नियम के साथ कि तुम अभी वेनिस से निकल जावो। यदि वेनिस को दश लक्ष स्वर्ण मुद्रायें भी देनी पड़ेंगी, तो वह अपना लाभ समझेगा क्योंकि उसकी वायु तुम्हारे विषमय श्वास से परिष्कृत हो जायगी।

अविलाइनो-" सच कहो! तुम्हारे निकट मानो दश लक्ष मुद्रा बहुत है, अभी मैंने पंच लक्ष स्वर्ण मुद्रापर तुम्हारे दोनों मित्र लोमेलाइनो और मानफ्रोनके बध करने का बीड़ा लिया है! यदि रोजाविला को मुझे अर्पण करो तो मैं अभी इस कर्म से हाथ उठाता हूँ" ॥

अंड्रियास-" हा! दुष्टात्मा अभागे! तेरे ऊपर परमेश्वरका कोप भी नहीं होता" ॥

अविलाइनो-" अच्छा तो ज्ञात हुआ कि आप मेरे कथन को न स्वीकार कीजियेगा, स्मरण रखिये कि साठ दण्ड के बाद मानफ़रोन और लोमेलाइनो जलचरों के भक्ष्य होंगे। बस अवि-लाइनो ने कह दिया" ॥

यह कहकर अविलाइनो ने अपनी बगल से एक पिस्तौल निकाली और उसे अंड्रियास के मुख पर छोड़ दी। अंड्रियास बारूद के धूम्र और पिस्तौल के अचाअक छूटने से व्यस्त होकर हटगये और एक सज्या पर गिर पड़े। परन्तु कुछ काल के बाद जब इनको चेतना हुई तो वह अपने स्थान से वेगसे उठे, इसलिये कि सिपाहियों को पुकारें और अविलाइनो को पकड़वायें परन्तु अविलाइनो इतने समय में अन्तर्हित हो गया था ॥

उसी दिन सन्ध्या-समय परोज़ी, और उसके मित्र, पादरी गानूज़ेनाके प्रशस्त प्रासादमें एकत्र थे, पात्रों में भांति भांति के व्यञ्जन और पदार्थ भरे हुए थे और मद्पान उमंग से हो रहा था। प्रत्येक व्यक्ति प्रलाप में उन्मत्त था। पादरी गानूज़ेना

कह रहे थे कि मैंने इन दिनों महाराज के स्वभाव में अधिकार लाभ किया है और उनके हृदय में यह बात बैठाल दी है कि तुम लोग मान्य पदों पर नियुक्त किये जाने के योग्य हो। काण्टेराइनो का अनुमान था कि कुनारी के पद पर मैं नियुक्त किया जाऊँगा, परोजी समझता था कि रोजाबिला मेरे हस्तगत होगी और जब वह दोनों कंटक लोमेलाइनो और मानफ़रोन निकल जायंगे तो उनमें से किसीका पद प्राप्त हो जायगा। अभिप्राय यह कि इसी प्रकार की बात चीत परस्पर हो रही थी कि घड़ियालीने बारह का गजर बजाया, द्वारका कपाट अकस्मात् खुल गया और अबिलाइनो उन लोगों के सामने आ कर विद्यमान हुआ ॥

अविलाइनो-" सुरा दो ! सुरा ! मैं उनका नाश कर चुका लोमेलाइनो और मानफरोन जलचरों का न्योता करने गये। " इस शुभ समाचार को श्रवण कर सब उछल पड़े, और अबिलाइनो को आश्चर्य्य की दृष्टि से अवलोकन करने लगे ॥

अबिलाइनो-" और मैंने महाराज को भी ऐसा डरा दिया है कि कदाचित् कठिनता से उनकी सुधि ठिकाने होगी। अब कहो तुम लोग मुझसे प्रसन्न हुए ? " ॥

परोजी-अब फ्लोडोआर्डो का वध करना चाहिये " ॥

अबिलाइनो-(दांत पीसकर) "फ्लोडोआर्डो का, यह कोई साधारण बात नहीं है ॥

षोड़श परिच्छेद ।

इस समय जब कि वेनिस में प्रति दिन एक नवीन घटना घटित होती थी रोजाविला की मांदगी में कुछभी न्यूनता न थी बरन वह दिन दूनी रात चौगुनी होती थी। उसके रोग की वास्तवता से कोई अभिज्ञ न था परन्तु प्रगट में सब लोग देखते थे कि उसकी दशा हीन होती जाती है, और वह नवयौवन, वह सुन्दर स्वरूप, और वह माधुर्य्य सब बिनष्ट हुआ जाता है ! प्रेम महाशय की सहायता से अब उसकी यहां तक दशा पहुँची थी कि जीवन भारी था। फ्लोडोआर्डो का सजीला डील, हास्य-विशिष्ट मुख और तिरछी चितवन उसकी दृष्टि में वेढंग समा गई थी और वह प्रत्येक समय उसकी दृष्टियों में फिरा करता था। परन्तु यदि रोजाविला की यह दशा थी तो फ्लोडोआर्डो की दशा इससे कब उत्तम हो सकती थी। उसने सकल सहवासों से विरक्ति ग्रहण की थी, केवल निजायतन से सम्बन्ध रखता था और अपने विचारोंके सटीक अथवा यथावत् रखने के लिये दूर दूर का अटन करता था, परन्तु जहां जाता था दुष्ट प्रेम छायाकी भांति पीछा न छोड़ता था। इस वार उसे गये हुये तीन सप्ताह हो चुके थे परन्तु किसी को यह न ज्ञात था कि वह किस नगर में है। उसकी अनुपस्थिति में मोनालडश्री का राजकुमार जिसका विवाह रोजाबिलाके साथ निश्चित हो चुका था अपना परिणय करने के लिये वेनिस में आया परन्तु एक मास प्रथम महाराज को उसके आने का समाचार श्रवण कर जितना हर्ष होता अब वह शेष न था। इसके अतिरिक्त रोजाबिला भी रोगाक्रांत होनेके कारण उस समागतसे समागम नहीं कर

सकती थी, और न उसको इतना समय प्राप्त हुआ कि वह निरोग हो जानेके उपरांत उसकी अभ्यर्थना करे क्योंकि वेनिस में आनेके छठे दिवस उसे लोगों ने एक मुख्य राज्योपवन में मृतक पाया। उसकी करवाल लहू भरी पड़ी थी और उसकी नोटबुक गुम थी, उसका केवल एक पत्र हस्तगत हुआ, जिसे किसीने उक्त पुस्तक से निकाल कर शोणित द्वारा यह लिख कर उसके वक्षस्थल पर लगा दिया था " जो पुरुष रोज़ाबिला के साथ पाणिग्रहण करने की आकांक्षा करेगा उसके लिये यही दण्ड उचित होगा " अबिलाइनो बांका "।

जब यह समाचार महाराज के कर्णगत हुआ तो उनकी संज्ञा नष्टप्राय हो गई, और वह शोकसे विह्वल होकर कहने लगे " हाय! अब मैं कहां पलायित हो कर जाऊं, ऐसे दुस्समय में फ्लोआर्डो भी नहीं है, कि मेरा समाधान तो करता "। अब महाराज को अहर्निशि यही ध्यान था, कि किसी प्रकार फ्लोडोआर्डो यहां आजाता तो अतीवोत्तम होता, इसलिये कि ऐसी आपदा में उनकी सहायता करता। बारे परमेश्वर की अनुकंपा से उनकी मनोकामना सफल हुई, और फ्लोडोआर्डो यात्रा समाप्त करके फिर आया।

अंड्रियास-"प्रियवर! धन्य! अच्छे अवसर पर तुम आये, अगत्या तुम कभी मेरी दृष्टिसे दूर न होना, मैं इस समय विना आत्मरक्षक और सहायक का हो रहा हूं, तुमने सुना होगा कि लोमेलाइनो और मान्फरोन"।

फ्लोडोआडो-(शोकितों कासा स्वरूप बनाकर) "मैं सब जानता हूं"।

अंड्रियास-ऐसा ज्ञात होता है कि किसी महाराक्षस ने पुनर्जन्म ग्रहण किया है और अब वेनिसमें अबिलाइनो नाम रखकर मेरे सत्यानाशके लिये बद्धपरिकर है। अथवा प्रेत

(शैतान) शृंखल तुड़ाकर पलायित हुआ है, और अब वेनिस में अविलाइनो कहलाकर मेरे उत्पीड़न में निरत है। परमेश्वर के लिये फ्लोडोआर्डो तुम सावधान रहना तुमारे पीछे मुझे प्रायः विचार हुआ है कि ऐसा न हो कि वह दुष्टात्मा मुझको तुमारे बियोग के संताप से संतप्त करे मुझे अभी तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं इसलिये तुमको सन्ध्यासमयतक ठहरना होगा। इस समय एक प्रदेश से एक माननीय व्यक्ति आये हैं उनसे समागम करने का मैंने यही समय नियत किया है, अतएव मैं समागम के कमरे में जाता हूं परन्तु सन्ध्याको-" ॥

वह अपनी बात समाप्त न करने पाये थे कि रोज़ाबिला निर्बलता के कारण शनैः शनैः पद रखती हुई आई! उसका जाज्वल्यमान मुख पीतवर्ण हो रहा था, और दुर्बलतासे नेत्रोंके आस पास गर्त्त से पड़ गये थे, परन्तु जब उसने फ्लोडोआर्डो को देखा तो आनन्द उद्रेक की अधिकता से पाटलकुसुम कलिका समान विकसित होगई। फ्लोडोआर्डो ने अपने स्थान से उठ कर अत्यन्त औचित्य के साथ उसकी वन्दना की और पुनः बैठ गया ॥

अंड्रियास-"देखो तुम अभी न जाना, कदाचित् मुझे दोघड़ी में अवकाश मिलजाय, इस बीच में तुम मेरी प्राणोपम पुत्री रोजा बिला का जी वहलाओ, तुम्हारे पीछे वह वेचारी बहुत बीमार थी, और अभी गतदिवस पलँग पर से उठी है, मेरा बिचार है कि रोजाबिला को अभी इतनी शीघ्रता करनी उचित न थी।

यह कहकर महाराज तो आयतन के बाहर सुशोभित हुये और वह दोनों प्रेमी और प्रेयसी उक्त आयतन में एकाकी रहगये। रोज़ाबिला एक गवाक्ष के समीप जाकर खड़ी हुई कुछ कालोपरांत फ्लोडोआर्डो भी वहीं जा पहुंचा।

सप्तदश परिच्छेद ।

हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि अंड्रियास रोजाबिलाको फ्लोडोआर्डो के निकट एकाकी छोड़ कर बाहर चलागया और दोनों एक प्रशस्त गवाक्ष के समीप जाकरखड़े हुये । कुछ कालोपरान्त फ्लोडोआर्डोने चित्त कड़ा करके कहा "राजात्मजे ! तुम अब भी मुझसे अप्रसन्न और रुष्ट हो ?" ॥

रोजाबिला-"मैं तुमसे कदापि रुष्ट नहीं हूं" यह कहकर वह उपवन के वृत्तान्त को स्मरण करके अत्यन्त लज्जित हुई ॥

फ्लोडोआर्डो-"अच्छा तो आपने मेरा अपराध क्षमा कर दिया" ॥

रोजाबिला-(ईषत् हास्य करके) "तुम्हारा अपराध ! निस्सन्देह ! यदि अपराध था तो मैंने सम्पूर्ण क्षमा कर दिया क्योंकि जो लोग मरने के सन्निकट हों उन्हें उचित है कि औरों का अपराध क्षमा कर दें इसलिये कि इसके बदले में परमेश्वर उनके अपराधों को क्षमा करे और मुझे पूर्ण बिश्वास है कि मैं अब कुछ दिन की ही मेहमान हूं ॥

फ्लोडोआर्डो-"राजकन्यके !"

रोजाबिला। न, न, इसमें तनिक सन्देह नहीं है, मान लिया कि अभी कल पलँग परसे उठी हूं परन्तु मैं भली भांति जानती हूं कि अति शीघ्र फिर गिरूंगी और इस बार मेरा जीवन समाप्त ही हो जावेगा, इस लिये (कुछ रुककर) इसी लिये मैं महाशय आपसे क्षमा प्रार्थना करती हूं और चाहती हूं कि प्रथम सम्मिलन के समय मैंने जो कुछ आपका अपराध किया हो उसको आप हृदय से भूल जावें ॥

फ्लोडोआर्डो ने इसका कुछ उत्तर न दिया ॥

रोजाबिला-" क्यों महाशय ! तो आप न क्षमा कीजियेगा आप अत्यन्त कठोर ज्ञात होते हैं " ॥

फ्लोडोआर्डो ने उसका स्वरूप देख कर बनावट से मुसकरा दिया, परन्तु अवलोकन करने से उसके मुख से स्पष्ट आन्तरिक दुःख का विकास होता था। रोजाबिला ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया ॥

रोजाबिला-" क्यों आप स्वच्छ हृदय से मुझसे हाथ न मिलाइयेगा, और अपने हृदय से सब बातों को न भुलाइयेगा? "

फ्लोडोआर्डो-" राजकन्यके भुलाना ? कदापि नहीं ? कदापि नहीं ? आपके एक एक शब्द का चिन्ह मेरे हृदय पर ऐसा होगया है कि मरणकाल पर्यंत न मिटेगा, हाय ! मैं उन बातों को कैसे भूल सकता हूँ जिससे मेरा मर्म वेध हुआ है, मैं उस बृत्तान्त को जो आपके और मेरे स्नेह का साक्षी है कथमपि भूल नहीं सकता ! उसका प्रत्येक भाग अनमोल और अद्वितीय है। रहा क्षमा करना (रोजाबिलाका करकमल सादर चुम्बन कर) परमेश्वर करता कि प्यारी तुमने मुझे वास्तव में अधिक संताप से संतप्त किया होता कि मैं तुमको क्षमा करता पर खेदका विषय है कि इस समय मैं तुमको क्या क्षमा करूं " ॥

इतने कथोपकथन उपरांत दोनों कुछ काल पर्यंत मौन रहे, अंतको रोजाबिला ने फिर बात छेड़ी ॥

रोजाबिला-" इस ओर तो आप बहुत दिनों तक बाहर रहे, क्या दूरकी यात्रा की थी ? " ॥

फ्लोडोआर्डो-"जी हां " ॥

रोजाबिला-" और आनन्द भी पूर्ण प्राप्त हुआ ? " ॥

फ्लोडोआर्डो-" पूर्ण, जहां कहीं जाता था रोजाबिला की प्रशंसा सुनता था " ॥

रोजाबिला-(तनिक तीखी चितवन से परन्तु ऋजुता के साथ) " कौएट फ्लोडोआर्डो क्या आप फिर मुझे कुढ़ाना चाहते हैं " ॥

फ्लोडोआर्डो-" यह बात तो बहुत जल्द मेरे अधिकार से बाहर हो जायगी, कदाचित् आप समझ गई होंगी की अब मेरी क्या कामना है " ।

रोजाबिला-" फिर यात्रा करने की "

फ्लोडोआर्डो-" जी हां, और इस बार वेनिस से गया तो फिर न आने की " ।

रोज़ाबिला-(अनुराग के साथ)" फिर न आओगे ? नहीं ऐसा क्या करोगे ! हाय ! तुम मुझे छोड़कर चले जावोगे" यह कह कर वह अपनी मूर्खता पर अत्यन्त लज्जित हुई और फिर सँभल कर कहने लगी " मेरा अभिप्राय यह था कि तुम मेरे पितृव्य को छोड़ कर चले जावोगे ? मैं अनुमान करती हूं कि तुम परिहास कर रहे हो " ॥

फ्लोड़ोआर्ड़ो-"नहीं नहीं ! राज्ञात्मजे मैं सत्य कहता हूँ और अबकी बार वेनिस से गया तो फिर नहीं आने का " ॥

रोजाबिला-"फिर भला आप जाइयेगा कहां ?"

फ्लोड़ोआर्ड़ो-"माल्टा के द्वीप में, इस लिये कि वहां के निवासियों की, जो बरबरी के डाकुओं से संग्राम कर रहे हैं सहायता करूं संभव है कि ईश्वरानुकम्पा से मैं किसी पोत का कमाउण्ड हो जाऊं, उस समय मैं उसका नाम रोजाबिला रक्खूंगा, और संग्राम समय भी रोजाविला का नाम लेकर युद्ध करूंगा, इससे परमेश्वर ने चाहा तो वैरी का प्रहार मुझ पर सफल न होगा " ॥

रोजाबिला-"उहूँ ' यह तो आप मेरा उपहाँस करते हैं मैंने आपके साथ कोई ऐसी बुराई नहीं की है कि आप इस

निर्दयता के साथ मेरा मन दुःखी करें" ॥

फ्लोड़ोआर्डो-"राजात्मजे ! इसी लिये तो मेरी इच्छा वेनिस से भाग जाने की है कि जिसमें आपका मन न दुःखी हो, मेरे रहने से क्या आश्चर्य्य है कि किसी समय आपको फिर क्लेश हो, अतएव उत्तम है कि मैं यहां से कहीं निकल जाऊं, जिसमें आप तो सुखसे रहैं" ॥

रोजाबिला-"तो वास्तव में आप महाराज को छोड़ कर चले जाइयेगा जो तुमारा हृदय से सत्कार करते हैं और तुमारे साथ अत्यन्त प्रीति रखते हैं" ॥

फ्लोड़ोआर्डो-"मैं उनकी प्रीतिका अत्यन्त सम्मान करता हूं, परन्तु वह मेरे आनन्द के लिये पर्याप्त नहीं और यदि वह मुझे राज्य भी प्रदान करदें तो भी मेरे समीप कुछ नहीं है" ॥

रोजाबिला-"तो श्रेय के लिये यह आवश्यक है कि यहांसे आप चले जाइये ॥

फ्लोड़ोआर्डो-"निस्सन्देह ! बरन जितना मैंने बर्णन किया है उससे भी कुछ अधिक पैर पड़कर यांचना कर चुका" यह कह कर उसने रोजाबिला का करकमल अपने हाथों में लेकर चुम्बन किया और फिर कहने लगा ॥ "रोजाबिला मैंने तुमसे पैर पड़ कर निवेदन और प्रार्थना की और तुमने टकासा उत्तर दे दिया" ॥

रोजाबिला-"तुम अद्भुत व्यक्ति हो ! इतने शब्द रोजाबिलाकी रसनासे कठिनता से निकले, । फ्लोड़ोआर्डो ने उसे अपने समीप आकर्षण कर लिया और बहुत गिड़गिड़ा कर कहा 'रोजाबिला" ॥

रोजाबिला-"आप मुझसे क्या चाहते हैं" ॥

फ्लोडोआर्डो-"मुझे अपनी सेवकाई में स्वीकार करो" ॥

रोजाबिला-"कुछ काल पर्यन्त उसे आश्चर्य की दृष्टिसे देखती रही इसके उपरान्त उसने शीघ्रता पूर्वक अपना हाथ खींचकर कहा 'मैं आज्ञा देती हूं कि आप यहां से भी चले जाँय, परमेश्वर के लिये आप प्रस्थान कीजिये" ॥

उसकी इस कठोरता पर फ्लोड़ोआर्डो अपना हाथ दुःख से मलता हुआ धीरे धीरे द्वार पर्यन्त गया। ज्योंहीं उसने देहली के बाहर पद रक्खा, और मुड़ कर रोजाबिला से सदा की बिदा माँगी कि अचाञ्चक रोजाबिला दौड़ पड़ी और उसका हाथ लेकर निजोच्छलित हृदय पर रखने पीछे कहने लगी "फ्लोडो मैं तेरी हूं"। इतने शब्द उसकी चंचला रसना से कठिनता से निकले थे कि वह उसी ठौर गिर पड़ी और अचेत होगई ॥

अष्टादश परिच्छेद ।

इस उपन्यास के पाठकों को बिगत परिच्छेद के आशय से ज्ञात हुआ होगा कि फ्लोडोआर्डो वास्तव में कैसा सद्भाग्य व्यक्ति था । प्रगट है कि जिस वस्तुकी उसे बहुत कालसे कामना थी, जिसके लिये उसने बीसियों आपत्तियों को क्रय किया था, शतशः संतापों को सहन किया था और सहस्रों दुःखों और क्लेशों को झेला था, वह अब प्राप्त हुई अर्थात् रोजाबिला सी अप्सरा ने अपनी जिह्वा से उसकी प्रीति का प्रकाश किया । बिचार कीजिये कि संसार में प्रेमी के लिये इससे अधिकतर प्रिय और कौनसा पदार्थ है कि उसकी प्रेयसी स्वयं प्रेमी बन जाय और उसे अपने संयोग की आशा दिलाये । ऐसे अवसर पर शरीर

धारियों अथवा मानवों को जितना हर्ष होता है उसको प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदयानुसार भलीभांति अनुभव कर सकता है। हां! हम इतना निस्संदेह कह सकते हैं कि जहां तक परीक्षा की गयी है यही दृष्टिगोचर हुआ है कि जब किसी को यह घड़ी प्राप्त होती है तो उसके हाथ पाँव फूल जाते हैं वरन किसी किसी की तो जीवन यात्रा की गति तक रुक जाती है। संक्षेप यह कि उस समय मनुष्य को अपरिमित आनन्द होता है। यही गति फ्लोडोआर्डो की भी थी पर रोजाबिला के अचेत होजाने के कारण उसने अपने चित्तको सभाल कर उसे पृथ्वी पर से उठाया और एक प्रशस्त पर्यंक पर एक उपधान के सहारे बैठाया। थोड़ी देर बाद रोजाबिलाने नेत्रोन्मीलन किया और फ्लोडोआर्डो को अपने समीप बैठा देख कर स्नेह से अपनी ग्रीवा उसके उत्संग में डाल दी। अब क्या था दोनों प्रेम की मादकता में चूर, उत्फुल्लता समीप, शोक कोसों दूर, एक द्वितीय पर प्रीति पूर्वक दृष्टिपात करने और आगामी सुख को सोचने लगे, यह अनुमानही न था कि हर्षके दिन शीघ्र बीत जाते हैं और आपद के पुनः पलट आते हैं।

मनुष्य की जीवन-यात्रा में ऐसा अवसर कदाचित् एकही बार आता है, अतएव बड़ा सद्भाग्य वह है जिसे वह प्राप्त है, और जो उसके रसका अनुभव भली भांति कर सकता है। विद्वानों का कथन है कि ऐसे समय के उल्लास निपट अनुमान मूलक (ख्याली) होते हैं, और उतने ही अदृढ़ और निर्मूल होते हैं, जितना कि स्वप्न जो सत्यता और मनीषा की प्रखर गभस्तियों के अभिमुख लुप्त हो जाता है। परन्तु हम यह प्रश्न करते हैं कि संसार में कोई भी आनन्द ऐसा है जिसका स्वाद विचार (ख्याल) की सहायता के अभाव में प्राप्त होता हो? अस्तु अब मुख्य विषय की ओर प्रवृत्त होना चाहिये। कुछ

कालबाद रोज़ाबिलाने कहा "फ्लोडोआर्डो मैं तुम्हें प्राण से अधिकतर समझती हूँ" प्रत्युत्तर में उसने रोजाबिला को अपने हृदय से लगा कर पहले पहल उसके शोणाधर का चुम्बन किया ; अचाञ्चक उसी समय द्वार कपाट खटसे खुल गया और नृपति अंड्रियास तत्काल गृह में प्रविष्ट हुए । उनके शीघ्र पलट आनेका यह कारण था कि जिस मनुष्य के समागम के लिये वे गये थे वह दैवात् बीमार हो गया इस लिये उन्हें अधिककाल पर्य्यन्त बाहर न ठहरना पड़ा । महाराज के परिच्छेद की खड़खड़ाहट की ध्वनिसे दोनों प्रेमी और प्रेयसी आमोद की निद्रा से चौंक पड़े । रोजाबिला भय से चिल्लाकर पृथक् हो गई, और फ्लोडोआर्डो निज स्थान से उठ खड़ा हुआ परन्तु उसने किसी प्रकार की व्यग्रता नहीं प्रगट की ।

अंड्रियास कुछ काल पर्य्यंन्त दोनों को इस प्रकार घूरा किये जिससे सम्पूर्णतः कोप, खेद और निराशा टपकती थी । अन्त में उन्होंने एक शीतलोछ्वास भर कर आकाश की ओर अवलोकन किया और फिर चुपचाप लौट कर जाने लगे । इस समय फ्लोडोआर्डो ने जी कड़ा करके कहा "महाराज एकक्षण के लिये ठहर जाइये, शब्द सुनकर महाराज लौट पड़े । फ्लोडोआर्डोने अपने को उनके युगल ललित पदों पर डाल दिया ! अंड्रियास उसे कुछ काल तक अत्यन्त गम्भीरताके साथ देखते रहे और इसके उपरान्त कहने लगे फ्लोडोआर्डो यदि तुम अपने अपराध की क्षमा चाहते हो तो व्यर्थ है" ।

फ्लोडोआर्डोने अत्यन्त धृष्टता के साथ उत्तर दिया क्षमा चाहना, नहीं महाशय मैं रोजाबिला पर मोहित होने के लिये क्षमा नहीँ मांगता, बरन क्षमा मांगना तो उसे चाहिये था जिसने रोजाबिला को देखा होता और उस पर मोहित न हुआ होता परन्तु यदि रोजाबिला पर मोहित होना अपराध है तो

यह ऐसा अपराध है जिसे परमेश्वर भी क्षमा कर देगा क्योंकि परमेश्वरने रोजाविला को इसी योग्य बनाया है कि मनुष्य उसकी पूजा करे"।

अंड्रियास-(तुच्छता के साथ) "तुम इस कल्पित रीति से निर्दोष बनने को वृथा चेष्टा करते हो, स्मरण रक्खो कि मुझसे यह कथन कर क्षमा ले लेना असम्भव है"।

फ्लोडोआर्डो-(पृथ्वी से उठ कर) महोदय ! मैं आपसे फिर निवेदन करता हूँ कि मैं रोजाविला पर मोहित होने के लिये क्षमा नहीं चाहता, वरन यह कहता हूँ कि आप उस प्रीति का सम्मान करें। सुनिये महाशय मैं आपकी भ्रातृजा पर मोहित हूं, अतएव मेरी यह प्रार्थना है कि आप मुझे निज जमाई बनाने के लिये स्वीकार कीजिये।

फ्लोडोआर्डो की इस बात चीत से महाराज को बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसने फिर कहना प्रारंभ किया "माना कि मैं एक अकिञ्चन और अपरिचित व्यक्ति हूँ, और आप को आश्चर्य्य होगा कि ऐसा पुरुष वेनिस के नृपति की उत्तराधिकारिणी के साथ विवाह करने के लिये प्रार्थना करे। परन्तु ईश्वर की शपथ है कि मुझको इस बात का पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी भ्रातृजा ऐसे पुरुष को न देंगे जिसके पास विभव और पृथ्वी अधिक हो और पदवी भी बहुत सी रखता हो, अथवा जिसका सम्मान उसके पूर्व पुरुषों के कारण हो, परन्तु उसमें योग्यता तनिक भी न हो। मैं स्वीकार करता हूँ कि आज तक मुझ से कोई कार्य ऐसा नहीं संपन्न हुआ, कि जिसके बदले में मुझे रोजाविला सी अप्सरा मिल सके, परन्तु वह समय निकट है जब कि मैं ऐसे कार्य कर दिखाऊँगा और नहीं तो इसी उद्योग में अपने जीवन से हाथ धोऊँगा।

इस समालाप और संभाषण को श्रवण कर महाराज ने

क्रोध से मुख फेर लिया। उस समय रोजाविला दौड़ कर अपने पितृव्य से लिपट गई और सप्रेम अपना हाथ उनकी ग्रीवा में डाल कर रुदन करने लगी।

फ्लोडोआर्डो। (फिर अंड्रियास की ओर निरीक्षण कर) "आप अपने शर्तों को बतलाइये कि आप मुझसे क्या कहते हैं, निज मुखारबिन्दसे कथन कीजिये मैं कौन सा कार्य सम्पादन करूं, जिससे आप रोजाबिला का विवाह मेरे साथ कर दें। जो कुछ आपके जी में आवे कह डालिये, कैसाही कठिन कार्य क्यों न हो, पर मैं उसे एक खेल समान समझूंगा। मेरी तो यह इच्छा है कि परमेश्वर करता कि इस समय वेनिस के लिये कोई बड़ा संकट होता, और दश सहस्र मनुष्य आपका जीवन समाप्त करने की चिन्ता में होते, फिर आप देखते कि मैं रोजाबिला के मिलने की आशा पर वेनिस के संरक्षण और उन दश सहस्र मनुष्यों को विनाश करने में कितना परिश्रम करता, प्राण भय उपस्थित होने पर भी न टलता।

अंड्रियास। (सखेद मुसकान पूर्वक) "सुन ऐ फ्लोडो आर्डो मैं एक युग से इस देशकी हितैषिता कर रहा हूं, प्रायः इसकी रक्षा के लिये निश्शंक प्राण गँवाने पर तत्पर होगया हूं, और कई वार इसी उद्योग में मेरे जीवन के पर्यवसान की आशंका तक उपस्थित हुई है, परन्तु इस बहुत बड़े उद्योग के बदले में मैंने इसके अतिरिक्त कि अपनी वृद्धावस्था सुख पूर्वक समाप्त करूं और किसी विषय की कामना न की, परन्तु वह अभिलाषा सफल न होने पाई। मेरे बाल्य मित्र, मेरे प्राणोपम मित्र, और मेरे वृद्धावस्था के परामर्श दाताओं को, डाकुओं ने मुझसे पृथक् किया, और आज फ्लोडोआर्डो तुमने, जिसके साथ मैं प्रत्येक प्रकार का उपकार करने को तत्पर था, मेरे समाधान के शेष आश्रय को भी अपहरण कर लिया।

अच्छा, रोजाविला बताओ कि तुम वास्तव में इनसे प्रीति करती हो ? ।

रोजाविलाने अपना एक कर तो नृपति महाशय की ग्रीवा में पड़ा रहने दिया, और द्वितीय कर से फ्लोडोआर्डो का कर ग्रहण कर अत्यन्त प्यार से अपने हृदय पर रक्खा, परन्तु इस पर भी फ्लोडोआर्डो को धैर्य्य न था, क्योंकि ज्यों हीं उसने नृपति महाशय का प्रश्न श्रवण किया, उसका मुख निस्तेज और पीत हो गया। यद्यपि कि उसने अपना हाथ रोजाबिला के करकमलों में दे दिया, पर एक बार अपना शिर इस रीति से हिलाया जैसे किसी को संशय हो, और रोजाबिला की ओर परमानुराग से अवलोकन करने लगा। अंड्रियास धीरे से रोजाविला से पृथक् होगये, और कुछ काल तक आयतन में शोकितों का सा स्वरूप बनाये टहला किये। रोजाविला वहीं एक पर्य्यंङ्क पर बैठ कर रुदन करने लगी, और फ्लोडोआर्डो अत्यन्त असन्तोष पूर्वक महाराज के वाक्य की प्रतीक्षा करने लगा।

एकोनविंशति परिच्छेद।

कुछ काल तक सन्नाटे का सा समा रहा, और प्रत्येक व्यक्ति अपने बिचारों में मग्न था। अंड्रियास की चेष्टा से सिद्ध होता था कि वह फ्लोडोआर्डो के लिये कोई कठिन कार्य्य निर्धारण कर रहे हैं। उस समय फ्लोडोआर्डो और रोजाविला की यही अभिलाषा थी कि जो वाद विवाद उपस्थित है किसी प्रकार समाप्त हो, परन्तु इसी के साथ उनको यह भी

आशंका थी कि ऐसा न हो कि महाराज कोई ऐसा दुस्साध्य कार्य्य बतलावें जिसका सिद्ध होना दुस्तर हो, इस कारण उनका असमञ्जस प्रतिक्षण अधिकाधिक होरहा था।

अन्त को महाराज ने अकस्मात् मध्य आयतन में खड़े होकर फ्लोडोआर्डो का आह्वान किया। फ्लोडोआर्डो अत्यन्त सम्मान पूर्वक उनके समीप गया।

अंड्रियास। "सुन ऐ युवा मैं इस विषय में पूरी विवेचना कर चुका और अब अपनी अनुमति प्रगट करता हूँ। ज्ञात हुआ कि रोज़ाविला तुझसे प्रीति करती है, और मैं उसको इस विचार से कदापि निरस्त न करूँगा, परन्तु रोज़ाविला ऐसी बहुमूल्य वस्तु है कि मैं उसे किसी राही को (जो पहले पहल उसकी कामना करे) नहीं देसकता। हां! इस नियम द्वारा यह बात संभव है, कि उस व्यक्ति में ऐसे पारितोषिक लाभ करने की योग्यता हो और उसीको रोज़ाविला उसकी सेवाओं के बदले में दी जायगी, मेरी अनुमति है कि कोई व्यक्ति चाहे कैसी ही बड़ी सेवा क्यों न करे उसके लिये यह पुरस्कार पूर्ण-तया उचित होगा। अबतक तुमने जो सेवा इस राज्य की की है वह कुछ अधिक नहीं है, अब निस्सन्देह तुम्हारी कार्य-कारिणी शक्ति देखने का अवसर आता है, और वह यह है कि तुम कुनारी, मानफ़रोन, लोमेलाइनो के नाशक को पकड़ लाओ। अर्थात् तुम अबिलाइनो को जिस प्रकार संभव हो यहां लाकर प्रस्तुत करो। यदि जीवित लासको तो अति उत्तम, नहीं तो उसका शिर ही सन्तोषजनक होगा।

इस संभाषण को सुन कर फ़्लोडोआर्डो अवसन्न हो गया। उसके मुखका वर्ण पीला पड़ गया, एवं संज्ञा और चेतना सपाटू पर हो रहीं। अन्तको उसने अपने को ज्यों त्यों सभाल कर यह कहा "महाशय आप भली भांति जानते हैं कि—"

अंड्रियास । मैं भली भांति जानता हूँ कि कितना कठोर कार्य मैंने तुमको सौंपा है। अनेक विषय में तो मैं कहता हूं कि यदि मुझे कोई अकले एक पोत लेकर तुर्कों के सकल पोतों के बेड़े से सहस्रबार मार्ग काट कर निकल आने को कहे तो इससे कहीं उत्तम समझूंगा कि अविलाइनो को जिसने स्वयं शैतान को अपना पक्षपाती बना रक्खा है पकड़ूँ ! सच पूछिये तो मैंने आजतक ऐसा मनुष्य न देखा न सुना जो प्रत्येक स्थल पर उपस्थित और विद्यमान हो। और कहीं न हो। जिसे बहुत से लोगोंने देखा हो परन्तु कोई पहचान न सकता हो। जिसने वेनिस की विख्यात पुलीस को, गुप्त चरों और अनुसंधानकारियों को चकित कर दिया हो। और जिसके नामश्रवण से वेनिस के बड़े बड़े बीर कम्पित होते हों। और तो और मैं स्वयं अपने को उसकी यमधारसे सुरक्षित नहीं समझता। अतएव इसीसे समझ लो कि मैं भली भांति जानता हूं कि कैसा कठोर कार्य तुमको सौंपा गया है। परन्तु यह भी स्मरण रक्खो कि उसके बदले में कैसी अप्राप्य और अलौकिक एवम् अनुपम वस्तु देनेका वादा करता हूं। परन्तु तुम तो कुछ शिथिल से ज्ञात होते हो, मौन क्यों हो अपना विचार क्यों नहीं प्रगट करते ? फ्लोडोआर्डो मैं तुमको सदा बिचार की दृष्टि से देखता आया हूं, और मैंने तुममें कतिपय चिन्ह उत्कृष्टता और योग्यता के पाये हैं, अतएव ~~इस कारण से~~ मैंने तुमको इस कार्य पर नियुक्त किया है। यदि संसार में कोई व्यक्ति अबिलाइनो का सामना कर सकता है तो वह तुम हो। मैं तुमारे उत्तर की प्रतीक्षा करता हूं"।

फ्लोडोआर्डो स्तब्ध और मौन आयतन में टहला किया। उसके मौन रहने का कारण प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि क्या था। महाराज ने उसके लिये एक ऐसा कठिन और

गुरुतर कार्य निर्धारण किया था, जो सर्वथा भय और आशंकाओं से भरा हुआ था · यदि तनिक भी अबिलाइनो को ज्ञात होता कि फ्लोडोआर्डो ने उसके पकड़ने के लिये बीड़ा उठाया है तो उस अनाथ का पूरा अभाग्योद्‌य हो जाता। परन्तु फ्लोडोआर्डो अपने हृदय से विवश था। जब नृपति महाशय ने रोजाविला के देने का भार इसी शर्त पर रक्खा, तो वह सिवाय स्वीकार करने के और क्या कर सकता था। कुछ काल उपरान्त उसने रोजाविला को एक बार अवलोकन किया और फिर अंड्रियास की ओर बढ़ा।

अंड्रियास। कहो फ्लोडोआर्डो तुमारे हृदय ने क्या निश्चित किया "।

फ्लोडोआर्डो। " आप शपथ करके कथन कर सक्ते हैं कि यदि मैं अबिलाइनों को आपके अधिकार में कर दूं तो रोजाविला का परिणय मेरे साथ कर दीजियेगा "।

अंड्रियास–" निस्सन्देह परन्तु बिना इसके कदापि नहीं।

रोजाविला–(शोकमय उछ्वास भर कर) " फ्लोडोआर्डो मैं डरता हूं। कि कहीं इसका फल अथवा परिणाम अनिष्टकर न हो, तुम जानते हो कि अबिलाइनो कैसा सुचतुर छली और उसी के साथ दुष्ट है, परमेश्वर के लिये फ्लोडोआर्डो अपनी भलीभांति रक्षा करो, क्योंकि यदि कहीं उस दुष्टात्मा से और तुम से मुठभेड़ हुई तो फिर उसकी यमधार जिससे "।

फ्लोडोआर्डो। (उसे शीघ्रतापूर्वक रोक कर) " अच्छा रोजाबिला तुम चुप रहो, भला मुझे अपने कार्य सिद्धि की आशा तो करने दो। महाराज हाथ लाइये, और दृढ़ प्रतिज्ञा कीजिये कि जहां अविलाइनो आप के अधिकार अथवा वश में आजाय फिर कोई विषय मुझको रोजाविला का पति होने में न बाधक होगा "।

अंड्रियास। " शपथ करता हूं कि तुम वेनिस के इस महानशत्रु को मेरे पास जीवित अथवा निर्जीव लाओ, फिर कोई विषय रोजाविला को तुम्हारी पत्नी होने में न बाधक होगा, इस कथन की पुष्टता और दृढता के लिये मैं तुमको अपना हाथ देता हूं "।

फ्लोडोआर्डो ने महाराज के हाथ को अपने हाथ में लेकर तीन बार हिलाया, और इसके बाद रोजाबिला की ओर देख कर कुछ कहने ही वाला था, कि अचाञ्चक फिर पड़ा और निज कपालदेश ताड़नपूर्वक परिसर में शीघ्र शीघ्र टहलने लगा। इतने में सेण्टमार्क के गिरजे से पांच बजने का शब्द अवणगत हुआ।

फ्लोडोआर्डो। एं; समय नष्ट होता है, अब विलम्ब न करना चाहिये (नृपति महाशय की ओर प्रवृत्त होकर) मैं चौबीस घण्टे के भीतर इसी राजभवन में अबिलाइनो को लाकर उपस्थित करूँगा।"

अंड्रियास ने संशय पूर्वक अपना शिर हिलाया, और कहा " लड़के तुझे अपनी बात और प्रतिज्ञा का इतना भरोसा न करना चाहिये, मैं तेरी कार्यकारिणी शक्ति पर अधिक भरोसा रक्खूंगा।"

फ्लोडोआर्डो-(गम्भीरता और दृढ़ता के साथ) " अच्छा अब जो कुछ हो सो हो या तो मैं प्रतिज्ञापालन करूँगा या फिर भवदीय देहली पर पांव न रक्खूंगा, मैंने उस दुष्टका कुछ अनुसन्धान लगाया है और मुझे आशा है कि अगले दिन आपको इसी स्थल पर और इसी समय एक कौतुक अवलोकन कराऊँगा परन्तु यदि उसके बदले में मुझ पर कोई आपदा आवे तो मुझे उसके विषय में कुछ वक्तव्य नहीं है परमेश्वर की जो अभिलाषा हो सो हो।"

अंड्रियास-" स्मरण रक्खो कि अनुपयुक्त शीघ्रता प्रत्येक कार्यको विनष्ट करती है, ऐसा न हो कि इस समय तुमने जो कुछ थोड़ी बहुत सिद्धि लाभ की है वह भी तुम्हारी आतुरताके कारण नष्ट हो जावे।

फ्लोडोआर्डो-शीघ्रता महाशय! आप जानते ही नहीं कि जिस व्यक्तिका जीवन ऐसी बुरी रीतिसे बीता हो, जैसा मेरा व्यतीत हुआ है, अथवा जिसने इतनी आपत्तियां सहन की हों, जो मेरे भाग में आई हैं, वह जीवन पर्यन्त पुनः किसी बात में शीघ्रता न करेगा।"

रोजाविला-(फ्लोडोआर्डो का कर ग्रहण कर) " पर प्यारे परमेश्वरके लिये तुम अपनी शक्ति पर इतना भरोसा मत रक्खो, मेरे पितृव्य तुमसे स्नेह करते हैं, उनकी शिक्षा अत्यन्त उपयुक्त है, तुमको अविलाइनों के यमधारसे सावधान रहना उचित है।"

फ्लोडोआर्डो-सब से उत्तम रीति उसकी यमधारसे रक्षित रहने की यह है कि उसके यमधार को कार्यमें परिणत होनेका अवसर न दे, अतएव इस कार्यको चौबीस घण्टे में समाप्त हो जाना चाहिये नहीं फिर कभी न हो सकेगा। अब मैं नृपति महाशय आप से बिदाकी यांचना करता हूँ परमेश्वरने चाहा तो कल्ह आप पर प्रमाणित कर दूंगा, कि प्रेमी के लिये किसी कठिन कार्य के करने पर उतारू हो जाना असंभव नहीं।

अंड्रियास—"सत्य है, पर उतारू होजाने से काम नहीं चलता, प्रयोजन तो पूरा करने से है।"

फ्लोडोआर्डो। "हा हन्त! यह बात तो—इतना ही कह कर वह रुक गया और फिर अत्यंत अनुराग से रोजाबिला को देखने लगा, उस समय उसकी आकृति से स्पष्ट प्रगट होता था, कि प्रतिक्षण उसकी उद्विग्नता अधिक होती जाती

है, पर थोड़े ही समय बाद उसने पुनः महाराज से संभाषण आरम्भ किया।

फ्रोडोआर्डो—"महाराज आप मेरी उमंग को कम न होने दें, वरन मुझ को इस बात का उद्योग करने दें कि मैं आपको भी अपनी सिद्धि की आशा दिला सकता हूं या नहीं। मेरी पहली प्रार्थना यह है कि कल आप ज्योनार का उत्तम उपकरण करें, और इसी ठौर बेनिस के संपूर्ण गण्य मान्य तथा प्रख्यात लोगों को चाहे स्त्री हों अथवा पुरुष बुलवायें, क्योंकि यदि मेरी मनोकामना सफल हो तो इस्से सुन्दर दूसरी बात नहीं, कि वह लोग मेरी कार्यकारिणी शक्ति को अपनी आंखों अवलोकन करें। विशेषतः पुलीस के माननीय कर्म्मचारियों को अवश्य बुलवाइयेगा, इसलिये कि उनका सामना उस अबिलाइनो से हो जाय, जिसकी खोज में उन्होंने व्यर्थ अपना समय बहुत दिनों तक नष्ट किया।

अंड्रियास ने उसे कुछ काल पर्यंत आश्चर्य और संशय की दृष्टि से देखकर प्रतिज्ञा की कि सम्पूर्ण लोग उसकी इच्छानुसार बुलाये जावेंगे।

फ्रोडोआर्डो। "मैंने यह भी सुना है कि जब से कुनारी का देहांत हुआ, आप में और पादरी गांज़ोगा में मिलाप हो गया है, और उन्होंने आपका समाधान कर दिया है, कि कुनारी ने जितने दोषारोपण परोजी कानूटेराइनों और उनके साथी अपर लोगों पर किये थे, वे सब निर्मूल थे। बर्तमान काल में मैंने अपनी यात्रा में इन नववयस्कों की बहुत प्रशंसा सुनी है, अतएव मैं चाहता हूं कि वह भी इसी अवसर पर उपस्थित रह कर मेरी कार्यकारिणी शक्ति को अवलोकन करें तो अत्यन्त उचित हो। यदि आपको इसमें कुछ आपत्ति न हो तो उन्हें भी बुलवा लीजियेगा"।

अंड्रियास। "बहुत अच्छा यह भी किया जायगा"।

फ्रोडोआर्डो। "एक बात और है जिसको मैं भूल ही गया था किसी व्यक्ति को इस निमन्त्रण का समाचार ज्ञात न हो जावे। उस समय आप उचित होगा कि राजभवन के चारों ओर और द्वार पर पहरा बैठालें क्योंकि सच पूछिये तो यह अबिलाइनो ऐसा दुष्टात्मा है कि जितनी सावधानी उसके विषय में की जाय उत्तम है। मेरी अनुमति है कि यह भी उचित और उपयुक्त होगा कि द्वारपालकों और प्रहरियों की बन्दूकें भी भरी हों और उनको इस विषय की पूर्ण शिक्षा दे दीजाय कि वे प्रत्येक व्यक्ति को आने दें परन्तु किसी को बाहर न जाने दें"।

अंड्रियास। "ये सब बातें तुम्हारी प्रार्थनानुसार की जायँगी"।

फ्रोडोआर्डो—"अब मुझे कुछ नहीं कहना है, मैं बिदा होता हूं, प्रणाम, रोज़ाबिला कल्ह पांच बजे फिर तुम से मिलूंगा और नहीं तो फिर कभी नहीं"।

यह कह कर फ्रोडोआर्डो आयतन से द्रुतवेग से निकल गया। अंड्रियास ने अपना शिर हिलाया, और रोजाबिला अपने पितृव्य के अंक से लिपट कर उच्चस्वर से रुदन करने लगी।

विंशति परिच्छेद।

गत परिच्छेद में फ्रोडोआर्डो और नृपतिवर्य्य अंड्रियास का भाषण और उसका अन्तिम विवरण वर्णन किया गया, अब कुछ परोज़ी और उसके सह-

कारियोंका समाचार श्रवण करना चाहिये। ज्यों ही परोजी को फ्लोडोआर्डो के आगमन की बात ज्ञात हुई, उसने तत्काल अपने सुहृदों पर जो नियमानुसार पादरी गान्जेगा के आगार में एकत्रित थे उसके प्रत्यागमन का भेद प्रगट किया।

परोजी। "अहा! हा! हा!! मित्रवरो! आज तो पौ बारह है, चैन ही चैन दीखता है, मंगल ही मंगल है, भाई परमेश्वर की शपथ मैं तो वस्त्रों में फूला नहीं समाता। अपने भाग्य के बल बल जाइये, अहा! हमलोग भी कैसे सद्भाग्य हैं, पक्का समाचार मिला है कि आज फ्लोडोआर्डो यात्रा करके वापस आया, अबिलाइनो को उसके पीछे लगाया ही गया है, बस समझ जाइये"।

गान्जेगा—"यह तो सब ठीक है, पर फ्लोडोआर्डो बड़ा ही चालाक है, एक ही काइयां है, मेरी राय तो यों है कि यदि वह हम लोगों का सहकारी हो जाता तो उत्तम था क्योंकि उस पर शस्त्र प्रहार सफल होना तनिक दुस्तर व्यापार है"।

फ़लीरी—'जहां तक मुझे ज्ञात है, मैं कह सकता हूं कि रोजाबिला का मन मिलिन्द भी उसके स्नेह-जल जात-कोष में बद्ध है।

परोजी—'अजी महाशय! कहां आपका ध्यान है, आगामी दिवस पर्यंत धैर्य्य धरिये फिर चाहे वह शैतान की मातृस्व-सापर क्यों न मोहित हो, इस बीच में अबिलाइनो उसका कार्य्य समाप्त कर चुकेगा'।

कान्टेराइनो—'भाई मुझे तो आश्चर्य इस बात का है कि यद्यपि मैंने फ्लारेन्स में पूर्ण अनुसन्धान किया, पर कुछ न ज्ञात हुआ कि यह फ्लोडोआर्डो कौन है, किसका आत्मज है, कहां रहता है। मेरे पास पत्र आये हैं, उनसे केवल इतना

ज्ञात हुआ है कि किसी समय वहां एक वंश इस नाम का था, परन्तु बहुत दिवसों से उसका चिह्न पर्यन्त मिट गया. यदि अब उसके कुछ लोग शेष भी रहगये हैं, तो वे प्रच्छन्न रहते हैं'।

गानज़ेगा—'अच्छा यह तो बताओ कि नृपति महाशय के यहां तुम सभों का निमन्त्रण है'।

कान्टेराइनो—'सबका'।

गाञ्जेगा। 'यह बहुत अच्छा हुआ' ज्ञात होता है कि जब से महाराज के तीनों सहकारी बिनष्ट हुए हैं, मेरे कथन का उनके हृदय पर उत्तम प्रभाव हुआ है, और क्यों भाई संध्या समय नृत्य भी होगा! महाराज के परिचारक ने ऐसा ही तो कहा था?'

फलीरी। 'हां कहा तो था'।

मिमो। परमेश्वर करे कि इस निमन्त्रण की ओट में कोई गूढ़ रहस्य न हो, कहीं महाराज को हम लोगों के गुप्त कर्मों का भेद न ज्ञात हो गया हो, ऐ परमेश्वर तू दया कर, इस विषय के ध्यान से भी मेरा हृदय पानी हुआ जाता है।

गानज़ेगा। क्या व्यर्थ बकते हो भला हमारी अभि-सन्धि उन्हें क्यों कर ज्ञात हो गयी, यह बात सर्वथा अस-म्भव है।'

मिमो। 'असम्भव! वाह असम्भव की एक ही कही, अजी तनिक यह तो सोचो कि जब वेनिस के सम्पूर्ण चोर, ग्रन्थितक्षक, उपद्रवी और डाकू तुम्हारे सहकारी हैं तो क्या आश्चर्य्य है कि महाराज को भी इसका कुछ समाचार ज्ञात हो गया हो। भला जो भेद शतशः मनुष्यों को ज्ञात हो वह ऐसे चतुर और व्युत्पन्नव्यक्ति से कब छिपा रह सकता है।'

काण्टेराइनो—बस तुम निरे कादर ही हो, यह नहीं

समझते कि जिसके शिर पर सींग होती है वह चाहे सारे संसार को दिखाई दे पर स्वयं उसे दिखलाई नहीं देती। परन्तु हां इस बातको मैं भी स्वीकार करता हूं, कि अब बिलम्ब करना उचित नहीं तत्काल इस कार्य को करही डालना युक्ति संगत है।

फलीरी—मित्र यह तुम सत्य कहते हो अब सम्पूर्ण सामान एकत्रित है, जितना शीघ्र प्रहार किया जाय उतना ही उत्तम है'।

परोजी—'इसके अतिरिक्त एक कारण यह भी है कि इस समय प्रजा, "जो अंड्रियास से अप्रसन्न है और हमारी पृष्ठ पोषक है, बहुत प्रसन्न होगी, यदि आज ही यह कार्य प्रारम्भ हो जाय। यदि इसमें और विलम्ब हुआ तो उनका प्रज्वलित क्रोध शान्त हो जायगा, और फिर वह लोग हमारे गँव के न रहेंगे'।

काण्टेराइनो—'तो फिर इस बात की तत्काल मीमांसा हो जानी चाहिये। मेरे परामर्शानुसार कलूह का दिवस अतीवोत्तम है, महाराज को तो मेरे भरोसे छोड़िये। उनके ठिकाने लगाने की मैं प्रतिज्ञा करता हूं फिर चाहे और जो कुछ हो, परन्तु इसका दो ही परिणाम होगा, अर्थात् या तो हम लोग सम्पूर्ण प्रबन्ध को उलट पलट कर अपनी आपदा और क्लेश से स्वातन्त्र्य लाभ करेंगे, या आपही इस असार सन्ताप स्वरूप संसार से सीधे परलोक की यात्रा करेंगे।'

पराजी—मेरी यह अनुमति है कि हमलोग निमन्त्रण में निरस्त्र होकर कभी न जाँय।

गाञ्जेगा—'हां भाई इस समय अच्छा विषय स्मरण कराया, सुना है कि पुलीस के सकल उच्च कर्म्मचारी भी सतर्कता पूर्वक निमंत्रित किये गये हैं।

फलीरी--परमेश्वर की शपथ है कि मैं एक एक को चुन कर मारूंगा।'

मिमो--'जी हां इस में क्या सन्देह है आप ऐसे ही तो अपने समय के भीम हैं। मैं कहता हूं कहीं उलटे लेने के देने न पड़ें।'

फलीरी--भाई यह बड़ा ही भीरु व्यक्ति है, जब पहले ही से आपके औसान नष्ट हुए जाते हैं, तो संग्राम समय आप कब दृढ़ पदारोपण कर सकेंगे। बस ज्ञात हुआ कि ये निरे डेंगिये ही हैं, बातें अलबत्ता बढ़ बढ़ कर बनाना जानते हैं, पर अवसर पड़े लांगूल लपेट कर निकल भागने वाले ही जान पड़ते हैं। ऐसा ही प्राण का भय है तो चूड़ियां पहन कर घरमें बैठो, हमलोग अपनी सी भुगत लेंगे, पर स्मरण किये रहो कि यदि हमारा प्रयत्न सफल हुआ, और उस समय तुम अपनी मुद्राओं को जो इस समय पर्य्यन्त दे चुके हो, मांगोगे, तो फूटी कौड़ी भी न देंगे।'

मिमो--'तुम व्यर्थ मुझको परुष और मर्म भेदी बातें सुनाते हो, मैं किसी दशा में बीरता अथवा पराक्रम में तुम से घट कर नहीं हूं जी चाहे परीक्षा कर लो, आओ दो एक हाथ करवाल के चल जांय, तुमने मुझे समझा क्या है, पर परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैं तुमारे समान उतावली करने वाला नहीं हूं।

गाञ्जेगा--'अच्छा माना कि हमारी कामना जैसी चाहिये वैसी पूरी न हुई, तो इससे क्या जहां अंडियास मरे, फिर चाहे प्रजा जितना कोलाहल मचाये, हमलोगों का बाल बांका न होगा क्यों कि पोप * हमारी सहायता पर हैं,।

---

* रोमन कैथोलिक पथके ईसाइयों में पोपकी बड़ी पदवी है, बसे सब लोग मानते हैं। पोप से अधिक कोई धार्मिक पद नहीं होता, ये लोग

मिमो--'ऐं पोप ? हमलोगों की सहायता करने के लिये दत्तचित्त हैं ? ।'

गाञ्जेगा--(उसके सामने पोप का पत्र फेंक कर) लो पढ़ो तुमको तो किसी के कथन का विश्वास ही नहीं आता। कहता हूं न कि पोप ने हम लोगों की सहायता करने की प्रतिज्ञा की है, क्योंकि उन से यह बात कही गई है कि जब वेनिस का प्रबन्ध प्रथमतः फिर से संगठित होगा, तो यहां की धर्म्म संबंधी बातों में उनको पूरा अधिकार दिया जायगा। बस परमेश्वर के लिये मिमो अब हम लोगों को व्यर्थ क्लेशित मत करो, बरन काएटेराइनों के विचार को तत्काल कार्य में परिणत करो। अब उचित है कि सर्वजन जो हमारे सहकारी हैं आज ही परोजी के गृह पर बुलवाये जायँ, और वहां उनको आवश्यकतानुसार अस्त्र शस्त्र दे दे दिये जांय। विप्लव करने का संकेत यही नियत रक्खो, कि ज्यों ही निशीथ काल हो काएटेराइनो नृत्यायतन से तत्काल शस्त्रालय की ओर दौड़ जांय सालवाइटो जो वहां का निरीक्षक और रक्षक है, हमलोगों का पृष्टपोषक है वह इनके पहुंचते ही द्वार कपाट खोल देगा।'

काएटेराइनो--सामुद्रिक अधिकारी (अमीरुलबहर) डानों को भी ज्यों ही यह समाचार ज्ञात होगा, अपने चरों और धावकों को लेकर हमारी सहायता के लिये तत्काल पहुंच जायगा।'

परोजी--'भाई अब तो हमारे कार्य्य के पूर्ण होने में रञ्चक मात्र संशय नहीं।'

काएटेराइनो--केवल इतना स्मरण रखना चाहिये कि

सदा से रूम में रहते हैं जो पहले इटली की बरन अखिल संसार की राजधानी था॥

प्रथम तो जहांतक कोलाहल और तुमुल शब्द हो सके हम लोग करें, इसलिये कि उपस्थितजन व्यतिव्यस्त हो जायं, दूसरे हमारे शत्रु कानोंकान अभिज्ञ न होने पावें, कि कौन उनका मित्र है और कौन उनका शत्रु तीसरे अपने दल के अतिरिक्त और किसी को न ज्ञात हो कि इस कोलाहल और तुमुल शब्द का मूल प्रयोजन क्या है ? और कौन लोग इसके प्रवर्त्तक और संयोजक हैं ।

परोजी—'परमेश्वर की शपथ मैं तो अत्यन्त प्रसन्न हूं कि वह समय समीप है जब कि हम लोग अपने मनोरथ के प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करेंगे ।'

फलीरी—'क्यों परोजी तुमने स्वेतसूत्र (फीते) जिन से हम लोग अपने सहायकों को पहचान सकेंगे सम्पूर्ण जनों को बांट दिये ।'

परोजी—'धन्य । कतिपय दिवस हुये, तुम्हें ज्ञात ही नहीं ।'

कांटेराइनो—'अच्छा तो अब अधिक बिवाद करने की आवश्यकता नहीं । बिषय उपस्थित है, केवल कार्य्य प्रारम्भ करने का बिलम्ब है, अब अपना अपना पानपात्र भरते जावो, मद्पान प्रारंभ हो, क्योंकि फिर जब तक कि सम्पूर्ण कार्य्य न हो जावेगा काहेको समागम हो सकेगा ।'

मिमो–' परन्तु मैं समझता हूँ कि इस विषय की पुनरपि पूर्ण बिबेचना और आलोचना कर लेनी चाहिये ॥'

काण्टेराइनो–' अजी रहने भी दो बिबेचना करलेनी चाहिये नहीं एक वह कर लेनी चाहिये, ऐसी बातों में विवेचना नहीं करते यह तो तात्कालिक कार्य्य है, इसे सोचने और बिचारने से क्या प्रयोजन । पहले तत्पर होकर एक बार बेनिस का प्रबंध उलट देना चाहिये, जिसमें कोई पहचान न सके कि स्वामी कौन है, और सेवक कौन है, फिर उस समय निस्सन्देह

बिचार कार्य में परिणत होगा । लो भाई बैठे क्या करते हो पानपात्र पूरित कर पान करना प्रारंभ करो। परमेश्वर की शपथ है कि मुझे तो हँसी आती है, कि महाराज ने आमंत्रण करके आप ही हम लोगों को अपनी अभिसन्धि पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया है ॥"

परोजी-' शेष रहा फ्लोडोआर्डो, उसको तो मैं इसी समय मरा अनुमान करता हूँ तथापि नृपति महाशय के गृहगमन के प्रथम अविलाइनो से मिल लेना उत्तम होगा ॥'

काण्टेराइनो-' यह कार्य हमलोग तुम्हारे ऊपर छोड़ते हैं। अब मैं अबिलाइनो के स्मरण में यह मदपूरित प्याला पीता हूँ ॥

इस पर सबने एक एक पानपात्र अविलाइनो के स्मरण में पान किया। फिर पादरी गानज़ोगाने द्वितीय पानपात्र कार्य्य सिद्धि की कामना करके विष मार कर पिया और सभोंने उसका साथ दिया।

परोजी-' भाई मदिरा है तो स्वादिष्ट और प्रत्येक व्यक्ति के मुखड़े पर इस समय उत्साह भी झलक रहा है, परन्तु देखिये अड़तालिस घण्टे के उपरान्त भी ऐसा आनन्द प्राप्त होता है अथवा नहीं, अभी तो हमलोग हँसी और प्रसन्नता के साथ अलग होते हैं, अब परमेश्वर जाने कि दो दिन के बाद जब फिर एकत्र होंगे उस समय भी यही उत्साह बना रहता है वा नहीं। अच्छा जो हो सो हो अब तो हमने इस भयंकर दरिया में निज नौका को डाल दिया पार लगाने वाला परमेश्वर है।

एकविंशति परिच्छेद ।

द्वितीय दिवस अरुणोदय कालही से महाराज के प्रासाद में आमन्त्रण का आयोजन आरम्भ हुआ । अंड्रियास को रात भर आतङ्क से निद्रा न आई, जैसे ही ऊषाकाल हुआ वह पर्यंक से उठ खड़े हुये । रोजाविलाने अपनी रात अत्यन्त उद्विग्नता के साथ समाप्त की, तमाम रात फ्लोडोआर्डो को ही स्वप्न में देखा की, चौंकने पर भी उसका स्वरूप उसकी दृष्टिके सम्मुख घूमता रहा । कामिला भी जिसने रोजाविला को अपनी दुहिता समान पालन किया था, इसी चिन्ता में कि प्रातःकाल क्या हो क्या न हो बराबर जागती रही । वह भली भांति जानती थी कि आज ही के दिवस पर रोजाविला का भविष्यत निर्भर है । मुँह हाथ धोने उपरान्त कुछ काल पर्यन्त रोजाबिला अत्यन्त प्रसन्न बदन थी । कभी वह आलापिनी बजाकर अपना चित्त प्रसन्न करती, और बहलाती कभी भैरवी का गान करके हृदय की व्यग्रता को निवारण करती, परन्तु जब मध्यान्ह का समय समीप आया, रोजाबिलाने गाना बजाना त्याग कर आयतन में टहलना प्रारम्भ किया । ज्यों ज्यों दिन ढलता जाता रोजाबिला की व्यग्रता वृद्धि लाभ करती । तनिक तनिक सी ध्वनि उसके हृदय पर बाण का सा प्रभाव करती और बार बार उसे चौंका देती थी ।

इस अवसर पर महाराज के प्रशस्त और विस्तृत प्रासाद में वेनिस के समस्त विख्यात व्यक्ति आकर एकत्र होते जाते थे, यहां तक कि तृतीय प्रहर के समीप सम्पूर्ण स्थान पूर्ण होगया । उस समय महाराजने कामिला को आज्ञा दी कि वह रोजाबिला

व्यक्ति चकित और चमत्कृतसा होकर एक द्वितीय का मुख अवलोकन करता था, पर यह कोई न कह सकता था कि पदातियों से और निमन्त्रण से क्या सम्बन्ध। सब से अधिक बुरी गति उन विद्रोहियों की थी, कलेजाबल्लियों उछलता था मुख-पर हवाइयाँ छूट रही थीं, निर्जीव शरीर समान परिचालना हीन होकर वे शिर नीचा किये चुप चाप खड़े थे। कुछ देर बाद महाराज अपने स्थान से उठे और आयतन के बीचों बीच जाकर खड़े हुये, प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि उन्हीं पर थी।

अंड्रियास—'आपलोग हमारे इतने संरक्षण, और चौकसी पर आश्चर्य्य न करें क्योंकि यह निमन्त्रण से सम्बन्ध नहीं रखता। इसका कारण दूसरा है जिसको मैं आपलोगों के सामने वर्णन करता हूँ—आप लोगों ने अबिलाइनो का नाम सुना है, वही अबिलाइनो जिसने कुनारी का नाश किया, जिसने मेरे परमहितैषी मन्त्रदाताओं मानफरोन और लोमेलाइनो को ठिकाने लगाया, और अभी अल्प दिवस हुये कि मोनाल्डसूचीके राज-कुमार को जो हमारे यहां मेहमान आये थे मारा। वही अबि-लाइनो जिससे वेनिस के प्रत्येक निवासियों को घृणा है, जिसके निकट महत्व और मर्यादा कोई नहीं रखता, जो वृद्ध और युवा सब पर हाथ उठाने को उद्यत है। जिसने अद्यावधि वेनिस के विख्यात पुलीस को भी रास्ता बताया है-एक घण्टे के भीतर इसी आयतन में आप लोगों के सम्मुख आकर उपस्थित होगा।

सब लोग—(आश्चर्य्य से) 'ऐं' अबिलाइनो? अबिला-इनो बांका?।

गानज़ेगा—(क्या अपने मन से)।

अंड्रियास—नहीं वह अपने मन से आने वाला पुरुष नहीं है। यह काम फ्लोडोआर्डो नें अपने ऊपर लिया है, चाहे जो कुछ हो वह अबिलाइनो को यहां लाकर अवश्य उपस्थित करेगा।

एक उच्चकर्मचारी—'मैं समझता हूं कि फ्लोडोआर्डो अपनी प्रतिज्ञा कदापि पूरी न कर सकेगा, अबिलाइनो का पकड़ना तनिक टेढ़ी खीर है'।

द्वितीय कर्मचारी—'परन्तु कल्पना कीजिये कि उसने इस कार्य को सिद्ध किया, तो फ्लोडोआर्डोका वेनिस पर बहुत बड़ा उपकार होगा।

तृतीय कर्म्मचारी—'उपकार' धन्य! इतना बड़ा उपकार होगा कि हम सब उसके बोझसे दब जांयगे मैं नहीं जानता कि उसका प्रतिकार क्योंकर किया जायगा'।

अंडियास—'इस कार्य का भार मेरे ऊपर है, फ्लोडोआर्डो ने रोज़ाविला से विवाह करने की प्रार्थना की है अतएव यदि उसने प्रतिज्ञा पालन कर दिखायी, तो रोज़ाबिला उसकी है।'

इस पर सब लोग एक दूसरे को देखने लगे, कोई तो हृदय में अत्यंत प्रसन्न हुआ और किसी को आवश्यकता से अधिक इस बात का संताप हुआ।

फलीरी—(धीरे से) 'परोज़ी देखो क्या होता है।

सिमो—'हे परमेश्वर रत्ता कीजियो केवल इतना सुन कर ही मुझे तप चढ़ आया है।'

परोज़ी—(तुच्छता से मुसकान पूर्वक) 'जी यह भी संभव ही तो है कि अबिलाइनो अपने को आप पकड़वा देगा।'

काण्टेराइनो 'क्यों महाशयो तनिक यह तो कथन कीजिये कि किसी ने अबिलाइनो को अवलोकन भी किया है, कई व्यक्ति अचाञ्चक बोल उठे 'नहीं महाशय मैंने तो नहीं देखा है।

एक कर्मचारी—'अजी उसे मनुष्य क्या रात्तस समझना चाहिये क्योंकि जब उसकी आशा नहीं होती तब वह आकर उपस्थित होता है।

अंड्रियास—'और जब मेरे सामने वह आया उस समय

की बातों से तो आप लोग पूर्णतया अभिज्ञ हैं।'

मिमो—'मैंने इस दुष्टात्मा के विषय में नाना प्रकार के उपाख्यान सुने हैं, जो एक से एक अधिकतर विचित्र हैं, मैं तो समझता हूं कि वह पुरुष नहीं है वरन किसी दुष्टात्मा असुर ने लोगों को संतप्त करने के लिये मनुष्य का स्वरूप ग्रहण किया है, मेरे विचारानुसार तो उसका यहां लाना कभी उचित नहीं क्योंकि वह हम सबको एक साथ ग्रीवा दबा कर नाश कर सकता है॥

स्त्रियां-'ऐ कृपालु जगदीश्वर तू कृपा कर! क्या सत्य कहते हो? वह इसी आयतन में हमलोगोंका नाश कर देगा॥'

काराटे राइनों-'अच्छा पहले मुख्य बात के विषय में तो विचार कर लीजिये अर्थात् यह कि फ्लोडोआर्डो उस पर विजयी रहेगा अथवा वह फ्लोडोआर्डो पर! मैं प्रण करके कहता हूं कि अबिलाइनों के सम्मुख फ्लोडोआर्डोकी एकयुक्ति भी कार्यकर न हो सकेगी॥'

एक माननीय कर्मचारी। और मैं कहता हूं कि यदि वेनिस मे कोई व्यक्ति अविलाइनो को परास्त कर पकड़ सकता है तो वह फ्लोडोआर्डो है। पहले ही जब वह मुझसे मिला मैंने भविष्यत् कहा था कि एक न एक दिन वह कोई ऐसा कार्य करेगा जिससे उसका नाम चिरस्मरणीय होगा॥'

दूसरा कर्मचारी-मैं भी आपसे सहमत हूं और आप ने जो कहा है उसका अनुमोदन करता हूं क्योंकि फ्लोडोआर्डो का स्वरूप ही साक्षी देता है कि वह यशस्वी होगा।

काराटेराइनों-'मैं एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा की बाजी लगाता हूँ, कभी फ्लोडोआर्डो अबिलाइनों को पकड़ न सकेगा, हाँ मृत्यु ने उसको प्रथम ही से अपने हस्तगत किया हो तो दूसरी बात है'॥

पहला कर्मचारी-' और मैं भी सहस्र स्वर्णमुद्रा प्रदान करने के लिये शपथ करता हूं और कहता हूं कि फ्लोडोआर्डो उसको अवश्य पकड़ लावेगा ' ॥

अंड्रियास-' और उसे जीवित अथवा उसका शिर मेरे सम्मुख लाकर उपस्थित करेगा ॥ '

काण्टेराइनो-' महाशयो ! आप लोग इस के साक्षी हैं-आइये महाशय हाथ मारिये, एक सहस्र स्वर्णमुद्रा ' ॥

पहला कर्मचारी-(हाथ मार कर) ' हो चुकी ॥ '

काण्टेराइनों-' मैं आपकी इस कृपा और वदान्यता को देखकर आप को धन्यवाद प्रदान करता हूं-कि आपने एक सहस्र स्वर्णमुद्रायें व्यर्थ मुझको प्रदान कीं, अब लियाजाती कहां हैं, मेरी हो चुकीं। इसमें संदेह नहीं कि फ्लोडोआर्डो बहुत सावधान और पटुव्यक्ति है परन्तु अबिलाइनों का पकड़ना खेल नहीं वह ऐसा धूर्त और काइयां है कि परमेश्वर पनाह ! महाशय के छक्के छोड़ा देगा, देखिये यह आपही कुछ काल में ज्ञात हो जाता है ॥ '

पादरीगाञ्जेगा-' अंड्रियाससे और पृथ्वीनाथ क्या आप यह भी बतला सकते हैं कि फ्लोडोआर्डो के साथ पुलीस के युवक जन भी हैं ? ॥'

अंड्रियास-' नहीं, वह अकला है, लगभग चौवीस घंटे होते है कि वह अबिलाइनो को ढूंढ़ने के लिये गया हुआ है।'

गाञ्जेगा-(काण्टेराइनों से मंद मुसकान पूर्वक) महोदय! ये सहस्र स्वर्णमुद्रायें आपको मुबारक ।

काण्टेराइनों-' सादर प्रणिपात पूर्वक जब आपके मुखारबिन्द से ऐसा निकला है तो मुझे अपने सफल अथवा कृत कार्य होने में तनिक भी संशय नहीं ॥ '

मिमो-' अब तनिक मुझे स्थिरता प्राप्त हुई, और मेरी

बुद्धि ठिकाने आई, अच्छा देखिये आगे क्या क्या होता है ॥'
फ्लोडोआर्डो को प्रस्थान किये हुये तेईस घण्टे व्यतीत हो चुके थे, और अब चौबीसवां भी समाप्त होने को था परन्तु अब तक उसका पता न था ॥

द्वाविंशति परिच्छेद ।

गत परिच्छेद के अन्त में निरूपण हो चुका है, कि फ्लोडोआर्डो के नियत किये हुये समय से पौन घण्टे से कुछ ऊपर समय हो चुका था, पांच बजाही चाहता था, पर अब तक उसका कहीं कुछपता न था। उसके बिलम्ब करने से महाराज अत्यंत व्यतिव्यस्त थे, और वे महाशय जिन्होंने उसकी ओरसे एक सहस्र स्वर्णमुद्रायें लगायीं थीं अपनी मुद्राओं के लिये अलग अकुला रहे थे। यदि प्रसन्न थे तो परोजी और उसके सहकारी, क्योंकि वे यह समझते थे कि अब कुछ काल में सहस्र स्वर्ण मुद्रायें बिना परिश्रम हम लोगोंको हस्त गत होंगी, और महाराज और उनके पक्षपाती मुंह की खायेंगे ॥

काण्टेराइनो प्रच्छन्न रीति से लोगों को बनाता था, और कहता था, कि यदि अबिलाइनों पकड़ जाय और लोगों को इस कण्टक के निवारण हो जाने से सुख प्राप्त हो, तो सहस्र स्वर्णमुद्रायें क्या वस्तु हैं मैं बिंशति सहस्र प्रदान करने के लिये तयार हूँ ॥

वे लोग इसी संकल्प विकल्प में थे कि घड़ियालीने ठनाठन पांचका घण्टा बजाया, और प्रत्येक व्यक्ति एकाग्र मानस से उसको गिनने लगा। एक बड़े कठिन कार्य्य के पूरा करने का

बीड़ा उठाने से सब लोगों को फ्लोडोआर्डो के साथ एक प्रकार की सहानुभूति हो गयी थी, अतएव घण्टों का शब्द श्रवणगत होने पर प्रत्येक के मुखड़े से चिन्ता के चिन्ह प्रगट होने लगे। सबसे अधिकतर रोज़ाविला उद्विग्न थी। उसके हृदय पर घण्टे के ठनाठन शब्दने वह प्रभाव उत्पादन किया जो तीव्रबाण करता है। यदि कामिलाने उसको सँभाल न लिया होता तो वह पृथ्वी पर गिर पड़ती। यद्यपि अंड्रियास को भी फ्लोडो-आर्डो से सच्ची प्रीति थी, और इस कारण से जब उनको इस विषय का ध्यान बँधता था, कि अबिलाइनों ने कहीं उसकी उठती जवानी को धूल में न मिलाई हो तो वह मन ही मन मसोसकर रह जाते थे। परन्तु रोज़ाविलाका स्नेह प्रणय में परिणत हो चुका था अतएव प्रेम पात्र से सदैव के लिये बिच्छेद होजाने का अनुमान, उस पर शोक समूह की वृष्टि करता था। उसने चाहा कि पितृव्य से कुछ समालाप करे, परन्तु खेद और दुःख की अधिकता से कलेजा मुँह को आता था, जिह्वा जड़ हुई जाती थी, और नेत्रों से अश्रु निर्झर समान झर रहे थे। बहुत चाहती थी कि सम्बरण करे पर यह कहां सम्भव था। सत्य है कि जब हृदय पर आघात होता है तो आंसू अपने आप निकलते हैं। अन्ततः विवश होकर वह एक पर्यंक पर वस्त्र से मुखाच्छादन कर लेट रही। उसके लेटते ही जितने लोग शेष थे उनमें से कुछ तो कई झुण्डों में बँट कर पृथक जा बैठे और परस्पर बात चीत करने लगे, और कुछ लोग उस आयतन में अत्यन्त असंतोष के साथ टहलने लगे। इसी भांति एक घंटा व्यतीत होगया और फ्लोडोआर्डो न आया। अब सन्ध्याकाल सन्निकट आगया और सूर्य्य भी डूबने लगा॥

काण्टेराइनो–' क्यों महाशय फ्लोडोआर्डो ने अबिलाइनो को पांचही बजे लाकर उपस्थित करने की प्रतिज्ञा न की थी?

उनकी प्रतिज्ञा से पूरा एक घण्टा अधिक बीत चुका ' ॥

एक कर्मचारी–' मुख्य अभिप्राय तो यही है न, कि वह अबिलाइनों को लाकर उपस्थित करें चाहे एक मास ही क्यों न बीत जाय ' ॥

अंड्रियास–' तनिक आपलोग चुप रहिये देखिये बाहर किसी के पैर की चाप मालूम होती है।"

नृपति महाशय का कथन समाप्त भी न होने पाया था कि उस आयतन का द्वार अचाञ्चक खुल गया और फ्लोडोआर्डो खटसे आयतन में प्रविष्ट हुआ, उस समय वह एक (चुगा) से आवृत था। उसके केशजाल बिखरे हुये थे, और एक आपीड़वान टोपी शिर पर थी । आपीड़से पानी की बूंदें टपक रही थीं, और उसका मुख अत्यन्त उद्विग्न ज्ञात होता था। उसने एक घबड़ाहट भरी दृष्टि से अपनी चारों ओर देखा, और प्रत्येक व्यक्ति को झुक कर प्रणाम किया। उस समज्या के सब लोग क्या लघु क्या महान उसके आस पास एकत्र होगये, प्रत्येक व्यक्ति प्रश्न करता था और उत्तर की प्रतीक्षा करके उसके आनन की ओर देखता था।

मिमो–" ऐ परमेश्वर! तू रक्षा कीजियो मुझे भय है कि ऐसा न हो।"

काण्टेराइनों–(क्रोध का दृष्टि से देख कर) 'बस महाशय चुप रहिये भय करने का कोई कारण नहीं है ॥ '

फ्लोडोआर्डो–(अत्यन्त निर्भयता के साथ) महाशयो! मैं अनुमान करता हूं कि हमारे महराज ने आप लोगों को इस निमन्त्रण के मुख्य अभिप्राय से अवश्य अभिज्ञ कर दिया होगा। सुतरां अब मैं आप लोगो का असमञ्जस निवारण करने के लिये उपस्थित हुआ हूं पर पहले महाराज फिर एकबार मेरा समाधान करदें और आश्वासन कर दें कि यदि मैं अबिलाइनो को

आपके सम्मुख लाकर उपस्थित कर दूं तो रोजाबिला मेरी परिणीता होगी।"

अंड्रियास। (उसकी ओर अत्यन्त उद्विग्नताके साथ देख कर) "फ्रोडोआर्डो तुम सफल मनोरथ हुये? अबिलाइनो को तुमने धृत कर लिया?"

फ्रोडोआर्डो। "आपको इससे क्या यह कथन कीजिये कि यदि अबिलाइनो को मैं लाकर आपके सम्मुख उपस्थित करूं तो मेरा बिवाह रोजाबिला के साथ होगा अथवा नहीं।"

अंड्रियास। अच्छा तुम अबिलाइनो को जीवित अथवा मृतक मेरे सम्मुख लाओ रोजाबिला तुह्मारी है, मैं शपथ करता हूं कि कदापि अपनी प्रतिज्ञा से न टलूंगा, और यह भी कहता हूं कि उसको यौतुक इतना दूंगा कि तुम लोग जीवन पर्य्यन्त महाराजों के समान अपना जीवन व्यतीत करोगे।"

फ्रोडोआर्डो। क्यों महाशयो! आप लोगोंने नृपति महाशय का शपथ श्रवण कर लिया।"

सब लोग एक साथ बोल उठे कि हम लोग तुमारे साक्षीहैं।

फ्रोडोआर्डो। (अत्यन्त धृष्टता से दो कदम आगे बढ़कर) तो श्रवण कर लीजिये अबिलाइनो मेरे आधीन है बरन आप के अधिकार में है।"

प्रत्येक व्यक्ति। (अकुलाकर) "वह हमारे वश में है? ऐ परमेश्वर! तू दयाकर, वह है कहां? अजी अबिलाइनो हमारे वश में है?"

अंड्रियास। जीवित है अथवा मृत होगया?"

फ्रोडोआर्डो। "जी अबतक जीवित है।"

पादरी गाञ्जेगा। (अकुलाकर) "क्या अबतक जीवित है।"

फ्रोडोआर्डो। (अत्यन्त सत्कार पूर्व्वक नतस्कन्धहोकर) "हां महोदय! अबतक जीवित है।"

रोजाबिला। (कामिला की ग्रीवासे लपटकर) प्रिये! कामिला तुमने कुछ सुना? वह दुष्टात्मा अबतक जीवित है, फ्लोडोआर्डोने उसके रुधिर की बूंद भी अपनी गरदन पर नहीं ली।"

वह कर्म्मचारी जिसने शर्त लगायी थी "अजी महाशय काण्टे· राईनो मैंने आपसे एक सहस्र स्वर्ण मुद्रायें जीतीं।"

काण्टेराइनो। "हां महाशय! कुछ ज्ञात तो ऐसाही होता है।"

अंड्रियास। 'बेटा तुमने वेनिस पर सदा के लिये बड़ा उपकार किया, और मैं प्रसन्न हूं कि उस पर यह बहुत बड़ा उपकार फ्लोडोआर्डो का हुआ।"

एक कर्म्मचारी। मैं आपको इस उपकार के बदले में वेनिस के सेनेट की ओर से धन्यवाद प्रदान करता हूं। अब हमलोगों को सबसे पहले यह कार्य्य करना है कि तुम्हारी इस उत्तमोत्तम सेवा का कोई उचित पुरस्कार निश्चित करें।"

फ्लोडोआर्डो। '(रोजाबिला की ओर कर द्वारा संकेत कर के) मेरा पुरस्कार वह है॥"

अंड्रियास। '(प्रसन्न होकर) 'वह अब तुम्हारी हो चुकी पर यह तो बताओ कि तुम उस दुष्टात्मा को कहां छोड़ आये हो? यहां उसको लेआओ जिसमें मैं उसको एकबार और देख लूं। जब मुझसे समागम हुआ था तो उसने अत्यन्त अपमान पूर्वक कहा था 'नृपति महाशय मैं आप के समान हूं इस संकीर्ण कोठरी में इस समय वेनिस के दो महद् व्यक्ति उपस्थित हैं॥" तनिक अब अवलोकन करूं कि यह द्वितीय महद् व्यक्ति बँधा हुआ कैसा ज्ञात होता है॥"

दो तीन माननीय कर्मचारी। 'वह कहां है लाकर उपस्थित क्यों नहीं करते॥"

इस बातको सुनकर कतिपय स्त्रियां चिल्लाकर कहने लगीं 'परमेश्वर के लिये उस दुष्टात्मा को अलग ही रखो, यदि वह यहां

आया तो हमलोगों के जीवन समाप्त हो जाने की आशंका है॥"

फ्रोडोआर्डो। '(मुसकान पूर्वक जिससे प्रसन्नता के बदले में दुःखका विकाश होता था) 'ऐ माननीया कोमलांगियो तुम कदापि कुछ भी न डरो क्यों कि अविलाइनो तुम्हारी किसी प्रकार की क्षति न करेगा, परन्तु उसका यहां आना अवश्य है इसलिये कि ((बांके की पत्नी) के विषय में प्रगटतया प्रार्थना करे'। यह कह कर उसने रोजाबिला की ओर संकेत किया।

रोजाबिला—'मेरे दृढ़ और अकृत्रिम मित्र तुमने मेरी चिन्ताको निवारण किया मैं किस मुखसे तुमको धन्यवाद प्रदान करूं। अब मैं अविलाइनो का नाम श्रवण कर कभी न डरूंगी, और रोजाबिला को अब कोई बांके की पत्नी' न कहेगा'।

फलीरी—'क्या इस समय अविलाइनो इस आयतन में विद्यमान है'।

फ्रोडोआर्डो—'हां'

एक कर्म्मचारी—'तो आप क्यों उसे लाकर उपस्थित नहीं करते, क्यों हमारे असमंजस को द्विगुण त्रिगुण कर रहे हैं'॥

फ्रोडोआर्डो—'तनिक क्षमा कीजिये अब उसके आगमन का समय समीप है॥ महाराज आप बैठ जायँ और दूसरे लोग महाराज के पीछे खड़े हों। अविलाइनो आता है'।

अविलाइनो आता है' इस कहने पर वृद्ध युवक स्त्री पुरुष सब विद्युत् समान अपने स्थान से कूदकर अंड्रियास के पीछे जा खड़े हुये। उस के भय से प्रत्येक का कलेजा बल्लियों उछल रहा था, परन्तु परोज़ी और उसके मित्रों की दशा सबसे निकृष्टतम थी। महाराज अपनी कुर्सीपर अत्यन्त सावधानता पूर्वक मौनावलम्बन किये बैठे थे। उनका मुख अवलोकन करने से यह ज्ञात होता था, कि मानो उन्हें लोगोंने उस चोर और डाकुओं के मौलिमणि के विषय में अनुशासन देने के लिये न्याय कर्त्ता

नियत किया है। कौतुक दर्शक प्रत्येक ओर कतिपय समूह में एकत्रित थे, और उनकी निस्तब्धता का वह समा था जैसा अपराधी की फांसी की आज्ञा सुनने के समय होता है। रोजाबिला सामान्यतया कामिला के कन्धे पर हाथ रक्खे खड़ी थी। और अपने प्रेमी की वीरता देख कर जीही जी में प्रसन्न थी। परोजी और उसके साथी सबके पीछे खड़े हुये थे और किसी के मुख से श्वास पर्यंत नहीं निकलता था।

फ्लोडोआर्डो—'अच्छा ले' अब आप लोग सावधान हो जायँ क्योंकि अबिलाइनो यहां अब तत्काल आकर उपस्थित होगा' कोई महाशय घबरावें नहीं वह किसी की कुछ हानि न करेगा'।

यह कहकर वह उन लोगों के निकट से द्वार की ओर गया और वहां पहुँचकर उसने कियतकाल पर्यन्त अपना मुख अपने धृतपरिच्छद द्वारा आवृत किया। इसके उपरांत शिर उठाकर अविलाइनो का नाम लेकर पुकारा उस समय वहां जितने लोग विद्यमान थे अबिलाइनो का नाम श्रवण कर थर्रा उठे और उनके शरीर में कम्प का संचार हो गया। रोजाबिला भी भयग्रस्त होकर अपने प्रेमी की ओर कम्पितगात से कतिपय पदक्रम आगे बढ़ी। उसकी यह दशा कुछ अपने संरक्षण के विचार से न थी, बरन वह फ्लोडोआर्डो की जीवन रक्षा के लिये अकुलाई हुई थी। अबिलाइनो के न आने पर फ्लोडोआर्डो ने दूसरी वार क्रोधपूरित वाणी से फिर पुकारा और अपना (चुगा) और अपनी टोपी फेंक कर और द्वार कपाट खोलकर बाहर जाने ही को था, कि रोजाबिला चिल्ला कर उसकी ओर दौड़ी किन्तु फ्लोडोआर्डो अन्तर्हित हो गया और उसके स्थान पर अबिलाइनो भोंड़ी और महाभयावनी आकृति से 'हा हा' करता हुआ दृष्टिगोचर हुआ।

त्रयविंशति परिच्छेद ।

विगत परिच्छेद के अंतिम भाग के पठन करने से इस मनोहर उपाख्यान के पाठकों को एक बहुत बड़े आश्चर्य्य ने आच्छादन किया होगा और क्यों न करे आश्चर्य्य की बात ही है समझे कुछ और थे हुआ कुछ और। भाई परमेश्वर का शपथ है कि मुझे भी प्रायः महाराज के समान इस विषय का ध्यान होता था कि बेचारे फ्लोडोआर्डो की युवावस्था निष्प्रयोजन अकारथ गई, और अबिलाइनो मन्द-भाग्य ने उसे भी मार खपाया। परन्तु इस बात से किञ्चिन्मात्र समाधान होता था कि फ्लोडोआर्डो ने इस कार्य्य के सम्पादन का भार कुछ समझ ही कर ग्रहण किया होगा, बारे परमेश्वर परमेश्वर करके इस प्रतीक्षा का शेष हुआ, और हृदय के नाना-तर्क समूहों ने प्रयाण करने की चेष्टा को, अर्थात् फ्लोडोआर्डो ने अपना स्वरूप दिखलाया. और लोगों को अबिलाइनो के आयत्त हो जाने का शुभ समाचार श्रवण कराया। परन्तु अब एक नूतन घटना घटित हुई अर्थात् जिस समय वह नृपति महा-राज के प्रशस्त प्रासाद में आकर उपस्थित हुआ तो किसी को यह न ज्ञात हुआ कि फ्लोडोआर्डो अचाञ्चक कहाँ लुप्त होगया, और उसके स्थान पर अबिलाइनो क्यों कर आ प्रस्तुत हुआ। सब की बुद्धि लुप्त प्राय थी कि यह कैसा अनिर्बचनीय इन्द्रजाल है। नये खेल कौतुक तो ऐन्द्रजालिकों के बहुत देखे परन्तु यह अद्भुत कायापलट है कि समझही में नहीं आता। इस पर बिलक्षणता और विचित्रता यह थी कि अबिलाइनों के आतंक से लोगोंकी संज्ञा और सुधि अकस्मात् विनष्ट हो गई, तनिक पता मिलता ही न था कि पृथ्वी खागई, अथवा आकाश निगल गया,

उसके आते ही सब लोग इस रीति से चिल्ला उठे कि सम्पूर्ण आयतन गूंज उठा। रोजाबिला अबिलाइनों के पद सन्निकट अचेत होकर गिर पड़ी और अपर स्त्रियां मन्त्र पाठ करने और परमेश्वरका ध्यान करने लगीं। परोजी और उनके सहकारियों की क्रोध, भय और आश्चर्य से बुरी गति थी। और जितने मनुष्य वहां विद्यमान थे सब को अपने चैतन्य और सुधि के विषय में संदेह था। यदि बुद्धि ठिकाने थी, तो अबिलाइनों की वह अपने उसी ठाट और उसी परिच्छद से कटिदेश को तुपक और यमधार से सज्जित किये डाब में करवाल डाले, अपनी स्वभाविक भोंडी आकृति से निश्शंक खड़ा था। उस समय आपका स्वरूप चित्र उतारने योग्य था, उत्तमता पूर्वक कोई आकार सुगठित और रम्य न था। मुख देखिये तो एक कल पर स्थिरता ग्रहण करता हो न था। कम्पास की सूचिका समान कभी पूर्व कभी पश्चिम, भृकुटि युगल आंखोंपर इस प्रकार लटकी पड़ती थी, जैसे वर्षाकाल में किसी अकिंचन व्यक्ति की झोपड़ी। ऊपर का ओष्ठ आकाश का समाचार लाता था तो अधोभागका रसातल का, दक्षिणाक्ष परएक बड़ी सी पट्टी लगी हुई थी, और वाम नेत्र शिरमें घुसा हुआ था। इस भयानक स्वरूप से वह कतिपय क्षण पर्यन्त चारो ओर दृष्टिपात करता रहा, फिर महाराज की ओर जा सिंहके समान गर्ज कर कहने लगा महाराज आप ने अबिलाइनो को स्मरण किया था, लीजिये वह प्रस्तुत है, और अपनी पत्नी को बिदा कराने आया है। अंड्रियास अत्यन्त भय पूर्वक उसकी ओर देखा किये कठिनता से यह शब्द उनकी जिह्वासे निकले 'यह कदापि सत्य नहीं हो सकता, मैं निस्सन्देह स्वप्न देख रहा हूँ। उस समय पादरी गाञ्जेगाने पहरे के पदातियों को पुकारा और लपक कर द्वारकी ओर जाना चाहा, अबिलाइनो दरवाजा

रोक कर खड़ा हो गया, और तत्काल कटिदेश से बन्दूक निकाल कर पादरी महाशय को दिखाई ॥

अबिलाइनो—'सावधान ! तुम लोगों में से जिसने पहरे के पदातियों को पुकारा अथवा कोई अपने स्थान से हिला, तो कुशल नहीं । अरे मूर्ख पुंगवो ! तनिक तुमको बुद्धि भी है कि निरे गौखे ही हो, भला यह नहीं समझते कि यदि मुझे सिपाहियों का भय होता, अथवा मैं भाग जाना चाहता, तो आप आकर उपस्थित होता, और द्वार पर प्रहरियों को नियत करा देता, कदापि नहीं ! मैं बद्ध होने पर संतुष्ट हूँ परंतु यदि मुझे बलात् बांधना चाहते तो कदापि संभव न था । मनुष्य की यह सामर्थ्य नहीं कि अबिलाइनों को पकड़ सके परंतु न्याय के निमित्त उसका परतंत्र होना आवश्यक था, इसलिये वह स्वयं आकर उपस्थित हुआ । क्या आप लोग अबिलाइनो को ऐसा वैसा मनुष्य समझे हुये हैं कि पुलिस वालों से मुख छिपाता फिरे, अथवा एक एक कौड़ी के लिये लोगों का जीवन समाप्त करने का अनुरक्त हो । राम ! राम !! अबिलाइनों ऐसा नीचाशय नहीं है । मानलिया कि मैंने डाकुओं की जीविका ग्रहण की परंतु इसके बहुत से कारण हैं ।

अंड्रियास (हाथ मलकर)—'ऐ परमेश्वर ये बातें भी संभव हैं' ।

जिस समय अबिलाइनों सम्भाषण कर रहा था, सब लोग खड़े थर्राते थे, उसके चुप हो जाने पर भी आयतन में देर तक सन्नाटा रहा । वह आयतन में अत्यंत उमंगपूर्वक टहल रहा था और प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर आश्चर्य और भय से देखता था । इस बीच रोजाबिला ने आंखें खोलीं और उसकी दृष्टि अबिलाइनो पर पड़ी ।

रोजाबिला—'ईश्वर पनाह ! यह अब तक यहां उपस्थित

है' मैं समझती थी कि फ्लोडोआर्डो है, ऐ हैं क्या धोखा हुआ।

यह सुन अबिलाइनो ने उसके निकट जाकर उसे पृथ्वी से उठाना चाहा पर वह भीत होकर दूर हट गई॥

अबिलाइनो—(वाणी परिवर्तन कर) 'सुनो रोज़ाबिला जिस को तुम फ्लोडोआर्डो समझे थीं वह वास्तव में अबिलाइनो था'॥

रोज़ाबिला—(उठकर और कामिला के समीप जाकर) 'झूठ बकता है! ऐ दुष्ट तू कदापि फ्लोडोआर्डो नहीं है! कहां तू कहां वह! भला क्यो कर सम्भव है कि तुझसा विकृत राक्षस फ्लोडोआर्डो कासा स्वरूपमान देवता हो' फ्लोडोआर्डो का चाल ढाल और चलन देवताओं के समान था। उसने मेरे हृदय में उच्च अथच उत्तम कार्यो तथा भावों के स्नेह का बीजारोपण किया और उसीने मुझको उनके करने का साहस दिलाया। उसका हृदय सम्पूर्ण बुरे विचारों से रहित था और उसमें केवल प्रशस्त और प्रशंशनीय बातें भरी थीं। आजतक फ्लोडोआर्डो कभी सत्कार्य्यों के करने से पराङमुख नहीं हुआ, चाहे उसे कितनी ही आपत्ति क्यों न सहन करनी पड़ी हो। उसका अनुराग सदैव इसी विषय की ओर विशेष था कि जहां तक होसके दीनों और अनाथों की सहायता करे! ऐ दुष्ट न जाने कितने निरपराधी तेरे हाथ से मारे गये होंगे और कितने गृह तेरे कारणसे सत्यानाश हुये होंगे। स्मरण रख कि जो तूने फिर फ्लोडोआर्डोका नाम मेरे सामने लिया तो अच्छा न होगा॥

अबिलाइनो—(अत्यंत स्नेहपूर्वक) 'क्यों रोज़ाबिला अब तुम मुझसे निर्दयता करोगी? देखो रोजाबिला समझ लो कि 'मैं और तुमारा फ्लोडोआर्डो' दोनों एकही पुरुष हैं॥

यह कहकर उसने अपनी दाहिनी आंख पर से पट्टी हटा

ही, और एक अथवा दो बार अपने मुख को वस्त्र द्वारा पोंछ लिया. फिर क्या था तत्काल स्वरूप बदल गया. और सब लोगों ने देखा कि वही स्वरूपमान युवक फ्लोडोआर्डो उनके सामने बांकों का सा ढंग बनाये खड़ा है।

अबिलाइनो—'स्मरण रखो रोजाविला मैं तुम लोगोंके सामने अष्टादश बार अपना स्वरूप इस चातुर्य्य के साथ बदल सकता हूं कि चाहे तुम लोग कितना ही विचार करो फिर भी धोखे में ही रहोगी परन्तु एक बात भली भांति समझलो कि अबिलाइनो और फ्लोडोआर्डो दोनों एकही व्यक्ति हैं' ॥

नृपति महाशय उसकी बातों को श्रवण करते और उसकी ओर देखते थे परन्तु अब तक उनका चित्त ठिकाने नहीं था। अविलाइनों ने रोजाविला के समीप जाकर अत्यन्त प्रार्थना पूर्वक कहा 'क्यों रोजाविला तुम अपनी प्रतिज्ञा न पुरी करोगी? अब तुमको मेरी तनिक भी प्रीति नहीं?' रोजाविला ने उसकी बातों का कुछ उत्तर न दिया और प्रस्तर प्रतिमासमान खड़ी उसकी ओर देखा की। अबिलाइनो ने उसके नवकिशलय सदृश करों का चुम्बन करके फिर कहा 'रोजाविला अब भी तुम मेरी हो?' ॥

रोजाविला-'हा हन्त! फ्लोडोआर्डो भला होता यदि मैंने तुझे न अवलोकन किया होता और तेरे स्नेह पाशबद्ध न हुई होती' ॥

अविलाइनो-'क्यों रोजाविला तुम अबभी फ्लोडोआर्डो की पत्नी होगी? अब भी बांके की स्त्री होना स्वीकार करोगी?' ॥

इस समय रोजाविला के हृदय की अवस्था का उल्लेख, न, करना ही उत्तम है' कभी स्नेह का उद्रेक होता था और कभी घृणा का, और दोनों में परस्पर झगड़ा था ॥

अविलाइनो-सुनो प्रियतमे!"मैंने तुम्हारे ही निमित्त देखो इतने संकटों को सहन किया, और अपने को प्रगट किया,

तुम्हारे निमित्त न जाने और क्या करने के लिये तैयार हूँ अब मैं केवल इस बात की प्रतीक्षा करता हूं कि तुम एक शब्द हां अथवा नाहीं कह दो बस झगड़ा समाप्त हुआ। बोला तुम अब भी मुझसे स्नेह रखती हो?' ॥

रोजाविला ने फिर भी उसके प्रश्न का कुछ उत्तर न दिया परन्तु एक वार उसकी ओर इस स्नेह और प्रीति की दृष्टि से अवलोकन किया, जिससे स्पष्ट प्रकट होता था कि अब तक उसका मन अबिलाइनो के अधिकार में अथवा उसके वशवर्ती है-फिर वह उसके निकट से यह कहती हुई कामिलाके अंक में जागिरी 'परमेश्वर तुम पर कृपा करे तुमने बेढंग मुझको सताया' ॥

इस समय नृपति महाशय की चेतनाशक्ति सपाटूकी यात्रा करके पलट आई और वह अपने स्थान से उठ खड़े हुये। उन का मुख क्रोधके मारे लाल हो रहा था और मुख से सीधी बात नहीं निकलती थी। उठतेही अविलाइनो की ओर झपट पड़े परन्तु इतनी कुशल हुई कि कुछ लोग बीच में आगये और उन्होंने रोक लिया। अविलाइनों उनके समीप अत्यन्त स्थिरता और निर्भयता पूर्वक गया और उनसे क्रोध कम करने के लिये कहा ॥

अविलाइनो-'महाराज कहिये अव आप अपनी प्रतिज्ञा पालन कीजियेगा अथवा नहीं आपने इतने लोगों के सामने वचन हारा है' ॥

अंड्रियास-'चुप दुष्टात्मा कृतघ्न! देखिये तो इस दुष्टने किस युक्ति से मुझको फांसा है, भला आपही लोग कहें कि यह मनुष्य इसके योग्य है कि मैं प्रतिज्ञा पालन करूँ' इसने यहां बहुत दिनसे डाकू का कर्म करना प्रारम्भ किया और वेनिसके अच्छे अच्छे लोगों को मिट्टी में मिलाया। उसी अनुचित

आयके द्वारा इसने अपने को उच्चकुलजात प्रसिद्ध किया, और विलक्षणता यह कि सम्भ्रान्त बन कर मेरे यहां प्रविष्ट हुआ, और चट रोजाविला का मन अपने वश में कर लिया। फिर छल करके मुझसे रोजाविला के साथ उद्वाह करने की प्रतिज्ञा कराई और अब चाहता है कि मैं उसे पालन करूँ इसलिये कि बचार्जो मेरे जामाता बनकर उचित दण्ड से बच जायँ और रङ्गरलियां मनायें। महाशयो कथन कीजिये ऐसे व्यक्ति के साथ प्रतिज्ञा पालन करना उचित है' ॥

सब लोग-(एक मुँह होकर) "कदापि नहीं, कदापि नहीं" ॥

फ्लोडोआर्डो-' यदि एक वार आपने बचन हार दिया तो उसे पूर्ण करना उचित है चाहे राक्षस के साथ ही आपने बचन क्यों न हारा हो। छी! छी! खेद है कि मैंने क्या धोखा खाया मैं समझता था कि भले मानसो से काम पड़ा है यदि यह जानता कि ऐसे लोग हैं तो कदापि इस कार्य में न पड़ता। (डपट कर) महाराज! अंतिम वार मैं आपसे फिर पूछता हूँ कि आप अपनी प्रतिज्ञा को पालन करेंगे वा नहीं?'

अंड्रियास-(घुड़क कर) 'शस्त्रों को दे दो' ॥

अबिलाइनो-' तो वास्तव में आप रोजाबिला को मुझे न दीजियेगा क्या निष्प्रयोजन मैंने अविलाइनो को आपके वश में कर दिया?' ॥

अंड्रियास-' मैंने फ्लोडोआर्डो से प्रतिज्ञा की है, पापकर्म्म रत, बधिक, अविलाइनो से मुझे कोई प्रयोजन नहीं है, यदि फ्लोडोआर्डो आकर निज प्राप्त वस्तु की याचना करे तो निस्स- न्देह रोजाविला उसे मिल सकती है परन्तु अविलाइनो उसके लिये याचना नहीं कर सकता। द्वितीय बार मैं कहता हूँ कि शस्त्रों को रख दो।'

अविलाइनो। (भोंड़ी रीति से हास्यपूर्वक) 'अहा! आप मुझे बधिक कहते हैं, बहुत उत्तम. आप अपने कार्य्य को देखिये मेरे पापों के पीछे न पड़िये वे मुझसे सम्बन्ध रखते हैं, प्रलय के दिवस मैं परमेश्वर को समझा लूंगा।'

पादरी गाञ्जेगा-' ऐ चाण्डाल! दुष्टपुत्र! क्या अयोग्य बातें अपने मुख से निकालता है।'

अविलाइनो-' ओहो! पादरी महाशय तनिक इस समय महाराज से मेरी रक्षा के लिये कुछ कह दीजिये, यही अवसर सहायता करने का है. आप तो मुझसे भली भांति अभिज्ञ हैं मैंने सदा आप का कार्य तन मन से कर दिया है, और तनिक बहाना नहीं किया है, इसको तो आप अस्वीकार नहीं कर सकते भला इस समय तो काम आइये और मेरा पक्ष समर्थन करके मुझे बचा लीजिये '॥

पादरी महाशय। (मुंह बनाकर) स्मरण रख कि जो मुझ से बेढंग बोला तो अच्छा न होगा, और सुनिये दुष्टात्मा की बातें, कहता है कि मैंने निरन्तर आपका कार्य कर दिया है भला मेरा कौनसा कार्य तुझसे अटका था, महाराज बिलम्ब न कीजिये, पदातियों को घरके भीतर बुला ही लीजिये।

अबिलाइनो-' एँ, अब मैं बिल्कुल निराश हो जाऊं, किसी को मुझ मन्दभाग्य पर दया नहीँ आई, हाय! कोई तो बोलता (कुछ काल पर्यन्त ठहर कर) सब चुप हैं सब, बस झगड़ा समाप्त हुआ, बुलाइये महाराज पदातियों को बुलाइये।'

यह सुन रोजाबिला चिल्ला कर महाराज के युगल चरणों पर गिर पड़ी और रुदन करके कहने लगी 'क्षमा! क्षमा! परमेश्वर के लिये अबिलाइनो पर कृपा कीजिये।'

अबिलाइनो-(हर्षसे कूदकर) प्यारी तुम ऐसा कहती हो? बस अब मेरो प्राण सुगमतया शरीर से निकलेगा।

रोजाविला-(महाराज के चरणों से लिपट कर) 'मेरे अच्छे पितृव्य उस पर दया करो, वह पापात्मा है परन्तु उसे परमेश्वर पर छोड़ दो, वह पाप कर्म्म रत है परन्तु रोजाविला अब तक उससे स्नेह करती है।'

अंड्रियास-(क्रोधसे उसको हटा कर) दूर हो ऐ मन्दभाग्ये! मुझे उन्माद होजायगा।

चतुर्विंश परिच्छेद।

अबिलाइनो रोजाविलाका स्नेह और महाराज की निष्ठुरता को चुपचाप खड़ा देखता था, और उसकी आंखों में आँसू डबडबा रहे थे। रोजाविलाने महाराज का हाथ दो बार चुम्बन कर कहा 'यदि आप उस पर दया नहीं करते तो मानों मुझ पर नहीं करते, जो दण्ड आप उसके लिये अवधारण कीजियेगा वह मेरे निमित्त पहले हो चुका, मैं अपने और अविलाइनो दोनों के लिये आपसे क्षमा और दया की याचना करती हूँ, वह न होगा तो मेरा जीना भी कठिन है, परमेश्वर के लिये पूज्य पितृव्य मेरा कहना मान लीजिये और उसे स्वतन्त्रता प्रदान कीजिये।

इतनी प्रार्थना करने पर भी महाराज ने स्पष्ट उत्तर दे दिया कि अबिलाइनो बच नहीं सकता अवश्य फांसी पावेगा।

अबिलाइनो-क्यों महाशय यही सौजन्य है कि वह बेचारी आपके चरणों पर गिर कर रुदन करे और आप खड़े देखा करें, धिक्कार है ऐसी कठोरता पर, जावो बस ज्ञात हुआ कि तुम निरे जंगली हो, तुम कदापि रोजाबिला के साथ उतना

स्नेह नहीं करते जितना कि तुमको करना उचित था, अब वह आपकी नहीं है मेरी है।'

यह कह उसने रोजाबिला को उठा कर अपनी छाती से लगाया और उसके अरुणाधरोंका चुम्बन करके कहा 'प्यारी रोजाबिला अब तुम मेरी हो चुकी; उहँ! क्या करूं कुछ वश नहीं चलता बुरे भाग्य की क्या औषध है। हाय! कतिपय क्षण में अबिलाइनो का शिर धरातल पर रक्तपूरित लोटता होगा पर मुझे हर्ष इस बातका है कि तुम मुझसे उतना स्नेह करती हो जितना कि स्नेह के मार्ग की सीमा है, अब मुझे किसी बातका दुःख नहीं। अच्छा अब मुख्य कार्यको देखना चाहिये।

उसने रोजाबिलाको जो मूर्छित होरही थी कामिला की गोद· में बैठा दिया और आप आयतन में बीचों बीच खड़े होकर लोगों की ओर यों प्रवृत्त हुआ 'क्यों महाशयो आपलोगों का दृढ़ बिचार है कि मेरा शिर कर्त्तन किया जाय? और अब मैं आपसे क्षमा और कृपाकी आशा न रक्खूँ? बहुत उत्तम, जैसी आप लोगों की इच्छा हो कीजिये मुझे कुछ कथन की आवश्य· कता नहीं। परन्तु इससे प्रथम कि आप मेरे लिये कोई दण्ड निर्धारण करें मैं आप लोगों में से कतिपय व्यक्तियों का दण्ड निर्धारण करता हूं. भली भांति एकाग्र चित्त होकर श्रवण कीजिये. आपलोग मुझको कुनारी का घातक, पेलो मानफ्रोनका नाशक, और लोमेलाइनोका बिनाशक, न समझते हैं, कहिये हां! अच्छा, पर आप उन लोगों को भी जानते हैं जिन्हों ने उनके विनाश करने के लिये मुझे सन्नद्ध किया था और मुझे सहस्रों मुद्रायें दी थीं। यह कह कर उसने सीटी बजाई जिसके साथही द्वार कपाट धड़से खुल गया। और पहरेके पदातियोंने भीतर घुस कर परोजी और उस के सहकारियों को दृढ़ पाश में बांध लिया।

अविलाइनो। (भर्त्सनापूर्वक) 'देखो इनका संरक्षण भली भांति करो, तुम लोगों को आदेश मिल चुका है। (समज्याके लोगों से) महाशयो! इन्ही दुष्टात्माओं के कारण वेनिस के तीन विख्यात महाजनों का जीवन समाप्त हुआ। (उनकी ओर संकेत करके) एक, दो, तीन, चार और हमारे पादरी महाशय पांच। परोजी और उस के सहकारी उद्विग्न और व्यग्र खड़े थे मुख पर हवाइयां छूट रही थीं और किसी के मुख से आधी बात भी न निकलती थी और निकले क्यों कर कहावत है कि चोर का हृदय कितना और फिर ऐसे साक्षी को झूठा कहना अत्यन्त कठिन था। इस के अतिरिक्त उन्हें यह क्या आशा थी कि अकस्मात् परमेश्वरी कोप उन पर ऐसा हो जावेगा और इस प्रकार वह आयत्त हो जावेंगे। कहां वह परस्पर उत्तमोत्तम संकेतों को कर रहे थे और कहां कठिन पाश में बद्ध हो गये और बिवशता ने उनको जकड़ दिया। ऐसी दशा में अच्छे २ लोगों की चेतना शक्ति नष्ट हो जाती है और वेतो अपराधी ही थे। अकेले उन्हीं की यह गति न थी बरन जितने लोग वहां विद्यमान थे चकित और चमत्कृत से हो कर यह कौतुक देखते और एक दूसरे से पूछते थे परन्तु कोई उसके मुख्य भेद से अभिज्ञ न था। कुछ देर बाद जब पादरी महाशय की चेतना शक्ति कुछ ठीक हुई तो उन्हों ने कहा 'महोदय! यह व्यर्थ हम लोगों को लिये मरता है। भला हम लोगों को इन बातों से क्या संबंध है, महाराज यह सर्वथा कपट और छल है। अब इस ने यह सोचा है कि मैं तो डूबताही हूं औरों को भी क्यों न निज साथी कर लूं, ईश्वर का शपथ है कि यह सर्वथा बनावट और कलंक है।,

काएटेराइनो। ' अपने जीवन में इस ने बहुतेरे लोगों का प्राण हरण किया है अब मरते समय भी दो चार को अपने साथ ले मरना चाहता है।'

अविलाइनो। (डांटकर) 'बस चुप रहो! मैं तुम्हारी सम्पूर्ण युक्तियों से अभिज्ञ हूं, वह तालिका भी देख चुका हूं और जो कुछ तुम लोगों ने प्रबन्ध किया है मुझे सब ज्ञात है। इस समय मैं तुम से बातें कर रहा हूं और वहां पुलीसवाले मेरी आज्ञा से उन महाशयों को जिनके भुज मूल पर स्वेत सूत्र (फीते) बँधे हैं और जिन्हों ने आज की रात वेनिस के सत्यानाश करने की मंत्रणा की थी पकड़ रहे हैं, बस अब चुप रहो अस्वीकार करना व्यर्थ है।'

अंड्रियास—'अबिलाइनो परमेश्वर के लिये तनिक मुझे तो बतला कि इसके क्या अर्थ हैं।'

अविलाइनों—'कुछ नहीं केवल इतना कि वेनिसके सत्यानाश और उसके शाशनकर्ता का प्राण हरण करने के लिये कुछ मनुष्यों ने एका किया था, अबिलाइनोंने अनुसंधान करके उसका पथ बन्द कर दिया, अर्थात् आपलोगों की इस अनुकंपा के बदले में कि अभी आप उसका शिरकर्त्तन करना चाहते थे उसने सबको मृत्यु के कठिन आघात से बचा दिया'॥

एक कर्मचारी—(अपराधियोंसे) 'क्यों महाशय आपलोगों पर ऐसा भारी दोषारोपण किया गया है और आपलोग मौन हैं॥'

अबिलाइनो—वे ऐसे मूर्ख नहीं हैं कि अस्वीकार करें, इस से लाभ ही क्या होगा, उन के साथी राजकीय कारागार में पृथक् पृथक् बद्ध हैं, आप वहां जाकर उन से पूछिये तो आपको इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था ज्ञात हो जायगी। अब आप समझे होंगे कि मैंने इस आयतन के द्वार पर अबिलाइनो के पकड़ने के लिये प्रहरियों को नहीं सन्नद्ध किया बरन इन्हीं लोगों के लिये, तनिक अब आप अपनी कृतज्ञता और मेरे वर्ताव और कर्तव्य का विचार कीजिये, मैंने अपने प्राणको संकट में डालकर वेनिस को सत्यानाश होने से बचाया है। डाकुओं का

वेश बदल कर उन लोगों की समज्यावों में प्रविष्ट हुआ, जिन्हों ने लोगों के बध कराने की वृत्ति ग्रहण की थी, आप लोगों के निमित्त मैंने सर्द्गर्म सब कुछ सहन किया, आपकी अहर्निशि रक्षा करता रहा, और वेनिस अथच उस के निवासियों को विनष्ट होने से बचाया, और इस बड़ी सेवा सम्पादन करने पर भी मैं किसी पुरस्कार के योग्य न निश्चित किया गया। यह सब दुःख, क्लेश और संताप मैंने केवल रोजाबिला के लिये उठाया है फिर भी आप प्रतिज्ञा करके उस से फिरे जाते हैं। मैंने आप लोगों को मृत्यु के कर से छुड़ाया, आपकी स्त्रियों के पातिव्रत धर्म्म का संरक्षण किया, और आपके बालकों की रक्षा की इस पर भी आप मेरा शिर खण्डन किया चाहते हैं। तनिक इस तालिका को अवलोकन कीजिये और देखिये कि आप लोगों में से आज कितनों के प्राणका अपहरण होता, यदि अविलाइनो ने रोक न की होती। यह आप के सम्मुख अपराधी विद्यमान हैं जिन्हों ने आप के नाश करने का प्रयत्न किया था। प्रत्येक के मुख को नहीं देखते कि कैसी फिटकार बरस रही है। कोई भी अपने को निष्कलंक सिद्ध करने के लिये जिह्वा हिलाता है। कोई भी इस लांछन के असत्य प्रमाणित करने की चेष्टा करता है। परन्तु इसके अतिरिक्त मुझसे और प्रमाण लीजिये,। यह कहकर वह अपराधियों की ओर प्रवृत्त हुआ ' सुनो तुम लोगों में से जो व्यक्ति सत्य और तथ्यवचन कथन करेगा वह अवश्यमेव मुक्त हो जायगा। मैं शपथ करके कहता हूं, मैं अविलाइनों बाँका,। यह सुन कर वह लोग चुप रहे परन्तु कुछ घड़ी बाद अकस्मात मिमो महाराज के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि जो कुछ अबिलाइनों ने कथन किया है सत्य है' ॥

परोज़ी प्रभृति—(असत्य है सर्बथा असत्य है' ॥

अबिलाइनों—(भर्त्सना पूर्वक) चुप रहो, स्मरण रक्खो

कि जो जिव्हा हिलाई तो अच्छा न होगा। (उच्चस्वर से) प्रकट हो ! प्रकट हो ! यही समय है'। उसने फिर सीटी बजाई, तत्काल द्वारकपाट खुल गया और महाराज के तीनों प्राचीन मित्र कोनारी लोमेलाइनो और मानफरोन आकर उपस्थित हुये। यह देख काण्टेराइनो ने कुक्षिप्रान्त से यमधार निकाल कर आत्मघात किया शेष चार अपराधियों को पदातिगण अपने साथ ले गये। महाराज ने जो अपने बिछुड़े हुये मित्रों को बहुत कालोपरान्त पाया तो दौड़ कर उनसे लिपट गये और प्रत्येक के गले लग कर बहुत ही रुदन किया। यह दशा अवलोकन कर अपर लोगोंकी आंखोंमें भी आंसू भर आया। नृपति महाशय को कदापि आशा न थी कि उन लोगों से स्वर्ग के अतिरिक्त फिर कभी समागम होगा। इसलिये उनको जीवित पाकर परमेश्वर को लाखो बार उन्होंने धन्यवाद प्रदान किया। इन चारों मनुष्यों में बालापन ही से अत्यन्त प्रीति थी, और चिरकाल से अविछिन्न मैत्री निर्वाहित थी, युवावस्था में बहुत काल पर्य्यन्त एक द्वितीय के सहायक और सहकारी रह चुके थे, इस कारण वृद्धावस्था में वे एक दूसरे का सम्मान और भी अधिक करते थे॥

रोजाबिला अबिलाइनो के गलेसे लिपट कर रुदन कर रही थी और बार बार यही कहती थी 'तू अबिलाइनो प्राणहारक नहीं है। थोड़ी देर बाद महाराज उनके मित्र और दूसरे लोग अपने अपने स्थान पर बैठे और पहले उनके मुख से यही शब्द निकले 'धन्य अबिलाइनो धन्य क्यों न हो परमेश्वर तुझको चिरजीवी करे, निस्सन्देह तूने हम लोगों के प्राण की रक्षा की। अब प्रत्येक व्यक्ति की जिव्हा पर अबिलाइनो की प्रशंसा के शब्द थे, धन्य धन्य के छर्रे चल रहे थे और सब उसके चिरजीवी होने के लिये वर याचना करते थे। अहा! समय का भी अद्भुत

ढङ्ग है, वही अबिलाइनो जो एक घण्टा प्रथम शिर काटे जाने और भांति भांति के क्लेश के साथ मारे जाने के योग्य था, अब सर्वजनों का मान्य और पूज्य बन गया, प्रत्येक को उस पर अभिमान था और प्रत्येक व्यक्ति उसको द्वितीय परमेश्वर समझता था। नृपति महाशयने कुर्सीपर से उठ कर उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया और अपनी जिह्वा से कथन किया 'अबिलाइनो तुमने हमलोगों का बड़ा भारी उपकार किया।' अबिलाइनो ने नृपति महाशय के कर-कमल का सत्कार पूर्वक चुम्बन किया और मन्द मुसकानसे उत्तर दिया 'पृथ्वीनाथ मेरा नाम अबिलाइनो नहीं है और न फ्लोडोआर्डो है, मेरा नाम रुसाल्वो है और मैं नेपल्स का निवासी हूं। मैंने अपना नाम केवल मोनाल्डस्चीके राजकुमार की शत्रुता के कारण बदल दिया था। परन्तु वह तो मर गया अब मुझको अपना नाम गुप्त रखना आवश्यक नहीं॥

अंड्रियास-(अकुलाकर) मोनाल्डस्ची ? ।'

रुसाल्वो-' कुछ आपत्ति न कीजिये, यह सत्य है कि मोनाल्डस्ची मेरे हाथ से मारा गया, परन्तु मैंने उसको छल से नहीं मारा वरन मेरा उसका देर तक सामना हुआ और कुछ घाव मुझको भी लगे। मरते समय उसको परमेश्वरका कुछ भय आया, उसने अपने हाथसे मुझ को निष्कलङ्क उन कलंकोंके विषयमें लिख दिया, जो उसने मुझ पर आरोपण किये थे. और यह भी बता दिया कि मैं किस प्रकार अपना पैतृक धन जो हृत हो गया है पुनः प्राप्त कर सकता हूँ। उसके अनुसार मैंने कार्य्य किया, और अब सम्पूर्ण नेपल्स को ज्ञात होगया कि मोनाल्डस्चीने मेरे सत्यानाश होने और चौपट करने के लिये क्या क्या युक्तियां की थीं जिसके कारण मुझको वहां से वेश बदल कर भागना पड़ा। इसी वेश में मैं बहुत दिनों तक इत-

स्ततः मारा मारा फिरा और अन्त को भाग्य मुझे खींच कर वेनिस में लाया। उस समय मेरा स्वरूप इतना बदल गया था कि मुझको पकड़ जाने का तनिक भय न था, वरन यह आशंका थी कि ऐसा न हो कि मैं उपवास करते करते मर जाऊं-परन्तु इस बीच ऐसा संयोग हुआ कि मुझसे बेनिस के डाकुओं से परस्पर होगया, मैंने हर्षसे उनका सहवास स्वीकार किया। मेरी अभिलाषा यह थी कि पहले तो अवसर पाकर बेनिस से इस आपदा को निवारण करूं, और दूसरे उनके द्वारा उनलोगों को भी पहचान लूँ जो डाकुओं से कार्य्य कराते हैं। मैंने इस बात में सिद्धिलाभ की अर्थात् डाकुओं के अधीश्वर को रोजा-विला के सामने मारा। और शेष लोगों को पकड़वा दिया। उस समय बेनिस भर में मैं हीं एक डाकू रह गया और प्रत्येक व्यक्ति को मेरेही पास आना पड़ा। रस रीति से मुझे परोजी और उसके सहकारियों की अभिसन्धि का भेद ज्ञात हुआ और अब आप लोग भी उनसे अभिज्ञ होगये। मैंने देखा कि वे लोग महाराज के तीनों मित्रों के प्राण अपहरण करना चाहते हैं, उन के समीप विश्वस्त बनने के लिये यह अवश्य था कि उनको किसी प्रकार विश्वास हो जाता कि तीनों व्यक्तियों का मैंने संहार किया। इस विषय में पूर्ण विचार करके मैंने एक बात निकाली और उस समय लोमेलाइनो से जाकर सम्पूर्ण समाचारों को कहा। इस कार्य में वे ही मेरे सहकारी थे उन्होंने मुझको महाराज के सामने मित्र का पुत्र बनाकर उपस्थित किया। उन्होंनेही मुझको उत्तमोत्तम परामर्श दिये, उन्होंने मुझे राजकीय उपवनों की कुञ्जिकायें दीं, जिनमें महाराज और उनके मुख्य मित्रोंके अतिरिक्त कोई व्यक्ति जाने नहीं पाता था और जिनके द्वारा मैं प्रायः बच कर निकल जाता था। उन्होंने मुझे महाराज के प्रासादों के गुप्त मार्गों को दिखलाया जिन से

मैं महाराज के मुख्य शयनागार में प्रविष्ट होसकता था और जब समय उनके टलजाने का आया तो वह एकाकी आपही नहीं छिप बैठे बरन मानफरोन और कोनारी को भी इस बात पर आमादा किया। बारे परमेश्वरने यह दिवस दिखाया कि सम्पूर्ण युक्तियां सफल हुईं; डाकुओं का नाम निशान मिट गया, उनके उत्तेजन दाता पकड़े गये और महाराज के तीनों मित्र जीवित और निर्विघ्न बचे। अब भी यदि आपलोग उचित समझते हों तो अबिलाइनों प्रस्तुत है चाहे उसका शिर काटिये चाहे उसे फांसी दीजिये।'

सब लोग एक मुँह होकर-'हूँ हूँ शिर काटना ? कोई तुम्हारे समान हो तो ले,॥

अंड्रियास-"धन्य! अबिलाइनों जो कार्य तुमने किया है ऐसा कार्य अल्प लोगों ने किया होगा, मुझे उस दिवस का तुमारा कथन स्मरण है जब तुमने कहा था 'महाराज! इस समय वेनिस में हम और तुम दोही बड़े ब्यक्ति हैं, परन्तु सच पूछो तो अबिलाइनो तुम मुझसे कहीं बढ़ कर हो। मेरे पास रोजाविला से अधिकतर कोई उत्तमोत्तम और बहुमूल्य पदार्थ नहीं है और न उससे बढ़कर कोई मुझे प्रिय है मैंने उसको तुम्हें प्रदान किया'॥

निदान परमेश्वर ने दोनों प्रेमी और प्रेयसी का इस रीति से समागम कराया॥

* समाप्त *

भाषाभूषण

जोधपुर-नरेश महाराज यशवंतसिंह (प्रथम) की यह अत्यन्त सुन्दर रचना है। संक्षेप में अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण दिए गए हैं। इसका संपादन भी बा० ब्रजरत्नदास बी० ए० ने बड़ी उत्तमता से आधुनिक ढंग से किया है। भूमिका में अलंकार की विवेचना और ग्रंथ तथा ग्रन्थकारके परिचय में सभी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं और टिप्पणियों में शब्द भाव तथा लक्षणों का विशेष रूप से स्पष्टीकरण किया गया है। ग्रंथकार का चित्र तथा चरित्र भी बड़े खोज के साथ दिया गया है पृ० संख्या सौ के ऊपर, एंटीक मोटा काग़ज़ मू० ॥। पता-श्रीरामचन्द्र पाठक, व्यवस्थापक पाठक एण्ड सन, राजादरवाजा, काशी।

हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो० पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' साहित्यरत्न लिखते हैं—इस ग्रन्थ का संपादन बड़ी योग्यता से किया गया है, पाद टिप्पणियाँ मार्मिक और योग्यता पूर्ण हैं, दोहों का अनुवाद सरल और सुन्दर भाषा में किया गया है जिससे उक्त भाव और अर्थ समझने में बड़ी सुविधा हो गई है। अलंकारों का स्पष्टीकरण भी अच्छा किया गया है।

पं० मायाशंकर याज्ञिक बी० ए०, भरतपुर लिखते हैं-यह संस्करण बहुत उत्तम निकला है। इससे विद्यार्थियों को बहुत सुगमता होगी। कोर्स में होने के कारण ऐसे संस्करण की बड़ी आवश्यकता थी।

श्रद्धेय पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी, कानपुर से लिखते हैं-पुस्तक प्रसिद्ध और प्रमाणिक है। आपने अच्छा किया जो इसका संपादन टिप्पणी युक्त कर दिया।

सुप्रसिद्ध साहित्य-शिल्पी पं० रामचन्द्र शुक्ल, अध्यापक हिंदू विश्वविद्यालय लिखते हैं कि '...ने टीका टिप्पणी के साथ इसका संपादन करके वास्तव में एक अभाव की पूर्ति की है। विद्वान्

संपादक ने मिलान के लिए भूमिका में कुछ संस्कृत श्लोक भी दे दिए हैं जिनसे पता चलता है कि पुस्तक में अलंकारों के लक्षण आदि कहाँ से लिए गए हैं। पुस्तक के परिशिष्ट में सब लक्षण विस्तार के साथ गद्य में समझा दिए गए हैं।

लाला भगवानदीन जी लिखते हैं—भाषाभूषण का तो ऐसा उत्तम संस्करण पहले कभी निकला ही नहीं। साहित्यप्रेमियों को चाहिए कि इस ग्रन्थ का आदर करके संपादक महाशय का उत्साह बढ़ावें।

स्थानाभाव से सर जॉर्ज ग्रिअर्सन, डाक्टर ग्रेहेम बेले आदि अनेक विद्वानों तथा पत्रिकाओं की सम्मतियाँ नहीं उद्धृत की गई हैं।

कमलमणि ग्रंथमाला की प्रथम मणि—

महाकवि बाबू गोपालचन्द्र उपनाम गिरिधर दास कृत

१—जरासंधबध महाकाव्य

यह काव्य वीर रस पूर्ण है और हिंदी साहित्य में यह पहिला महाकाव्य माना जाता है जो अब अलभ्य हो रहा है। हिंदी कविता प्रेमी इस ग्रन्थ की बाट बहुत दिनों से देख रहे थे। यमक अनुप्रास १) आदि की बहार पठनीय ही है। काव्य की क्लिष्टता कुछ अंशों में दूर करने के लिए पादटिप्पणियाँ भी दे दी गई हैं। बाबू राधाकृष्णदासजी ने भारतेंदु बाबू स्व० हरिश्चन्द्र की जीवनी में लिखा है कि 'जरासंधबध महाकाव्य बहुत ही पांडित्यपूर्ण वीररस प्रधान ग्रन्थ है। भाषामें यह ग्रन्थ एम० ए० का कोर्स होने योग्य है।' महाकवि का चित्र तथा चरित्र दिया गया है। पृष्ठ संख्या २००, मूल्य १।) सजिल्द; १) अजिल्द

श्रद्धेय पं० महावीर प्रसादजी द्विवेदी—प्राचीनों की शैली को ध्यान में रखते काव्य उत्तम है—वीररस से परिप्लुत है। महाकाव्य के लक्षण इसमें पूरे तौर से घटित होते हैं।

दि ऑनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए० रायबहादुर
यह प्रसिद्ध ग्रन्थ पढ़कर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। उसमें कविता की बहुत ही विशद प्रभा दृष्टिगोचर होती है।

इसके अतिरिक्त अनेक प्रसिद्ध विद्वानों तथा पत्रिकाओं ने अपनी अपनी अच्छी सम्मतियाँ भी प्रदान की हैं।

२—निमाई संन्यास नाटक

चार सौ वर्ष हुए जब कि काटोया नगर बंगाल में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अवतीर्ण होकर भक्ति रस की जो तरंगें प्रवाहित की थीं वे अब भी उसी प्रकार तरंगित हो रही हैं। वैष्णव-धर्म-प्रचारार्थ इन्होंने यौवनकाल ही में सन्यास ले लिया था। उसी घटना को 'अमृत बाजार पत्रिका' के जन्मदाता स्वर्गीय परम भक्त श्रीयुत शिशिरकुमार घोष की अमर लेखनी ने नाटक के रूप में ढाला है। उसीका यह अनुवाद अत्यन्त सरल भाषा में किया गया है पृ० संख्या लगभग १८०, एंटीक कागज़ मूल्य ॥।) अजिल्द १) सजिल्द।

३—चन्द्रालोक

पीयूषवर्ष जयदेव कृत चंद्रालोक अलंकार का एक छोटा पर उत्तम ग्रन्थ है जिसमें संक्षेप ही में रस, अलंकारादि की अच्छी विवेचना की गई है। इसका केवल एक ही संस्करण प्राप्त है जो विद्यालय के परीक्षार्थियों के लिए विशेष उपयोगी नहीं है। इस संस्करण में मूल के साथ हिंदी में अनुवाद भी दिया गया है जिसमें कठिनाइयों के स्पष्ट करने का विशेष प्रयास किया गया है। भूमिका में ग्रन्थकार के चरित्र, समय आदि का पूरा ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। वर्णानुक्रम से अलंकारिक शब्दों की सूची भी अन्त में दी गई है। पृ० संख्या लगभग १३० एंटीक मोटा कागज़ छपाई उत्तम मूल्य ॥=)

साहित्य-मार्ग-प्रदर्शक

साहित्यके मार्गको सुगम बनानेके लिए प्राचीन आचार्यों, कवियों, को पथ-प्रदर्शक बनाइए। उनके कृति-दीपकको हाथमें लीजिए।

ऐसे पथ-प्रदर्शकोंसे आपका परिचय कराने तथा उनके कृति-दीपकपर पड़े हुए गर्द-गुब्बारों को साफ कर आपके हाथमें देनेका ठेका 'साहित्य-सेवा-सदन' ने ले लिया है।

नवीन कृतिलब्ध, साहित्यके जानकार मार्ग-परिष्कर्त्ताओंसे भी आपको मिला देनेमें 'सदन' पीछे न रहेगा।

सदनका परिचय, पता-ठिकाना आदिकी जानकारीके लिए इस पुस्तिकाको आद्यन्त पढ़ जाइए।

सदनकी विशेषताएँ

१—सदनकी प्रत्येक पुस्तक बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा उसकी उपयोगिता, आवश्यकता और समयानुकूलता, लेखन, प्रतिपादन तथा सम्पादन-शैली की उत्तमता आदि सिद्ध हो जानेपर ही प्रकाशित की जाती हैं।

२—सदनकी पुस्तकें सभी समाजों तथा विचारोंके स्त्री-पुरुषों-के लिए समान रूपसे उपयोगी होती हैं। सदनकी पुस्तक—मालाओंमें अश्लील अथवा अपाठ्य पुस्तकोंको स्थान नहीं दिया जाता।

३—सदन की पुस्तकें प्रत्येक शिष्ट समाज, लाइब्रेरी, स्कूल, कालेज आदिमें संग्रहणीय तथा विद्यार्थियोंको उपहारमें देने योग्य होती हैं।

४—सदनकी पुस्तकें अन्य पुस्तक-प्रकाशकोंकी पुस्तकोंकी अपेक्षा बहुत सस्ती होती हैं। जिन सज्जनोंको इसमें सन्देह हो, उन्हें इस विषयके किसी अनुभवीसे जाँच कर अपना भ्रम दूर कर लेना चाहिए।

५—सदनकी ग्राहक-संख्याकी वृद्धिके साथ उसकी पुस्तकों-का मूल्य बराबर कम होता जा रहा है। प्रकाशित पुस्तकें इसका प्रमाण हैं।

६—सदनके स्थायी ग्राहक अपनी इच्छा और रूचिके अनुसार सदन-की कुल अथवा कोई पुस्तक या पुस्तकें ले सकते हैं। अन्य ग्रन्थ-मालाओंकी भाँति हमारे यहाँ इसका कोई बन्धन नहीं है।

साहित्य-सेवा-सदन, काशी

द्वारा

(होली, सं० १९८३ वि० तक)

प्रकाशित पुस्तकें

काव्य-ग्रन्थरत्न माला—प्रथम रत्न

बिहारी-सतसई सटीक

[७०० सातो सौ दोहोंकी पूरी टीका]

टीका० लाला भगवानदीन

यह वही पुस्तक है कि जिसके कारण कविकुल-कुमुद-कलाधर बिहारीलालकी विमल ख्याति-राका साहित्य-संसारके कोने कोनेमें अजरामरवत् फैली हुई हैं और जिसकी कि केवल समालोचनाने ही विद्वन्मण्डलीमें हलचल मचा दी है। सच पूछिए तो श्रृङ्गाररसमें इसके जोड़की कोई भी दूसरी पुस्तक नहीं है। यह अनुपम और अद्वितीय ग्रन्थ है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही हैं कि आज २५० वर्षोंमें ही इस ग्रन्थकी ४०-५० टीकाएँ बन चुकी हैं। इतनी टीकाएँ तो तैयार हुई हैं, किन्तु वे सभी प्राचीन ढंगकी हैं, इसीलिए समझमें ज़रा कम आती हैं। उसी कठिनाईको दूर करनेके लिए साहित्य-संसारके सुपरिचित कविवर लाला भगवानदीनजी, प्रो० हिन्दू—विश्व—विद्यालय, काशी, ने अर्वाचीन ढंगकी नवीन टीका तैयार की है। टीका कैसी होगी, इसका अनुमान पाठक टीकाकारके नामसे ही करलें। इसमें बिहारीके प्रत्येक दोहेके नीचे उसके शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, वचन-निरूपण, अलंकार आदि सभी ज्ञातव्य बातोंका समावेश किया गया है। जगह-जगहपर सूचनाएँ दी गयी हैं। मतलब यह कि सभी ज़रूरी बातें इस टीकामें आ गयी हैं। दूसरे परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करणका मूल्य १।=) । बढ़िया कागज़ सचित्रका मूल्य १।॥)

पुस्तकपर आयी हुइ कुछ सम्मतियाँ–

कोई टीका अबतक कालिजके छात्रोंके लिए अर्वाचीन ढंगसे नहीं मिलती। किन्तु, इस टीकामें साधारण विद्यार्थियोंके लिए लिखते हुए भी कविके चमत्कारका स्थान स्थानपर निदर्शन कराया गया है। महत्त्वके शब्दोंके अर्थ दिये हैं। अलंकार बतलाये हैं। कहीं-कहीं प्रीतमजीके उर्दू पद्यानुवादके नमूने भी हैं। भाषा स्पष्ट है। विद्यार्थियोंकी जितनी आवश्यकताएँ हैं, सभी पूरी की गयी हैं।

[सरस्वती]

पुस्तक लेखककी अभिनन्दनीय कृति है। यह वस्तुतः अपने नामको सार्थक करती है। यह छात्र और गुरु दोनोंके लिए एक दृष्टिसे समानतः उपयोगिनी है। बिहारी सतसईके इस तरहके भी एक अनुवादकी आवश्यकता थी। हर्षकी बात है कि यह कमी हिंदीके सुप्रसिद्ध लेखक—ला० भगवानदीन द्वारा पूरी हो गयी। इसके लिए कोई भी योग्य व्यक्ति लाला साहबकी सराहना किये बिना नहीं रह सकता।

(सौरभ)

'शारदा' आदि अन्य पत्रिकाओं तथा बड़े-बड़े विद्वानोंने भी इस पुस्तककी बड़ी प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण यहाँ अधिक सम्मतियाँ उद्धृत नहीं की गयी हैं।

This book is sanctioned as a reference book for Hindi Teachers in high schools of Central Provinces & Berar.

Vide order no. 6801, Dated 28-9-26.

गो० तुलसीदासजी कृत
विनय-पत्रिका सटीक
(टीकाकार-वियोगीहरि)

सर्वमान्य 'रामायण' के प्रणेता महात्मा तुलसीदासजीका नाम भला कौन नहीं जानता ? बड़ेसे बड़े राजमहलोंसे लेकर छोटेसे छोटे झोपड़ों तकमें गोस्वामीजीकी विमल कीर्तिकी चर्चा होती है। क्या राव, क्या रंक, क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या मर्द, क्या औरत सभी उनके रामायणका पाठ प्रतिदिन करते हैं, अङ्गरेजी-साहित्यमें जो पद शेक्सपियरका है, जो पद संस्कृत-साहित्यमें कालिदासका है, वही पद हिन्दी-साहित्यमें तुलसीदासको प्राप्त है। उपर्युक्त 'विनयपत्रिका' भी इन्हीं गोस्वामी तुलसीदासजीकी कृति है। कहते हैं कि गोस्वामीजीकी सर्वश्रेष्ठ रचना यही विनय-पत्रिका है। विनय-पत्रिकाका-सा भक्ति-ज्ञानका दूसरा कोइ ग्रन्थ नहीं है। इसमें गोस्वामीजीने अपना सारा पाण्डित्य खर्च कर दिया है। इसकी रचनामें उन्होंने अपनी लेखनीका अद्भुत चमत्कार दिखलाया है। गणेश, शिव, हनुमान, भरत, लक्ष्मण आदि पार्षदों-सहित जगदीश श्रीरामचन्द्रकी स्तुतिके बहाने वेदान्तके गूढ़ तत्वोंका समावेश कर दिया है। वेद, पुराण, उपनिषद, गीतादिमें वर्णित ज्ञानकी सभी बातें इसमें गागरमें सागरकी भाँति भर दी गयी हैं। यह भक्ति-ज्ञानका अपूर्व ग्रन्थ है। साहित्यकी दृष्टिसे भी यह उच्चकोटिका ग्रन्थ है। इतना सब कुछ होनेपर भी इसका प्रचार रामायणके सदृश न होने का एक यही मुख्य कारण है कि यह पुस्तक, भाषामें होनेपर भी, कठिन है। दूसरे वेदान्तके गूढ़ रहस्योंका समझ लेना भी सब किसीका काम नहीं है तीसरे अभी तक कोई सरल, सुबोध तथा उत्तम टीका भी इस ग्रन्थ पर नहीं बना। इन्हीं कठिनाइयों को दूर करनेके लिए सम्मेलन-पत्रि-

काके सम्पादक तथा साहित्य-विहार, व्रजमाधुरीसार, संक्षिप्त सूरसागर आदि ग्रन्थोंके लेखक तथा संकलनकर्ता लब्ध-प्रतिष्ठ वियोगीहरिजीने इस पुस्तककी विस्तृत तथा सरल टीका की है। वियोगीजी साहित्यके प्रकाण्ड पण्डित हैं,यह सभी जानते हैं। अतः उनका परिचय देनेकी आवश्यकता भी नहीं है। इस टीकामें शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, प्रसग, पदच्छेद आदि सब ही कुछ दिये गये हैं। भावार्थके नीचे टिप्पणीमें अन्तर् कथाएँ, अलंकार, शंकासाधान आदिके साथ ही साथ समानार्थी हिन्दी तथा संस्कृत कवियोंके अवतरण भी दिये गये हैं। अर्थ तथा प्रसंगपुष्टिके लिए गीता, वाल्मीकि रामायण तथा भागवत आदि पुराणोंके श्लोक भी उद्धृत किये गये हैं। दर्शनिक भाव तो खूब ही समझाये गये हैं। उपर्युक्त बातोंके समावेशके कारण यह पुस्तक अपने ढंगकी अद्वितीय हुई है, अब मूढ़ जन भी भगवद्-ज्ञानामृतका पान कर मोक्षके अधिकारी हो सकते हैं। हिन्दी-साहित्यमें यह टीका कितने महत्त्वकी हुई है, यह उदारचेता, काव्य-कला-मज्ञ एवं नीर-क्षीर-विवेकी साहित्यज्ञ ही बतला सकते हैं। तुलसी-काव्य-सुधा-पिपासु सज्जनोंसे हमारा आग्रह है कि एक प्रति इसकी खरीदकर गुसाँईजीकी रसमयी वाणीका वह आनन्द अवश्य लें, जिससे अभी तक वे वंचित रहे हैं। छपाई-सफाई भी दर्शनीय है। लग-भग ७००सात सौ पृष्ठोंकी पुस्तकका मूल्य २॥) ढाई रुपये, सजिल्द २॥।), बढ़िया कपड़ेकी जिल्दका ३)।

This book is sanctioned as a reference book for Hindi Teachers in high schools of Central Provinces & Berar.

[Vide order no. 6801 Dated 28-9-26]

गुलदस्तए बिहारी

(लेखक—देवीप्रसाद 'प्रीतम')

बिहारी-सतसईके परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं, सभी साहित्य-प्रेमी उसके नामसे परिचित हैं। यह गुलदस्तए बिहारी उसी बिहारी-सतसईके दोहोंपर रचे हुए उर्दू शैरोंका संग्रह है, अथवा यों कहिए कि बिहारी-सतसई-की उर्दू-पद्यमय टीका है। ये शैर सुननेमें जैसे मधुर और चित्ताकर्षक हैं, वैसे ही भाव-भङ्गीके ख्यालसे भी अनुपम हैं। इनमें दोहोंके अनुवादमें, मूलके एक भी भाव छूटने नहीं पाये हैं, बल्कि कहीं-कहीं उनसे भी अधिक भाव शैरोंमें आ गये हैं। ये शैर इतने सरल हैं कि मामूलीसे मामूली हिन्दी जाननेवाला उन्हें अच्छी तरह समझ सकता है। इन शैरोंकी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं० पद्मसिंह शर्म्मा, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन, वियोगीहरि आदि उद्भट् विद्वानोंने मुक्त-कंठसे प्रशंसा की है। अतः विशेष कहना व्यर्थ है।

छपाई में यह क्रम रखा गया है कि ऊपर बिहारीका मूल दोहा देकर, नीचे प्रीतमजी-रचित उसी दोहेका शैर हिन्दी लिपि-में दिया गया है। स्वयं एक बार देखनेसे ही इसकी विशेषता-का परिचय आपको मिल सकता है। बिहारी-प्रेमियोंको इसे एक बार अवश्य देखना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १७५ के लगभग। मूल्य ।||=)। सचित्र राजसंस्करणका १।||) उर्दू सहित का १।) राज सं० २) पुस्तकों में कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं जिससे हिन्दी जानने वालों को विशेष सुविधा होगी।

महात्मा सूरदासजी प्रणीत

भ्रमरगीत–सार

(सम्पादक पं० रामचन्द्र शुक्ल)

सन्त-शिरोमणि, साहित्याकाश-प्रभाकर, महात्मा सूरदास-जीसे विरले ही हिन्दी-प्रेमी अपरिचित होंगे। सूरदासजी हिन्दी-साहित्यकी विभूति हैं, जीवन-सर्वस्व हैं। इनकी काव्य-गुण-गरिमाका उसको घमंड है। कहा भी है "सूर सूर तुलसी शशि, उडुगण केशवदास"। यथार्थमें हिन्दीमें उनका सर्वोच्च स्थान है। इनकी अनुपम उपमा, कविता-माधुरी तथा अर्थ-गंभीरताके सभी कायल हैं। इन्हीं महात्माके उत्कृष्ट पदोंका यह संग्रह है, सागरका सार अमृत है। सूर-सागरका सर्वोत्कृष्ट अंश भ्रमरगीत माना जाता है। उसी भ्रमरगीतके चुने हुए पदोंका यह संग्रह है। इसमें चार सौसे भी ऊपर पद आ गये हैं। इसका सम्पादन हिन्दी-साहित्य-संसारके चिरपरिचित एवं दिग्गज विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल, प्रो० हिन्दू-विश्वविद्यालय काशी, ने किया है। एक तो सूरदासकी कविता, दूसरे हिन्दीके विशिष्ट विद्वान् द्वारा उसका संपादन 'सोनेमें सुगन्ध' हो गया है। सम्पादकजीकी ८० अस्सी पृष्ठकी दीर्घकाय भूमिका ही पुस्तककी महत्ताको दुगुनी कर रही है। पदोंमें आये हुए कठिन शब्दोंके सरलार्थ भी पाद-टिप्पणीमें दे दिये गये है। यह पुस्तक हिन्दू-यूनिवर्सिटीमें एम० ए० में पढ़ाई भी जाती है। विशेष क्या! पुस्तकका महत्त्व उसके देखने ही पर चल सकेगा। पृष्ठ-संख्या करीब २५० के। मूल्य १)

काव्य-ग्रन्थरत्न-माला—दसवाँ रत्न

तुलसी-सूक्ति-सुधा

(सम्पा० वियोगीहरिजी)

इसमें जगन्मान्य गोस्वामी तुलसीदासजी-प्रणीत समस्त ग्रन्थोंकी चुनी हुई अनूठी उक्तियोंका संग्रह किया गया है। जो लोग समयाभाव या अन्य कारणों से गोस्वामीजीके सभी ग्रंथोंका अवलोकन नहीं कर सकते, उन लोगोंको इस एक ही पुस्तकके पढ़नेसे गोस्वामीजीके समस्त ग्रन्थों के पढ़नेका आनन्द आ जायगा। इस पुस्तकमें ग्यारह अध्याय हैं—१ चरित-विंदु, २ ध्यान-विन्दु, ३ विनय-विन्दु, ४ तीर्थ-विन्दु, ५ अध्यात्म-विन्दु, ६ साधन-विन्दु, ७ पुरुष-परीक्षा-विन्दु, ७ उद्बोध-विन्दु, ६ व्यवहार-विन्दु, १० निज-निवेदन-विन्दु, ११ विविध-सूक्ति-विन्दु। इसमें आपको राजनीति, समाजनीति भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयोंपर अच्छीसे अच्छी उक्तियाँ बिना प्रयास एक ही जगह मिल जायँगी। साहित्यिक छटाके लिए तो कुछ कहना ही नहीं है। इसके तो तुलसीदास-जी आचार्य ही ठहरे। साहित्यके अध्येताओं तथा जन साधारण दोनोंको ही इस ग्रन्थसे बड़ी सहायता मिलेगी। यह ग्रन्थ रोज काममें आनेवाले उपदेशोंका अपूर्व भंडार है। इसके पाठसे सभी लाभ उठा सकते है, अनुकरण करनेसे आदर्श बन सकते हैं, सतयुग फिर आ सकता है। इसमें प्रारम्भमें आलोचनात्मक विशद भूमिका भी संपादकजीने पाठकोंके सुभीतेके लिए जोड़ दी है। पाद-टिप्पणीमें कठिन शब्दों तथा स्थलोंकी पूर्णरूपसे व्याख्या भी कर दी गयी है। पृष्ठ-संख्या ५०० के ऊपर है। मूल्य केवल २)।

स्थायी ग्राहकोंके लिए नियम—

[१] ग्राहक बननेके लिए बारह आना प्रवेश शुल्क देना पड़ता है।

[२] ग्राहकोंको इस कार्यालयके समस्त पूर्व प्रकाशित तथा आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थोंकी एकएक प्रति पौने मूल्यमें दी जाती है।

[३] किसी भी पुस्तकका लेना अथवा न लेना ग्राहकोंकी इच्छापर निर्भर है। किंतु वर्षभरमें कमसे कम तीन रुपये [पूरे मूल्य] की पुस्तकें लेनी पड़ती हैं।

[४] किसी भी पुस्तकके प्रकाशित होते ही, मूल्यादि की सूचना दे देनेके पन्द्रह दिवस पश्चात् उसकी वी० पी० भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकको कोई पुस्तक न लेनी हो तो सूचना पाते ही मनाही कर देना चाहिए, ताकि वह न भेजी जाय। वी० पी० लौटानेसे डाक-व्यय उन्हींको देना पड़ेगा, अन्यथा उनका नाम ग्राहक-श्रेणीसे पृथक् कर दिया जायगा।

[५] ग्राहकोंके इच्छानुसार डाक-व्ययके बचावके लिए २-४ पुस्तकें एक साथ भेजी जा सकती हैं।

[६] सदनके ४ स्थायी ग्राहक बनानेवाले सज्जनको यदि वे चाहेंगे तो, बिना किसी प्रकारका शुल्क लिए ही स्थायी ग्राहकके कुल अधिकार दिये जायँगे। इसी प्रकार १० स्थायी ग्राहक बनानेवाले सज्जनको, यदि वे स्वीकार करें तो, तीन रुपये मूल्यकी सदन द्वारा प्रकाशित कोई भी पुस्तक या पुस्तक प्रदान की जायँगी, और २५ स्थायी ग्राहक बनानेवाले महानुभावका नाम आगे प्रकाशित होनेवाली पुस्तकमें सधन्यवाद प्रकाशित कर दिया जायगा।

[७] पत्र भेजे यदि १० दिन हो जायँ और उसका कोई उत्तर न मिले, तो शीघ्र ही दूसरा पत्र भेजना चाहिए।

सूचना—ग्राहकोंको प्रत्येक पत्रमें अपना ग्राहक-नम्बर, पता इत्यादि स्पष्ट लिखना चाहिए।